

# ई-ट्रैक्टर कृषि प्रौद्योगिकी क्रांतिकारी कदम:पंत

## कृषि प्रौद्योगिकी

रुड़की, कार्यालय संवाददाता। आईआईटी रुड़की के निदेशक प्रो. केके पंत ने कहा है कि इलेक्ट्रिक ट्रैक्टर कृषि प्रौद्योगिकी में एक क्रांतिकारी कदम है। जो पारंपरिक डीजल-चालित मशीनों के लिए एक हरित विकल्प प्रदान करता है। यह बात उन्होंने बुधवार को सीबीआरआई में आयोजित ई-ट्रैक्टर और ई-टिलर अनावरण कार्यक्रम में कही।

उन्होंने कहा कि भारत का कृषि क्षेत्र, जो देश की अर्थव्यवस्था की धड़कन है, एक उल्लेखनीय परिवर्तन के कगार पर है। इलेक्ट्रिक ट्रैक्टरों को पेश करना और उनका सफलतापूर्वक क्रियान्वयन

स्मरता, परिचालन लागत और उत्पादकता जैसी चुनौतियों से निपटने का वादा करता है।

सीबीआरआई के डायरेक्टर प्रो. अरुण प्रदीप कुमार ने कहा कि हिमालयी क्षेत्र में सतत कृषि के लिए एक ऐतिहासिक कार्यक्रम के तहत कार्डिनल ऑफ साइंटिफिक एंड इंजीनियरिंग रिसर्च-सेंट्रल मैकेनिकल इंजीनियरिंग रिसर्च-इंस्टीट्यूट (सीएसआईआर-सीएमआईआरआई) दुर्गापुर ने सीबीआरआई रुड़की के सहयोग से अपने अल्ट्राधुनिक ई-ट्रैक्टर और ई-टिलर तकनीकों का प्रदर्शन किया है। जहाँ किसानों ने ई-ट्रैक्टर चलाते हुए इसकी मजबूती एवं फायदे के बारे में जानकारी ली।

सीबीआरआई के डायरेक्टर ने

- सीबीआरआई में ई-ट्रैक्टर और ई-टिलर का किया गया अनावरण
- किसानों ने ई-ट्रैक्टर चलाकर देखा इसकी मजबूती

कहा कि यह पहल भारत के स्वच्छ ऊर्जा अभियान में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। जो नवाचार और स्मरता के माध्यम से कृषि को बदलने पर केंद्रित है।

आयोजित कार्यक्रम के दौरान किसानों द्वारा पूछे गए सवालों का सीबीआरआई के वैज्ञानिकों ने जवाब दिया। उन्हें आधुनिक कृषि पद्धति के बारे में भी जानकारी दी।

सीएसआईआर-सीएमआईआरआई के निदेशक डॉ. नरेश चंद्र मुर्मू ने कहा कि हमारी इलेक्ट्रिक कृषि मशीनों केवल दक्षता के लिए नहीं, बल्कि समायोजित और स्मरता के लिए डिज़ाइन की गई है। हम हर क्षेत्र के किसानों, विशेष रूप से कठिन परिस्थितियों का सामना करने वालों का समर्थन करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

बुधवार को आयोजित इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में आईआईटी के निदेशक प्रो. कमल किशोर पंत, विशिष्ट अतिथि के सहायक महानिदेशक (प्रोसेस इंजीनियरिंग) आईसीएआर नई दिल्ली डॉ. नरसैयाह केरम, डॉ. नरेश चंद्र मुर्मू, डॉ. प्रदीप राजन, वैज्ञानिक चंदन कुमार मीणा आदि मौजूद रहे।



रुड़की में सीबीआरआई में बुधवार को आयोजित कार्यक्रम में ई-ट्रैक्टर की ट्रायल करते अतिथि और संस्थान पदाधिकारी। • हिन्दुस्तान



रुड़की में सीबीआरआई में बुधवार को आयोजित कार्यक्रम में ई-ट्रैक्टर की ट्रायल करते अतिथि और संस्थान पदाधिकारी। • हिन्दुस्तान

# ई-ट्रैक्टर कृषि प्रौद्योगिकी क्रांतिकारी कदम:पंत

## कृषि प्रौद्योगिकी

रुड़की, कार्यालय संवाददाता। आईआईटी रुड़की के निदेशक प्रो. केके पंत ने कहा है कि इलेक्ट्रिक ट्रैक्टर कृषि प्रौद्योगिकी में एक क्रांतिकारी कदम है। जो पारंपरिक डीजल-चालित मशीनों के लिए एक हरित विकल्प प्रदान करता है। यह बात उन्होंने बुधवार को सीबीआरआई में आयोजित ई-ट्रैक्टर और ई-टिलर अनावरण कार्यक्रम में कही।

उन्होंने कहा कि भारत का कृषि क्षेत्र, जो देश की अर्थव्यवस्था की धड़कन है, एक उल्लेखनीय परिवर्तन के कगार पर है। इलेक्ट्रिक ट्रैक्टरों को पेश करना और उनका सफलतापूर्वक क्रियान्वयन

स्मरता, परिचालन लागत और उत्पादकता जैसी चुनौतियों से निपटने का वादा करता है।

सीबीआरआई के डायरेक्टर प्रो. अरुण प्रदीप कुमार ने कहा कि हिमालयी क्षेत्र में सतत कृषि के लिए एक ऐतिहासिक कार्यक्रम के तहत कार्डिनल ऑफ साइंटिफिक एंड इंजीनियरिंग रिसर्च-सेंट्रल मैकेनिकल इंजीनियरिंग रिसर्च-इंस्टीट्यूट (सीएसआईआर-सीएमआईआरआई) दुर्गापुर ने सीबीआरआई रुड़की के सहयोग से अपने अल्ट्राधुनिक ई-ट्रैक्टर और ई-टिलर तकनीकों का प्रदर्शन किया है। जहाँ किसानों ने ई-ट्रैक्टर चलाते हुए इसकी मजबूती एवं फायदे के बारे में जानकारी ली।

सीबीआरआई के डायरेक्टर ने

- सीबीआरआई में ई-ट्रैक्टर और ई-टिलर का किया गया अनावरण
- किसानों ने ई-ट्रैक्टर चलाकर देखा इसकी मजबूती

कहा कि यह पहल भारत के स्वच्छ ऊर्जा अभियान में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। जो नवाचार और स्मरता के माध्यम से कृषि को बदलने पर केंद्रित है।

आयोजित कार्यक्रम के दौरान किसानों द्वारा पूछे गए सवालों का सीबीआरआई के वैज्ञानिकों ने जवाब दिया। उन्हें आधुनिक कृषि पद्धति के बारे में भी जानकारी दी।

सीएसआईआर-सीएमआईआरआई के निदेशक डॉ. नरेश चंद्र मुर्मू ने कहा कि हमारी इलेक्ट्रिक कृषि मशीनों केवल दक्षता के लिए नहीं, बल्कि समायोजित और स्मरता के लिए डिज़ाइन की गई है। हम हर क्षेत्र के किसानों, विशेष रूप से कठिन परिस्थितियों का सामना करने वालों का समर्थन करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

बुधवार को आयोजित इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में आईआईटी के निदेशक प्रो. कमल किशोर पंत, विशिष्ट अतिथि के सहायक महानिदेशक (प्रोसेस इंजीनियरिंग) आईसीएआर नई दिल्ली डॉ. नरसैयाह केरम, डॉ. नरेश चंद्र मुर्मू, डॉ. प्रदीप राजन, वैज्ञानिक चंदन कुमार मीणा आदि मौजूद रहे।

ई ट्रैक्टर, ई टिलर का डेमो

NEWS 18 उत्तर प्रदेश

TOP 10 पहाड़

रुड़की

NEWS UPDATE

रायबरेली

उत्तर प्रदेश

नगढ़ और नौगढ़ तहसील का मामला • बहराइच: भारत-नेपाल बॉर्डर के प

ई ट्रैक्टर, ई टिलर का डेमो

NEWS 18 उत्तर प्रदेश

TOP 4 पहाड़

रुड़की

NEWS UPDATE

कार सवार महिला सिपाही घायल

उत्तर प्रदेश

के पास बने मदरसे की हुई जांच, कश्मिर की जमीन पर बने मदरसे के

[illegible]

## सीमेंट निर्माण में होने वाले प्रदूषण में कमी लाएगी तकनीक

जामरग संवाददाता, रुड़की: केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) रुड़की ने विकसित फ्लाइंग ऐश (उड़न राख)-जिप्सम आधारित प्लास्टर की तकनीक का हस्तांतरण किया है। इस तकनीक से सीमेंट निर्माण में होने वाले पर्यावरण प्रदूषण में कमी आएगी और फ्लाइंग ऐश के प्रयोग को बढ़ावा मिलेगा।

मंगलवार को आयोजित कार्यक्रम में संस्थान के निदेशक डा. आर प्रदीप कुमार ने कहा कि इस तकनीक में फ्लाइंग ऐश को बड़ी मात्रा में उपयोग करके जिप्सम एवं अन्य अवशेषों के साथ मिलकर सस्ते एवं टिकाऊ प्लास्टर को तैयार हो में विकसित किया गया। यह पैमाने पर इन प्लास्टर के निर्माण व प्रयोग के लिए इस तकनीक का हस्तांतरण किया गया है। उन्होंने बताया कि इन प्लास्टर को सीमेंट के विकल्प के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। जिससे सीमेंट निर्माण में होने वाले पर्यावरण प्रदूषण में कमी आएगी और फ्लाइंग ऐश के प्रयोग को बढ़ावा मिलेगा। जोकि धर्माल पावर प्लांट से निकलने वाला अपशिष्ट है और पर्यावरण के लिए एक बड़ी समस्या है। उन्होंने बताया कि इन प्लास्टर के उपयोग से फ्लाइंग ऐश के निपटान में मदद के साथ-साथ सीमेंट निर्माण में प्रयोग होने



केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) रुड़की ने विकसित फ्लाइंग ऐश (उड़न राख)-जिप्सम आधारित प्लास्टर की तकनीक का हस्तांतरण किया = सहायक सीबीआरआई

वाले प्राकृतिक संसाधनों जैसे लाइमस्टोन, कोयला आदि को भी बचाकर कार्बन फुटप्रिंट को कम किया जा सकेगा। परियोजना प्रमुख एवं प्रमुख विज्ञानी डा. नीरज जैन ने बताया कि इन प्लास्टर के निर्माण में 40-50 प्रतिशत फ्लाइंग ऐश का प्रयोग किया गया है। जिससे कि उनकी लागत सीमेंट प्लास्टर की तुलना में कम होगी व प्लास्टर की क्यूरिंग के लिए प्रयोग होने वाले पानी को भी बचाया जा सकेगा।

उन्होंने बताया कि फ्लाइंग ऐश-जिप्सम कम्पोजिट प्लास्टर एक हल्के वजन वाला प्लास्टर है। जिसे कम की मीटरी दीवारों पर सीमेंट प्लास्टर के विकल्प के रूप में इस्तेमाल किया जा सकेगा। जिप्सम का प्रयोग होने के कारण ये प्लास्टर ध्वनिरोधी, तापमान प्रतिरोधी, अधिक फैसलघट वाले, सस्ते, टिकाऊ व प्रदूषण रहित प्लास्टर है। इन्हीं सब कारणों से इन प्लास्टर का उपयोग यह पैमाने पर करने

की आवश्यकता है। तर्कित भारत को नेट जीरो इमिशन का लक्ष्य प्राप्त करने में आसानी हो सके। इस दौरान संस्थान के निदेशक ने एमएससी स्टील एंड पावर लिमिटेड रायगढ़, छत्तीसगढ़ के डीजीएम डा. संजय पीरार को तकनीक का हस्तांतरण किया। इस मौके पर प्रमुख विज्ञानी डा. एसके शशिप्रती डा. आरके वर्मा, डा. सोनू, डा. लीन चौरसिया, हुमहरा, डा. श्रीनिवास आदि थे।

## मिश्रित प्लास्टर तकनीक हस्तांतरित की

रुड़की, संवाददाता। सीबीआरआई रुड़की ने आंतरिक अनुप्रयोगों के लिए उच्च मात्रा फ्लाई ऐश (40-50 प्रतिशत) जिप्सम मिश्रित प्लास्टर के विकास पर एक तकनीक मंगलवार को हस्तांतरित की है। तकनीक एमएसपी स्टील्स एंड पावर्स लिमिटेड रायगढ़ छत्तीसगढ़ को हस्तांतरित की गई है। सीबीआरआई के निदेशक प्रो. प्रदीप कुमार ने तकनीक हस्तांतरित की।

इस तकनीक के मुख्य प्रवर्तक डॉ. नीरज जैन, डॉ. सौमित्र मैती और डॉ. आरके वर्मा हैं। उन्होंने बताया कि इस तकनीक में फ्लाई ऐश की उच्च मात्रा यानी 40 से 50 प्रतिशत का उपयोग साधारण पोर्टलैंड सीमेंट और प्लास्टर ऑफ पेरिस के साथ निश्चित मात्रा में



रुड़की सीबीआरआई ने मंगलवार को आंतरिक अनुप्रयोगों के लिए उच्च मात्रा फ्लाई ऐश जिप्सम मिश्रित प्लास्टर के विकास पर एक तकनीक हस्तांतरित की। • हिन्दुस्तान एडिटिव्स के साथ किया जाता है। मिश्रण को समान रूप से मिश्रित प्लास्टर बनाने के लिए रिबन मिश्रण में मिश्रित किया जाता है। इस प्लास्टर का उपयोग इमारतों के अंदरूनी हिस्सों में सीमेंट प्लास्टर के प्रतिस्थापन के लिए प्रीमिक्स प्लास्टर के रूप में रेत के साथ सिंगल कोट या डबल कोट के रूप में किया जा सकता है। तकनीक सरकार के शुद्ध शून्य उत्सर्जन के लक्ष्य को प्राप्त करने और कोयले जैसे प्राकृतिक संसाधनों की बचत में मदद करेगी।

# इंजीनियरों को दी इमारतों के लिए अग्नि सुरक्षा उपायों की जानकारी

## सीबीआरआई में तीन दिवसीय प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का आयोजन

संवाद न्यूज एजेंसी

रुड़की। केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) रुड़की में महत्वपूर्ण प्रतिष्ठानों और इमारतों के लिए अग्नि सुरक्षा उपायों का डिजाइन विषय पर प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया। 21 मार्च तक चलने वाला यह आयोजन सीएसआईआर एकीकृत कौशल पहल के तहत किया जा रहा है।

उद्घाटन सत्र में निदेशक प्रो. आर प्रदीप कुमार ने अग्नि सुरक्षा के प्रति जागरूकता और बिल्डिंग सेक्टर में फायर सेफ्टी को महत्व देने पर जोर दिया। साथ ही लीडरशिप क्वालिटी को बढ़ावा देने की बात कही। कार्यक्रम में देशभर से लगभग 40 इंजीनियर और छात्र हिस्सा ले रहे हैं। इसमें उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल और नागालैंड जैसे विभिन्न राज्य अग्निशमन सेवाओं के साथ-साथ एमईएस, बैंक,



सीबीआरआई में आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम को संबोधित करते निदेशक। - संवाद

अस्पताल आदि से जुड़े हुए हैं।

वक्ताओं ने कहा कि शहरीकरण की गति तेजी से बढ़ रही है। पिछले दो दशकों में इमारतों के निर्माण में महत्वपूर्ण बदलाव हुए हैं। हाल ही में आग लगने की कई घटनाएं हुई हैं जिसने ऐसे महत्वपूर्ण प्रतिष्ठानों में अग्नि सुरक्षा के बारे में चिंताएं बढ़ा दी हैं। इस दौरान जीवन रक्षा

के तहत बनाई गई सक्रिय प्रणालियों, निष्क्रिय प्रणालियों के लिए अग्नि कोड एवं डिजाइन आदि की जानकारी दी गई। कार्यक्रम का समन्वयन वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक डॉ. शोरब जैन ने किया। इस मौके पर मुख्य वैज्ञानिक नदीम अहमद डॉ. ताबिश, डॉ. चंदन, डॉ. राज कुमार, भावना, संस्कृति आदि मौजूद रहीं।

राष्ट्रीय

## Roorkee: सीएसआईआर-सीबीआरआई में पुष्प प्रदर्शनी का भव्य आयोजन, पर्यावरण संरक्षण और हरित क्षेत्र के महत्व को किया रेखांकित

Manoj kumar • 2 hours ago

0 86 1 minute read



इस अवसर पर सीबीआरआई परिवार के बच्चों द्वारा फैसी ड्रेस प्रस्तुति, श्रीमती प्रियंका द्वारा गीत गायन और रोचक क्रिज भी आयोजित किया गया। कार्यक्रम का सफल आयोजन एस के नेगी और डॉ. डी. पी. कानूनगो जी ने किया।

## पर्यावरण संरक्षण व हरित क्षेत्र के महत्व पर जोर

**रुड़की (एसएनबी)।** सीएसआईआर-सीबीआरआई में पुष्प प्रदर्शनी का भव्य आयोजन किया। इसमें प्रकृति प्रेम, रचनात्मकता और सामुदायिक सौहार्द का अद्भुत संगम देखने को मिला। मुख्य अतिथि त्रिगंडियर करुण प्रताप सिंह, कमांडेंट बीईजी तथा उनकी निधि सिंह, निदेशक, परिवार कल्याण संगठन, रुड़की सैन्य स्टेशन का स्वागत सीबीआरआई निदेशक द्वारा किया गया। सीबीआरआई निदेशक ने प्रोग्राम और सीबीआरआई में आयोजित पुष्प प्रदर्शनी के बारे में बताया।

सीबीआरआई निदेशक ने पर्यावरण संरक्षण और हरित क्षेत्र के महत्व को रेखांकित किया। मुख्य अतिथि ने शहरी परिरक्ष्य में हरित विकास को बढ़ावा दिए जाने और इसका महत्व बताया। इसके बाद मुख्य अतिथि एवं निधि सिंह को स्मृति चिन्ह भेंट किए गए। उन्होंने पुष्प प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। सभी अतिथियों ने पुष्प प्रदर्शनी का अवलोकन किया। इसके बाद विजेताओं को सम्मानित किया गया। समाजसेवी मनीषा बत्रा, मेयर अनीता अग्रवाल, आईआईटी रुड़की निदेशक की पत्नी हेमा पंत, पूर्णिमा परिदा और सारला श्री ने विभिन्न श्रेणियों में विजेताओं को पुरस्कृत किया।



रुड़की : पुष्प प्रदर्शनी का अवलोकन करते सीबीआरआई निदेशक व अन्य।

इस अवसर पर सीबीआरआई परिवार के बच्चों ने फैसी ड्रेस प्रस्तुति, प्रियंका ने गीत गायन की प्रस्तुति दी। इस दौरान रोचक क्रिज भी आयोजित हुई। कार्यक्रम का संचालन डा. चन्दन स्वरूप मीना व समूहिक प्रस्तुति ने माहौल को देशभक्ति से भर दिया।

सीबीआरआई ने पुष्प प्रदर्शनी का आयोजन

अमन ने किया। डा. लीना ने सभी अतिथियों, प्रतिभागियों और आयोजकों का धन्यवाद व्यक्त किया। अंत में राष्ट्रीय गान की

सूचना सुनिश्चित

6:26AM 06:32PM

सूचना सुनिश्चित

6:26AM 06:32PM

सूचना सुनिश्चित

6:26AM 06:32PM

सूचना सुनिश्चित

6:26AM 06:32PM

सूचना सुनिश्चित

6:26AM 06:32PM

सूचना सुनिश्चित

6:26AM 06:32PM

सूचना सुनिश्चित

6:26AM 06:32PM

सूचना सुनिश्चित

6:26AM 06:32PM

सूचना सुनिश्चित

6:26AM 06:32PM

## सीबीआरआई ने किया भव्य पुष्प प्रदर्शनी का आयोजन

मदरलैण्ड संवाददाता



सभी अतिथियों ने पुष्प प्रदर्शनी का अवलोकन किया, जहाँ विभिन्न प्रकार के रंग-बिरंगे पुष्पों और रचनात्मक बागवानी के शानदार नमूने प्रदर्शित किए गए। इसके उपरांत पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न श्रेणियों के विजेताओं को सम्मानित किया गया। समाजसेवी मनीषा बत्रा, मेयर अनीता अग्रवाल, आईआईटी रुड़की निदेशक की पत्नी हेमा पंत, पूर्णिमा परिदा और सारला श्री ने विभिन्न श्रेणियों में विजेताओं को पुरस्कृत किया। इस अवसर पर सीबीआरआई परिवार के बच्चों ने फैसी ड्रेस प्रस्तुति, प्रियंका ने गीत गायन की प्रस्तुति दी। इस दौरान रोचक क्रिज भी आयोजित हुई। कार्यक्रम का संचालन डा. चन्दन स्वरूप मीना व अमन ने किया। डा. लीना ने सभी अतिथियों, प्रतिभागियों और आयोजकों का धन्यवाद व्यक्त किया। अंत में राष्ट्रीय गान को सामूहिक प्रस्तुति ने माहौल को देशभक्ति से भर दिया।

रुड़की। सीएसआईआर-सीबीआरआई ने पुष्प प्रदर्शनी का भव्य आयोजन किया। इसमें प्रकृति प्रेम, रचनात्मकता और सामुदायिक सौहार्द का अद्भुत संगम देखने को मिला। मुख्य अतिथि त्रिगंडियर करुण प्रताप सिंह, कमांडेंट बीईजी तथा उनकी निधि सिंह, निदेशक, परिवार कल्याण संगठन, रुड़की सैन्य स्टेशन का स्वागत सीबीआरआई निदेशक द्वारा किया गया। सीबीआरआई निदेशक ने प्रोग्राम और सीबीआरआई में आयोजित पुष्प प्रदर्शनी के बारे में बताया। सीबीआरआई निदेशक ने पर्यावरण संरक्षण और हरित क्षेत्र के महत्व को रेखांकित किया। मुख्य अतिथि ने शहरी परिरक्ष्य में हरित विकास को बढ़ावा दिए जाने और इसका महत्व बताया। इसके पश्चात, मुख्य अतिथि एवं श्रीमती निधि सिंह को स्मृति चिन्ह भेंट किए गए और उन्होंने पुष्प प्रदर्शनी का औपचारिक उद्घाटन किया।

सीबीआरआई रुड़की में पुष्प प्रदर्शनी 2025 का आयोजन किया गया • सागर-संस्थान

## पुष्प प्रदर्शनी में दिखा प्रकृति प्रेम और रचनात्मकता का संगम

जागरण संवाददाता, रुड़की: केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) रुड़की में पुष्प प्रदर्शनी 2025 का आयोजन किया गया। जिसमें प्रकृति प्रेम, रचनात्मकता और सामुदायिक सौहार्द का अद्भुत संगम देखने को मिला।

संस्थान परिसर में मंगलवार को आयोजित पुष्प प्रदर्शनी कार्यक्रम में मुख्य अतिथि बीईजी के कमांडेंट त्रिगंडियर करुण प्रताप सिंह और परिवार कल्याण संगठन, रुड़की सैन्य स्टेशन की निदेशक निधि सिंह ने शहरी परिरक्ष्य में हरित विकास को बढ़ावा दिए जाने के महत्व के बारे में बताया। वहीं सीबीआरआई के निदेशक प्रो. आर प्रदीप कुमार ने

संस्थान में आयोजित पुष्प प्रदर्शनी के बारे में बताते हुए पर्यावरण संरक्षण और हरित क्षेत्र के महत्व को रेखांकित किया। इसके बाद अतिथियों ने पुष्प प्रदर्शनी का अवलोकन किया। जहाँ विभिन्न प्रकार के रंग-बिरंगे पुष्पों और रचनात्मक बागवानी के शानदार नमूने प्रदर्शित किए गए। वहीं संस्थान के स्टाफ सदस्यों के बच्चों ने फैसी ड्रेस प्रस्तुति दी। रोचक क्रिज भी आयोजित किया गया। वहीं प्रियंका ने गीत गायन किया। कार्यक्रम का संचालन डा. चन्दन स्वरूप मीना और अमन ने किया। इस मौके पर महापौर अनीता अग्रवाल, हेमा पंत, पूर्णिमा परिदा, सारला श्री, डा. लीना आदि उपस्थित रहे।



सीबीआरआई निदेशक ने अपने संबोधन में पर्यावरण संरक्षण और हरित क्षेत्र के महत्व को रेखांकित किया, जबकि मुख्य अतिथि ने शहरी परिदृश्य में हरित विकास को बढ़ावा दिए जाने के बारे में बताया और इसका महत्व भी बताया। इसके पश्चात, मुख्य अतिथि एवं श्रीमती निधि सिंह को स्मृति चिन्ह भेंट किए गए और उन्होंने पुष्प प्रदर्शनी का औपचारिक उद्घाटन किया। सभी अतिथियों ने पुष्प प्रदर्शनी का अवलोकन किया, जहाँ विभिन्न प्रकार के रंग-विरंगे पुष्पों और रचनात्मक बागवानी के शानदार नमूने प्रदर्शित किए गए।

इसके उपरांत, पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न श्रेणियों के विजेताओं को सम्मानित किया गया। श्रीमती मनीषा बत्रा (रुड़की विधायक की धर्मपत्नी), श्रीमती अनीता अग्रवाल (रुड़की मेयर), श्रीमती हेमा पंत (आईआईटी रुड़की निदेशक की धर्मपत्नी), श्रीमती पूर्णिमा परिदा और श्रीमती सारला श्री ने विभिन्न श्रेणियों में विजेताओं को पुरस्कृत किया।



इस अवसर पर सीबीआरआई परिवार के बच्चों द्वारा फैसी ड्रेस प्रस्तुति, श्रीमती प्रियंका द्वारा गीत गायन और रोचक किज भी आयोजित किया गया। कार्यक्रम का सफल आयोजन एस के नेगी और डॉ. डी. पी. कानूनगो जी ने किया।



जिसके बाद डॉ. लीना ने सभी अतिथियों, प्रतिभागियों और आयोजकों को धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम के अंत में, राष्ट्रीय गान की सामूहिक प्रस्तुति ने माहौल को देशभक्ति से भर दिया।

## शून्य से कम तापमान वाले क्षेत्रों में सौर ऊर्जा से मिलेगा गर्म पानी

जगरण संवाददाता, रुड़की : केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) रुड़की की ओर से हिमाचल प्रदेश के किन्नौर जिले के गांव कल्पा में नौ हजार फीट की ऊंचाई पर स्थित बालिका आश्रम को सौर तापीय ऊर्जा से गर्म पानी की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। इसके लिए संस्थान ने अत्यधिक ठंडे मौसम के लिए ऊर्जा-कुशल सौर-सहायता प्राप्त हीट पंप तकनीक विकसित की है। इस तकनीक से पर्वतीय क्षेत्रों को काफी मदद मिलेगी।

संस्थान के निदेशक आर प्रदीप कुमार एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक एसके नेगी ने बताया कि उच्च ऊंचाई वाले क्षेत्रों में वर्ष भर गर्म पानी की आवश्यकता रहती है। वहीं, पारंपरिक वाटर हीटर अत्यधिक ऊर्जा की खपत करते हैं। इस समस्या के समाधान के लिए तकनीक विकसित की गई है। यह प्रणाली शून्य और इससे कम तापमान से कुशलतापूर्वक ऊष्मा स्थानांतरण में सक्षम है। जिससे ठंडे मौसम में भी लगातार गर्म पानी की आपूर्ति सुनिश्चित होगी। इस तकनीक में एक नवीन वाष्पीकरण ट्यूब का भी



बालिका आश्रम में लगाया गया सौर सहायता प्राप्त हीट पंप • **संवाद संस्थान**

इस्तेमाल किया है, जिससे इसकी दक्षता में सुधार हुआ है। इसमें बिजली की खपत को 60 से 75 प्रतिशत तक कम किया जा सकता है। यह तकनीक आवासीय उपयोग के अलावा व्यवसायिक अपार्टमेंट और औद्योगिक प्रतिष्ठानों के लिए भी उपयुक्त है। यह तकनीक कार्बन उत्सर्जन को कम करने और जीवाश्म ईंधनों पर निर्भरता को भी कम करती है। तकनीक विकसित करने में विज्ञानी डा. चंदन स्वरूप मीना और उनके साथी भी शामिल रहे।

## हिन्दुस्तान अपना रुड़की

www.livehindustan.com

# अपना रुड़की

## ऊंचाई वाले क्षेत्रों में सौर ऊर्जा से पानी गर्म करना होगा आसान

रुड़की, संवाददाता। ऊंचाई वाले क्षेत्रों में वर्ष भर गर्म पानी की आवश्यकता और पारंपरिक वाटर हीटर की वजह से अत्यधिक ऊर्जा की खपत की समस्या का सीबीआरआई (सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट) रुड़की ने समाधान निकाल लिया है। सीबीआरआई ने अत्यधिक ठंडे मौसम के लिए ऊर्जा कुशल सौर सहायता प्राप्त हीट पंप तकनीक विकसित की है। यह प्रणाली शून्य तापमान से कुशलतापूर्वक ऊष्मा स्थानांतरण में सक्षम है। जिससे ठंडे मौसम में भी लगातार गर्म पानी की आपूर्ति सुनिश्चित हो पाएगी। यह सौर तापीय ऊर्जा और हीट पंप तकनीक का एकीकृत स्वरूप है। इस प्रणाली के संचालन के लिए एक नवीन वाष्पीकरण ट्यूब का भी इस्तेमाल किया गया है। जिससे इसकी दक्षता में सुधार हुआ है।

इस तकनीक का पहला क्षेत्रीय परीक्षण हिमाचल प्रदेश के किन्नौर जिले के कल्पा स्थित बालिका आश्रम में किया गया। यह आश्रम नौ हजार फीट की ऊंचाई पर है। जहां का तापमान अक्सर शून्य से नीचे चला जाता है। यह कार्य सीबीआरआई के निदेशक प्रोफेसर आर. प्रदीप कुमार और एपीआई रिसर्च ग्रुप के प्रमुख एसके नेगी के निदेशन में किया गया। इस तकनीक के उचित इस्तेमाल से बिजली की खपत को 60 प्रतिशत से 75 प्रतिशत तक कम किया जा सकता है। पर्याप्त गर्म ऊंचाई वाले क्षेत्रों के लिए इसे आर्थिक रूप से लाभदायक विकल्प बनाती है। आवासीय उपयोग के अलावा, यह तकनीक व्यवसाय अपार्टमेंट और औद्योगिक प्रतिष्ठानों के लिए भी उपयुक्त है। यह तकनीक कार्बन उत्सर्जन को कम करने और जीवाश्म ईंधनों पर निर्भरता को कम करता है। इस तकनीक को सीबीआरआई के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. चंदन स्वरूप मीना और उनके साथियों ने तैयार किया है।

सीबीआरआई रुड़की ने सौर ऊर्जा से पानी गर्म करने की नई तकनीक विकसित की।

■ सीबीआरआई ने ऊर्जा कुशल सौर सहायता प्राप्त हीट पंप तकनीक विकसित की

■ ऊंचाई वाले क्षेत्रों में वर्ष भर गर्म पानी की आवश्यकता को देखते हुए किया रिसर्च

■ तकनीक का पहला परीक्षण हिमाचल के कल्पा स्थित बालिका आश्रम में किया गया

## 9000 फीट की ऊंचाई पर स्थित बालिका आश्रम में सौर ऊर्जा से मिलेगा गर्म पानी

### सीबीआरआई ने हिमाचल प्रदेश के किन्नौर जिले में स्थापित की तकनीक

संवाद न्यूज एजेंसी

रुड़की। सीबीआरआई (केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान) रुड़की की ओर से हिमाचल प्रदेश के किन्नौर जिले के गांव कल्पा में 9000 फीट की ऊंचाई पर स्थित बालिका आश्रम को सौर तापीय ऊर्जा से गर्म पानी की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। इसके लिए संस्थान ने अत्यधिक ठंडे मौसम के लिए ऊर्जा-कुशल सौर-सहायता प्राप्त हीट पंप तकनीक विकसित की है।

संस्थान के निदेशक आर प्रदीप कुमार एवं वैज्ञानिक एसके नेगी ने बताया कि उच्च ऊंचाई वाले क्षेत्रों में वर्ष भर गर्म पानी की आवश्यकता रहती है। वहीं, पारंपरिक वाटर हीटर अत्यधिक ऊर्जा की खपत करते हैं। इस समस्या के समाधान के लिए तकनीक विकसित की गई है। यह प्रणाली शून्य और इससे कम तापमान से कुशलतापूर्वक ऊष्मा स्थानांतरण में सक्षम है। जिससे ठंडे मौसम में भी लगातार गर्म पानी की आपूर्ति सुनिश्चित होगी। इस तकनीक में एक नवीन वाष्पीकरण ट्यूब का भी इस्तेमाल किया है। जिससे इसकी दक्षता में सुधार हुआ है। इसमें बिजली की खपत को 60 से 75 प्रतिशत तक कम किया जा सकता है। यह तकनीक आवासीय उपयोग के अलावा व्यवसायिक अपार्टमेंट और औद्योगिक प्रतिष्ठानों के लिए भी उपयुक्त है। यह तकनीक कार्बन उत्सर्जन को कम करने और जीवाश्म ईंधनों पर निर्भरता को भी कम करती है। तकनीक विकसित करने में वैज्ञानिक डॉ. चंदन स्वरूप मीना और उनके साथी भी शामिल रहे।



सीबीआरआई की ओर से हिमाचल में लगाया गया सौर ऊर्जा आधारित प्लांट। स्रोत : संस्थान

पानी की आपूर्ति सुनिश्चित होगी। इस तकनीक में एक नवीन वाष्पीकरण ट्यूब का भी इस्तेमाल किया है गया जिससे इसकी दक्षता में सुधार हुआ है। इसमें बिजली की खपत को 60 से 75 प्रतिशत तक कम किया जा सकता है। यह तकनीक आवासीय उपयोग के अलावा व्यवसायिक अपार्टमेंट और औद्योगिक प्रतिष्ठानों के लिए भी उपयुक्त है। यह तकनीक कार्बन उत्सर्जन को कम करने और जीवाश्म ईंधनों पर निर्भरता को भी कम करती है। तकनीक विकसित करने में वैज्ञानिक डॉ. चंदन स्वरूप मीना और उनके साथी भी शामिल रहे।

## Media Print of National Science Day- March 01, 2025

### Roorkee: केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस समारोह का आयोजन, मुख्य अतिथि ने अपने संबोधन में भारतीय विज्ञान और अनुसंधान के महत्व को किया रेखांकित



Manoj Kumar • 2 days ago

213 3 minutes read



**रूड़की।** सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस समारोह सफलता के साथ संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम में वैज्ञानिकों, छात्रों, शोधकर्ताओं, पेशेवरों और विज्ञान के प्रति उत्साही लोगों की उत्साहपूर्ण भागीदारी देखी गई।



इस उत्सव में विकसित भारत के लिए स्वदेशी प्रौद्योगिकियों के **प्रति गहरी** समझ और सराहना को बढ़ावा देने के उद्देश्य से आकर्षक गतिविधियों की एक शृंखला प्रदर्शित की गई। कार्यक्रम की शुरुआत बाल विद्या मंदिर स्कूल में नए भवन के उद्घाटन से हुई, जिसके बाद विकसित भारत के लिए विज्ञान और नवाचार में वैश्विक नेतृत्व हेतु भारतीय युवाओं की सफल बनाना विषय पर चर्चा प्रतिभागियों द्वारा प्रस्तुतियां दी गईं।



इससे पूर्व कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि डॉ. एस.के. गोपाल और संस्थान के निदेशक प्रोफेसर आर. प्रदीप कुमार और मंगलसोन डॉ. अजय चौरसिया, एस.के. नेगी और कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ. प्रकाश चंद्र थपलियाल के द्वारा संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलन से हुआ। इसके बाद संस्थान के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने उद्घाटन भाषण दिया, जिसमें उन्होंने विज्ञान और नवाचार के बढ़ते प्रभाव पर प्रकाश डाला। इस अवसर 'एक स्वास्थ्य, एक विश्व' (OHOW 2025) विवरणिका का विमोचन डॉ. अजय चौरसिया द्वारा विस्तृत जानकारी के साथ किया गया। इसी के साथ डॉ. किशोर ने जलवायु अनुकूल भवन डिज़ाइन दिशानिर्देश विवरणिका का विमोचन मुख्य अतिथि द्वारा किया। यह पुस्तक ऊंचाई वाले क्षेत्रों में टिकाऊ, ऊर्जा-कुशल इमारतों के निर्माण, पारंपरिक ज्ञान को आधुनिक प्रगति के साथ मिश्रित करने के लिए एक व्यापक मार्गदर्शिका के रूप में कार्य कर सकती है।



इसके बाद आशीष और चंद्रभान पटेल ने भी गुणवत्ता ऑडिट डैशबोर्ड 'प्रहरी' का उद्घाटन मुख्य अतिथि द्वारा किया गया इसके अलावा, संस्थान के निदेशक प्रोफेसर आर. प्रदीप कुमार के द्वारा दो नवीन तकनीकों को लोकजगत के क्षेत्र में उतारने के लिए प्रस्तुत किया जिनमें एक (1) टेक्नोलॉजी उच्च ऊंचाई वाले क्षेत्रों के लिए मड ब्लॉक मशीन और जिसकी विस्तृत जानकारी डॉ. रवींद्र शिंदे द्वारा दी गई और उन्होंने बताया कि उच्च ऊंचाई वाले क्षेत्रों के लिए 'मड ब्लॉक मशीन' तकनीक दूरस्थ, पहाड़ी और कठोर भूमियों में निर्माण से जुड़ी चुनौतियों का सामना करने हेतु एक स्थायी और किफायती समाधान प्रदान करती है। यह मशीन एक यांत्रिक उत्पादन प्रणाली का उपयोग करती है, जो प्रति बैच 2 ब्लॉक तैयार करती है और केवल दो ऑपरेटरों के साथ एक शिफ्ट में 1000 ब्लॉक तक उत्पादन करती है।



एवं (2) ऊर्जा-कुशल सौर-सहायता प्राप्त ऊष्मा पम्प वॉटर हीटर जो गर्म पानी की उपलब्धता को अधिक टिकाऊ और किफायती बनाएगा जिसकी विस्तृत जानकारी डॉ. चन्दन स्वरूप मीना द्वारा दी गई। एवं दूसरी उच्च ऊंचाई वाले क्षेत्रों में पारंपरिक जल हीटिंग प्रणालियां ऊर्जा की दृष्टि से अत्यधिक खपत करने वाली होती हैं।



इस समस्या को हल करने के लिए, सीएसआईआर-सीबीआरआई ने अत्यधिक मौसम परिस्थितियों के लिए एक समाधान पेश किया है, जैसे कि लेह-लद्दाख, सिंचाइन, हिमाचल, जम्मू और कश्मीर, उत्तराखंड और उत्तर-पूर्वी क्षेत्र। यह प्रणाली अत्यधिक ठंडे पर्यावरण तापमान (10°C से -25°C तक) से गर्मी निकाल सकती है। यह तकनीक बिजली की खपत को 60% से 75% तक कम कर सकती है, जो स्थान और साइट के आधार पर इलेक्ट्रिक गीजरो की तुलना में होती है।



इसे एक बार निवेश के रूप में स्थापित किया जा सकता है, जिसके बाद यह लंबी अवधि के लाभ और पर्याप्त बिजली बचत प्रदान करती है। बढ़ती हुई बिजली की लागत और जलवायु परिवर्तन और कार्बन उत्सर्जन पर बढ़ती वैश्विक चिंताओं के साथ, यह नवाचारी तकनीक एक स्थिर समाधान पेश करती है जो जीवाश्म ईंधनों पर निर्भरता को कम करती है। इसके अलावा, इसका कम-कार्बन फुटप्रिंट और घटित ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन इसे पर्यावरणीय रूप से जिम्मेदार समाधान बनाता है जो भारत के नवीनीकरण योग्य ऊर्जा और स्थिरता लक्ष्यों के अनुरूप है। इसके बाद मुख्य अतिथि का परिचय एस.के. नेग्री द्वारा दिया गया।



मुख्य अतिथि ने अपने संबोधन में भारतीय विज्ञान और अनुसंधान के महत्व को रेखांकित किया। इसके बाद मुख्य अतिथि द्वारा पुरस्कार वितरण हुआ। राजेश कुमार के सहायता से किया गया, जिसमें विज्ञान कार्यक्रम का समापन डॉ. हेमलता द्वारा धन्यवाद ज्ञापन और राष्ट्रगान के साथ हुआ।

**राष्ट्रीय विज्ञान दिवस समारोह का आयोजन**

रुड़की। सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में वैज्ञानिकों, छात्रों, शोधकर्ताओं, पेशेवरों और विज्ञान के प्रति उत्साही लोगों ने उत्साहपूर्ण भागीदारी की। उत्सव में विकसित भारत के लिए स्वदेशी प्रौद्योगिकियों के प्रति गहरी समझ और सराहना को बढ़ावा देने के उद्देश्य से आकर्षक गतिविधियों की श्रृंखला प्रदर्शित की गई। कार्यक्रम की शुरुआत बाल विद्या मंदिर स्कूल में नए भवन के उद्घाटन से हुई। कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि डॉ. एमके गोयल, संस्थान के निदेशक प्रोफेसर आर. प्रदीप कुमार, डॉ. अजय चौरसिया, एसके नेगी और कार्यक्रम अध्यक्ष डॉ. प्रकाश चंद्र थपलियाल ने दीप प्रज्ज्वलन कर की। संस्थान के निदेशक प्रो. आर प्रदीप कुमार ने दो नवीन तकनीकों को लोकजगत के क्षेत्र में उतारने के लिए प्रस्तुत किया। मुख्य अतिथि ने भारतीय विज्ञान और अनुसंधान के महत्व को रेखांकित किया। बाद में मुख्य अतिथि ने डॉ. राजेश कुमार की सहायता से पुरस्कार वितरण किया। कार्यक्रम का समापन डॉ. हेमलता के धन्यवाद ज्ञापन और राष्ट्रगान के साथ हुआ।

## सीबीआरआई के वैज्ञानिकों ने बनाई मड ब्लॉक मशीन, पहाड़ी क्षेत्रों के लिए साबित होगी 'मील का पत्थर' - NATIONAL SCIENCE DAY 2025

रुड़की स्थित केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान में विज्ञान दिवस आयोजित. मड ब्लॉक मशीन और सोलर असिस्टेड हीट पंप बेस्ड वॉटर हिटर का हुआ उद्घाटन.



राष्ट्रीय विज्ञान दिवस समारोह (photo-ETV Bharat)

By ETV Bharat Uttarakhand Team  
Published : Mar 1, 2025, 6:52 PM IST

f X 3 Min Read

**रुड़की:** केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें वैज्ञानिकों, छात्रों और शोधकर्ताओं ने भाग लिया. इस दौरान सीबीआरआई (Central Building Research Institute) के निदेशक आर प्रदीप कुमार ने मड ब्लॉक मशीन और सोलर असिस्टेड हीट पंप बेस्ड वॉटर हिटर का उद्घाटन किया. मड ब्लॉक मशीन की तकनीकी से दूरस्थ और ऊंचाई वाले क्षेत्रों में भवन बनाने में काफी फायदेमंद साबित होगी.

सीबीआरआई के निदेशक आर प्रदीप कुमार ने बताया कि मड ब्लॉक मशीन की तकनीक से उच्च ऊंचाई और पहाड़ी वाले क्षेत्रों में दूरस्थ और ऊंचाई वाले क्षेत्रों में भवन बनाने में काफी फायदेमंद साबित हो सकेगी. उन्होंने बताया कि ऊंचाई वाले क्षेत्रों में मटेरियल पहुंचाने में काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है. इसलिए यह मशीन एक दिन में 1000 से ज्यादा ब्लॉक (ईंटें) बना सकती है.

आर प्रदीप कुमार ने बताया कि मड ब्लॉक मशीन से ब्लॉक यानी की ईंट बनाने में लागत भी कम आती है. सोलर असिस्टेड हीट पंप बेस्ड वॉटर हिटर जो -20 से -30 डिग्री टेम्परेचर में वहां पर पानी जम जाता है, उसके लिए इस मशीन का प्रयोग किया जा सकता है. जिससे लोगों की समस्या का समाधान हो सकता है. उन्होंने बताया कि इसमें पानी को जल्द गर्म किया जा सकता है.

दरअसल, सीएसआईआर (Council of Scientific & Industrial Research) और सीबीआरआई (Central Building Research Institute) ने अत्यधिक मौसम परिस्थितियों के लिए एक समाधान पेश किया है. जैसे की लेह-ल्हाख, सियाचिन, हिमाचन, जम्मू- कश्मीर, उत्तराखंड और उत्तर-पूर्वी क्षेत्र. यह प्रणाली अत्यधिक ठंडे पर्यावरण तापमान (10°C से -25°C तक) से गर्मी निकाल सकती है. यह तकनीक बिजली की खपत को 60% से 75% तक कम कर सकती है, जो स्थान और साइट के आधार पर इलेक्ट्रिक गैजेटों की तुलना में होती है.

इसे एक बार निवेश के रूप में स्थापित किया जा सकता है, जिसके बाद यह लंबी अवधि के लाभ और पर्याप्त बिजली बचत प्रदान करती है. बढ़ती हुई बिजली की लागत और जलवायु परिवर्तन और कार्बन उत्सर्जन पर बढ़ती वैश्विक चिंताओं के साथ यह नई तकनीक एक स्थिर समाधान पेश करती है, जो जीवाश्म ईंधनों पर निर्भरता को कम करती है. इसके अलावा इसका कम-कार्बन फुटप्रिंट और घटित ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन इसे पर्यावरणीय रूप से जिम्मेदार समाधान बनाता है, जो भारत के नवीनीकरण योग्य ऊर्जा और स्थिरता लक्ष्यों के अनुरूप है.

### राष्ट्रीय विज्ञान दिवस पर सीबीआरआई ने विकसित प्रौद्योगिकियों का किया प्रदर्शन

जागरण संवाददाता, रुड़की: केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) रुड़की में 'रुड़की' को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस समारोह मनवा. इस मौके पर जहां संस्थान ने विकसित प्रौद्योगिकियों का प्रदर्शन किया, विकसित भारत के लिए विज्ञान और नवाचार में वैश्विक नेतृत्व के लिए राष्ट्रीय प्रयत्नों को समर्थन बनाने विषय पर प्रतिवर्धिता भी हुई। इसके अलावा "एक नवाचार, एक विषय" और जलवायु अनुकूलन भवन डिजाइन सेवा-निर्देशा विवरण का विमोचन भी किया गया।

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस समारोह का उद्घाटन मुख्य अतिथि राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान रुड़की के निदेशक डा. एमके गोयल और संस्थान के निदेशक प्रोफेसर आर प्रदीप कुमार ने दीप प्रज्ज्वलन कर डा. एमके गोयल ने भारतीय विज्ञान और अनुसंधान के महत्व को रेखांकित किया. उन्होंने कहा कि विज्ञान ने मानव जीवन स्तर में सुधार लाया है। उन्होंने विज्ञानियों के योगदान को बंद करते हुए जमहिय में विज्ञान का आधिकारिक प्रयोग करने पर और प्रदीप कुमार ने विज्ञान प्रो. आर प्रदीप कुमार ने विज्ञान और नवाचार के बढ़ते प्रभाव पर प्रकाश डाला। निदेशक ने दो नवीन तकनीकों का लेखारण किया. इनमें एक टेक्नोलॉजी उच्च ऊंचाई वाले क्षेत्रों के लिए मड ब्लॉक मशीन और दूसरा ऊर्जा-कुशल सौर-सहायता प्राप्त ऊष्म पम्प वॉटर हीटर थी। जो गर्म पानी की उपलब्धता को अधिक टिकाऊ और किफायती बनाए। इस दौरान गुजरात आर्किटेक्चर "प्रहरी" और बाल विद्या मंदिर स्कूल में नए भवन का उद्घाटन भी किया गया। इस मौके पर कार्यक्रम के अध्यक्ष डा. प्रकाश चंद्र थपलियाल, डा. अजय चौरसिया, एसके नेगी, डा. राजेश कुमार, डा. हेमलता, डा. किशोर, आशीष, चंद्रभानु पटेल आदि उपस्थित रहे।

उच्च ऊंचाई वाले क्षेत्रों को स्थायी-किफायती मड ब्लॉक मशीन संस्थान के डा. रवींद्र ने उच्च ऊंचाई वाले क्षेत्रों के लिए मड ब्लॉक मशीन के बारे में बताया कि यह नवीन तकनीक दूरस्थ, पहाड़ी और ऊंचाई भूभागों में निर्माण से जुड़ी चुनौतियों का सामना करने के लिए एक स्थायी और विकसित तकनीक है। इस मशीन को इतन करने के लिए सीबीआरआई ने अत्यधिक मौसम परिस्थितियों के लिए एक समाधान पेश किया है। जैसे कि लेह-ल्हाख, सियाचिन, हिमाचल, जम्मू और कश्मीर, उत्तराखंड और उत्तर-पूर्वी क्षेत्र। यह प्रणाली अत्यधिक ठंडे पर्यावरण तापमान (10 से 25 तक) से गर्मी निकाल सकती है। उन्होंने बताया कि यह तकनीक

बिजली की खपत 75 प्रतिशत तक होगी कम डा. चंदन स्वस्व मीन ने विकसित तकनीक के बारे में बताया कि उच्च ऊंचाई वाले क्षेत्रों में धारमयक जल हीटिंग प्रणालियां ऊर्जा की दृष्टि से अत्यधिक खपत करने वाली होती हैं। इस समस्या को हल करने के लिए सीबीआरआई ने अत्यधिक मौसम परिस्थितियों के लिए एक समाधान पेश किया है। जैसे कि लेह-ल्हाख, सियाचिन, हिमाचल, जम्मू और कश्मीर, उत्तराखंड और उत्तर-पूर्वी क्षेत्र। यह प्रणाली अत्यधिक ठंडे पर्यावरण तापमान (10 से 25 तक) से गर्मी निकाल सकती है। उन्होंने बताया कि यह तकनीक

बिजली की खपत को 60 प्रतिशत से 75 प्रतिशत तक कम कर सकती है। जो स्थान और साइट के आधार पर इलेक्ट्रिक गैजेटों की तुलना में होती है। इसे एक बार निवेश के रूप में स्थापित किया जा सकता है। जिसके बाद यह लंबी अवधि के लाभ और पर्याप्त बिजली बचत प्रदान करती है। बढ़ती हुई बिजली की लागत और जलवायु परिवर्तन और कार्बन उत्सर्जन पर बढ़ती वैश्विक चिंताओं के साथ यह नवाचारी तकनीक एक स्थिर समाधान पेश करती है। जो जीवाश्म ईंधनों पर निर्भरता को कम करती है।

## Central institute unveils climate-resilient building in Roorkee

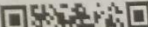
Tapen Susheel | TNN

**Roorkee:** The Central Building Research Institute (CBRI) in Roorkee has unveiled a climate-resilient building, the first of its kind in India, designed to minimise environmental impact while en-

hancing thermal comfort. Built using CBRI's in-house technologies, the structure emits 40 to 60% less carbon dioxide than conventional buildings.

On Friday, CBRI handed over the two-storey building to Bal Vidya Mandir, where it will serve as a testing ground

for data collection. Sensors in the structure will monitor thermal conductivity, climate conditions etc to provide key insights into sustainable construction. "This marks a significant step towards sustainable infrastructure in India," said Prof R Pradeep Kumar, CBRI director.



March 01, 2025

Printed from

THE TIMES OF INDIA

## Central Building Research Institute (CBRI) unveils climate-resilient building in Roorkee

TNN | Mar 1, 2025, 07:02 AM IST



Roorkee: The Central Building Research Institute (CBRI) in Roorkee has unveiled a climate-resilient building, the first of its kind in India, designed to minimise environmental impact while enhancing thermal comfort. Built using CBRI's in-house technologies, the structure emits 40 to 60% less carbon dioxide than conventional buildings.

On Friday, the institute handed over the self-developed two-story building to Bal Vidya Mandir, where it will serve as a testing ground for scientific data collection over the next year. Sensors and equipment installed in the structure will monitor thermal conductivity, climate conditions, building strength, load distribution, and acoustic performance, providing critical insights

into sustainable construction.

Designed specifically for regions with a "composite climate"—which includes areas from Delhi to Uttarakhand—the initiative is part of CBRI's national mission to develop climate-resilient buildings (CRBs) suited to various environmental conditions. As part of this mission, the institute is also constructing prototype CRBs in Leh-Ladakh, Rajasthan, Chennai, and Bengaluru, each tailored to distinct climatic zones: cold, hot and dry, warm and humid, and temperate.

CBRI, a national R&D institute under the Council of Scientific & Industrial Research (CSIR), officially handed over the building's keys to the school principal during National Science Day celebrations. Spanning 1,200 sq ft, the structure features two classrooms, each accommodating 30 students—one on each floor.

"This initiative marks a significant step towards sustainable and climate-resilient infrastructure in India," said Prof R Pradeep Kumar, director of CBRI. The project was spearheaded by senior scientists Dr Ajay Chourasia and Dr Surendra Kumar Negi, who emphasised its role in shaping future building standards.

Constructed with cutting-edge materials, the building incorporates cold-formed steel columns, expanded polystyrene (EPS) concrete panels, acoustic panels, agro-industrial waste concrete panels, and cellular lightweight concrete (CLC) blocks. These composite materials enhance structural integrity, optimise thermal efficiency, and reduce overall weight, making the building a model for climate-responsive construction.

To assess its energy efficiency, advanced monitoring systems have been installed, including an IoT-enabled node that continuously collects data on wall surface temperatures, lux levels, air temperature, humidity, and infrared readings. Equipped with RTD sensors, the system transmits real-time data to the cloud via Wi-Fi, facilitating remote monitoring and analysis.

"The data gathered across different seasons will be instrumental in evaluating the building's climate-responsive performance and will contribute to the development of Indian Standard Provisions for sustainable construction materials," said Chourasia.

## ATL Tinkering Lab Visit at PM Shree Raiwala on Feb 19<sup>th</sup>, 2025



### एटीएल टिंकर फेस्ट में केवी रायवाला की टीम प्रथम

रायवाला, लोकसत्ता।

पीएम श्री केवी विद्यालय रायवाला केट में आयोजित एटीएल टिंकर फेस्ट में छात्रों ने नवाचारी परियोजनाओं का प्रदर्शन किया। जिसमें केवी रायवाला की टीम को प्रथम स्थान मिला। एटीएल इंटरनेशनल स्कूल, ब्रिटेन के छात्रों की टीम प्रथम स्थान पर रही। इस दौरान प्रचारक रीता इंदरजीत सिंह ने कहा कि बाल वैज्ञानिकों की प्रतिभा को निखारने में एटीएल टिंकरिंग लैब की अहम भूमिका है। इस योजना से छात्रों में रचनात्मकता बढ़ रही है। एटीएल फेस्ट में बहुरे केवी भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की के मुख्य



वैज्ञानिक नदीम अहमद, वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. हेमलता व डा. तबिश आलम ने बाल विज्ञानियों की रचनात्मकता और कौशल की सराहना की और नवाचार के प्रति उनकी रुचि को प्रोत्साहित किया।

एटीएल टिंकरिंग लैब (एटीएल) प्रभारी रमेश खान ने बताया कि फेस्ट में केवी रायवाला स्कूल में आयोजित स्कूल, डीएसबी इंटरनेशनल स्कूल, रीडिंग रेनबो की टीम ने भाग लिया। लर्निंग लिंक्स

फाउंडेशन और डेल टेक्नोलॉजी इन कार्यक्रम से सहयोगी की भूमिका में रहे। यह संस्करण एटीएल लैब में छात्रों को नवाचार, प्रौद्योगिकी और तकनीकी कौशल सिखाने में योगदान दे रही है।

## पीएम श्री केवी रायवाला में एटीएल टिंकर फेस्ट का आयोजन



### स्पष्ट एक्सप्रेस

रायवाला, 19 फरवरी 2025: सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की के मुख्य वैज्ञानिक नदीम अहमद, वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. हेमलता व वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. तबिश आलम के सान्निध्य में आज पीएम श्री केवी रायवाला में एटीएल टिंकर फेस्ट का आयोजन किया गया।

इस आयोजन में डीएसबी इंटरनेशनल ऋषिकेश, रीडिंग रेनबो श्यामपुर, और मां आनंदमयी मेमोरियल स्कूल रायवाला के विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। STEAM प्रदर्शनी में छात्रों ने अपनी नवाचारी परियोजनाओं का प्रदर्शन किया।

प्रतियोगिता में पीएम श्री केवी रायवाला की दो टीमों ने पहला और तीसरा स्थान प्राप्त किया, जबकि डीएसबी इंटरनेशनल स्कूल की टीम ने दूसरा स्थान हासिल किया। मुख्य अतिथियों ने छात्रों की रचनात्मकता और तकनीकी कौशल की सराहना की और नवाचार के प्रति उनकी रुचि को प्रोत्साहित किया।

विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती रीता इंदरजीत सिंह ने छात्रों के प्रयासों की प्रशंसा करते हुए कहा कि इस तरह के आयोजन विद्यार्थियों में वैज्ञानिक सोच और नवाचार को बढ़ावा देते हैं। एटीएल प्रभारी श्रीमती रामाया खान ने बच्चों को बधाई दी।

इस आयोजन में लर्निंग लिंक्स फाउंडेशन और डेल टेक्नोलॉजीज का विशेष योगदान रहा, जो अपने एटीएल एडॉप्शन



### एटीएल टिंकर फेस्ट में केवी रायवाला की टीम रही अव्वल

संवाद सूत्र, जगरन • रायवाला : पीएम श्री केवी विद्यालय रायवाला केट में आयोजित एटीएल टिंकर फेस्ट में छात्रों ने नवाचारी परियोजनाओं का प्रदर्शन किया। जिसमें केवी रायवाला की टीम को प्रथम स्थान मिला। डीएसबी इंटरनेशनल स्कूल, ब्रिटेन के छात्रों की टीम प्रथम स्थान पर रही। इस दौरान प्रचारक रीता इंदरजीत सिंह ने कहा कि बाल वैज्ञानिकों की प्रतिभा को निखारने में एटीएल टिंकरिंग लैब की अहम भूमिका है। इस योजना से छात्रों में रचनात्मकता बढ़ रही है। एटीएल फेस्ट में बहुरे केवी भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की के मुख्य वैज्ञानिक नदीम अहमद, वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. हेमलता व डा. तबिश



केवी रायवाला में आयोजित एटीएल टिंकर फेस्ट में शामिल छात्र व शिक्षक का समूह

आलम ने बाल विज्ञानियों की रचनात्मकता और कौशल की सराहना की और नवाचार के प्रति उनकी रुचि को प्रोत्साहित किया। एटीएल टिंकरिंग लैब (एटीएल) प्रभारी रमेश खान ने

कार्यक्रम में सहयोगी की महत्वपूर्ण भूमिका में रहे। एटीएल टिंकरिंग लैब प्रदर्शनी में शामिल डीएसबी इंटरनेशनल स्कूल के छात्र करण सोहनिल व नीलेश मोहिल ने ईको फ्रिडली ईको सिस्टम युक्त वेस्ट मैनेजमेंट यार्ड का मॉडल प्रदर्शित कर सबका मन मोह लिया। दोनों छात्रों ने बताया कि एटीएल टिंकरिंग लैब से सदैव को लेकर उनकी सांख्यिकी आसक्ति और अधिक बढ़ती हुई और उनकी सेवने-समझने का शौक बढ़ता है। वेस्ट मैनेजमेंट के प्रति लोगों को जगरन करने के लिए उन्होंने खुद ईको फ्रिडली मॉडल तैयार किया है।

## CSIR-CBRI's Foundation Day February 10, 2025

### Roorkee: सीएसआईआर-सीबीआरआई ने मनाया 79वां स्थापना दिवस



रूड़की: सीएसआईआर-सीबीआरआई ने स्थापना दिवस 79वां मनाया। रूड़की में स्थापना दिवस 79वां मनाया। रूड़की में स्थापना दिवस 79वां मनाया।



इस अवसर पर 1947 में अपनी स्थापना के बाद से भवन विज्ञान और अनुसंधान में संस्थान के उत्कृष्टतम योगदानों को सराफ किया। इस कार्यक्रम में कार्यकारी, छात्रों और गणतन्त्र व्यक्तियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।



प्रो. एस.के. भट्टाचार्य, पूर्व निदेशक, सीएसआईआर-सीबीआरआई और कुलपति, विश्व नगर विश्वविद्यालय, चेन्नई के प्रोफेसर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे, जबकि इस अवसर पर सीएसआईआर-एचआरडीओ, नई दिल्ली के वरिष्ठ उपस्थिति विनोद कुमार, विशिष्ट अतिथि और एनआईएच के निदेशक डा. एस.के. गोखले, भी उपस्थित रहे।



समारोह की शुरुआत दीप प्रज्वलन के साथ हुई, इसके बाद सीएसआईआर-सीबीआरआई, रूड़की के निदेशक ने स्वागत भाषण दिया।



अपने भाषण में उन्होंने सुरक्षा, स्थिरता, कार्यक्षमता और नैतिकता के क्षेत्रों में संस्थान के योगदान पर प्रकाश डाला। उन्होंने विभिन्न अनुसंधान एवं विकास और गैर-अनुसंधान एवं विकास पहलुओं, भविष्य के लक्ष्यों, प्रमुख उपलब्धियों और चल रहे उद्देश्यों को भी रेखांकित किया। सम्मानित अतिथियों को उनके बहुमूल्य योगदान के लिए सम्मानित किया गया।



डॉ. अजय चौरसिया ने एक महत्वपूर्ण घोषणा की कि सीएसआईआर-सीबीआरआई ने 20-22 नवंबर 2025 तक प्रतिष्ठित वन हेल्थ वन वर्ल्ड (ओएचओडब्ल्यू) सम्मेलन पर चौथे अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी की मेजबानी करने का अवसर सफलतापूर्वक प्राप्त किया है। इसी के साथ श्री एस.के. नेगी, डॉ. अजय चौरसिया और अनूप कुमार ने अपनी पुस्तक "भारतीय पारंपरिक चरों की श्रलोक" का विमोचन किया, जो सीएसआईआर मिशन मोड प्रोजेक्ट: क्लासिफिकेशन ऑफ़ रीजिस्टर्ड विलिंग्स के परिणामों में से एक है।



इसके पश्चात डा. डी.पी. कानूनगो ने श्री विनोद कुमार जी का परिचय प्रस्तुत किया। श्री विनोद कुमार ने अपने संबोधन में विभिन्न वैज्ञानिक संगठनों में अपने कार्यकाल पर विचार किया और इस बात पर जोर दिया कि वैज्ञानिक और प्रशासक दो मूलभूत स्तंभ हैं, जिन्हें संस्थागत सफलता के लिए मिलकर काम करना चाहिए।

इसके पश्चात डा. डी.पी. कानूनगो ने श्री विनोद कुमार जी का परिचय प्रस्तुत किया। श्री विनोद कुमार ने अपने संबोधन में विभिन्न वैज्ञानिक संगठनों में अपने कार्यकाल पर विचार किया और इस बात पर जोर दिया कि वैज्ञानिक और प्रशासक दो मूलभूत स्तंभ हैं, जिन्हें संस्थागत सफलता के लिए मिलकर काम करना चाहिए।



प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने समारोह के मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथि को स्मृति चिह्न और शॉल भेंट की गई। आज संस्थान में एक सांस्कृतिक संस्था का आयोजन किया गया। इसके अलावा इस अवसर पर राष्ट्रीय भूकंप इंजीनियरिंग परीक्षण सुविधा (एनआईईटीएफ) के तलावधान में दीवार पर आउट-ऑफ-प्लेन लोडिंग परीक्षण सुविधा (ओओटीपी) सफलतापूर्वक राष्ट्र को सुविधा समर्पित की, जो भारत में अपनी तरह की पहली सुविधा है।

## CSIR-CBRI's Foundation Day February 10, 2025

### CSIR-CBRI, Roorkee Celebrates Its 79th Foundation Day

**Roorkee (The Hawk):** CSIR-Central Building Research Institute (CBRI), Roorkee, celebrated its 79th Foundation Day with a grand event at the Rabindranath Tagore Auditorium, CSIR-CBRI, Roorkee. The occasion honored the institute's remarkable contributions to building science and research since its inception in 1947.

The event saw enthusiastic participation from CBRI staff, students, and distinguished dignitaries. The function was graced by Prof. S.K. Bhattacharya, Former Director, CSIR-CBRI, and Current Vice Chancellor, Shiv Nadar University, Chennai, attended as the Chief Guest. While Shri Vinod Kumar, Senior Deputy Secretary, CSIR-HRDG, New Delhi, as a guest of honour. In this function NIO Director, Dr. M. K. Goel was also present.

The celebrations began with the ceremonial lighting of the lamp, followed by a welcome address by the Director, CSIR-CBRI, Roorkee. In his speech, he highlighted the institute's contributions in

the areas of safety, sustainability, functionality, and ethics. He also outlined various R&D and non-R&D initiatives, futuristic goals, key achievements, and ongoing objectives. The esteemed guests were honored for their valuable contributions. Dr. Ajay Chourasia made an announcement that CSIR-CBRI has successfully se-

augmented their book "Glimpse of Indian Traditional Houses", which is one of the finest outcomes of the CSIR Mission Mode Project: Climate Resilient Building.

The best research papers in the year 2023 and 2024 were also announced. The event featured an awards ceremony recognizing winners of various

presented to the distinguished guests. The event concluded on a patriotic note with a vote of thanks by Dr. Soju, followed by the National Anthem.

The inauguration of the facility to the Nation for Out-of-plane loading on Wall Test Facility (OOTP) under the aegis of National Earthquake Engineering Testing Facility (NEETP).



cured the opportunity to host the 4th International Symposium on the prestigious One Health One World (OHOW) Conference 2025, in CSIR-CBRI Roorkee. Additionally, Ar. S.K. Negi, Ar. Anup Kumar, and Dr. Ajay Chourasia in-

sports activities. Dr. D.P. Kanungo provided an introduction to the Guest of Honour, Shri Vinod Kumar. Mr. Vinod ji shared experiences of working with various scientific labs of CSIR and emphasized that scientists and administrators are two fundamental pillars that must work together for institutional success.

Dr. Ajay Chourasia introduced the Chief Guest, Prof. S.K. Bhattacharya. In his address he commended the institute's R&D contributions, advanced research facilities, and its role in national development while also encouraging CSIR-CBRI to achieve its future goals. As a mark of appreciation, a shawl was pre-

first-of-its-kind in India. The facility was inaugurated by Prof. Sriman Kumar Bhattacharyya, Vice-Chancellor, Shiv Nadar University, Chennai and Former Director, CSIR-Central Building Research Institute. OOTP enables full-scale testing of walls (3m wide x 3m height) subjected to out-of-plane monotonic and cyclic loading, enhancing research on earthquake safety and retrofit technologies for walls. This facility was developed under the supervision of Dr. Ajay. Director Prof. R. Pradeep Kumar emphasized the institute's commitment to advancing seismic resilience and safe construction technologies.

### Kidzee School And Kids Planet Prem Public School's Annual Function Celebrated With Great Pomp

Jashir Singh Duggal

**Kurukshetra (The Hawk):** The annual function of Sirjanotsav 2025 organized by Kidzee School and Kids Planet Prem Public School was celebrated with great pomp in the grand auditorium of Kurukshetra University. During this, eminent personalities from education, social service and various fields were present. The inaugural session of the program was inaugurated by former

MI A Dr. Pawan Saini, President of Haryana Kumar Federation

### सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की ने अपना 79वां स्थापना दिवस मनाया

**रुड़की (दैनिक हाक):** सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की ने अपनी स्थापना दिवस मनाया। इस अवसर पर सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की ने अपनी स्थापना दिवस मनाया।

सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की ने अपनी स्थापना दिवस मनाया। इस अवसर पर सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की ने अपनी स्थापना दिवस मनाया।

सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की ने अपनी स्थापना दिवस मनाया। इस अवसर पर सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की ने अपनी स्थापना दिवस मनाया।



सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की ने अपनी स्थापना दिवस मनाया। इस अवसर पर सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की ने अपनी स्थापना दिवस मनाया।

सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की ने अपनी स्थापना दिवस मनाया। इस अवसर पर सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की ने अपनी स्थापना दिवस मनाया।

सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की ने अपनी स्थापना दिवस मनाया। इस अवसर पर सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की ने अपनी स्थापना दिवस मनाया।

सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की ने अपनी स्थापना दिवस मनाया। इस अवसर पर सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की ने अपनी स्थापना दिवस मनाया।

सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की ने अपनी स्थापना दिवस मनाया। इस अवसर पर सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की ने अपनी स्थापना दिवस मनाया।

सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की ने अपनी स्थापना दिवस मनाया। इस अवसर पर सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की ने अपनी स्थापना दिवस मनाया।

सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की ने अपनी स्थापना दिवस मनाया। इस अवसर पर सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की ने अपनी स्थापना दिवस मनाया।

सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की ने अपनी स्थापना दिवस मनाया। इस अवसर पर सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की ने अपनी स्थापना दिवस मनाया।

सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की ने अपनी स्थापना दिवस मनाया। इस अवसर पर सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की ने अपनी स्थापना दिवस मनाया।

सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की ने अपनी स्थापना दिवस मनाया। इस अवसर पर सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की ने अपनी स्थापना दिवस मनाया।

सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की ने अपनी स्थापना दिवस मनाया। इस अवसर पर सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की ने अपनी स्थापना दिवस मनाया।

सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की ने अपनी स्थापना दिवस मनाया। इस अवसर पर सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की ने अपनी स्थापना दिवस मनाया।

छात्र-छात्राओं ने मनोरंजक खेल प्रतियोगिताओं एवं इसलिये योजना बनाकर चुनौतियों का सामना करना आनन्द कुमार समेत सभी शिक्षक उपस्थित रहें। रजत बहुखंडी आदि मौजूद रहे।

## सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की ने मनाया 79वां स्थापना दिवस

» मदरलैंड संवाददाता

रुड़की। सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की ने रवींद्रनाथ टैगोर ऑडिटोरियम में भव्य कार्यक्रम के साथ अपना 79वां स्थापना दिवस मनाया। इस दौरान 1947 में अपनी स्थापना के बाद से भवन विज्ञान और अनुसंधान में संस्थान के उल्लेखनीय योगदानों को स्मरण किया गया। कार्यक्रम में कर्मचारियों, छात्रों और नागरिकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। पूर्व निदेशक, सीएसआईआर-सीबीआरआई, कुलपति प्रो. एसके भट्टाचार्य मुख्य अतिथि, सीएसआईआर-एचआरडीजी, नई दिल्ली के वरिष्ठ उपसचिव विनोद कुमार विशिष्ट अतिथि और एनआईएच के निदेशक डॉ. एमके गोयल, भी उपस्थित रहे। समारोह की शुरुआत दीप प्रज्वलन के साथ हुई। इसके बाद सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की

के निदेशक ने स्वागत भाषण दिया। उन्होंने सुरक्षा, स्थिरता, कार्यक्षमता और नैतिकता के क्षेत्रों में संस्थान के योगदान पर प्रकाश डाला। उन्होंने विभिन्न अनुसंधान एवं विकास और गैर-अनुसंधान एवं विकास पहलों, भविष्य के लक्ष्यों, प्रमुख उपलब्धियों और चल रहे उद्देश्यों को भी रेखांकित किया। अतिथियों को उनके बहुमूल्य योगदान के लिए सम्मानित किया गया। डॉ. अजय चौरसिया ने सीएसआईआर-सीबीआरआई ने 20-22 नवंबर 2025 तक प्रतिष्ठित वन हेल्वे वन वर्ल्ड सम्मेलन पर चैथे अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी की मेजबानी करने का अवसर सफलतापूर्वक प्राप्त करने की घोषणा की। एसके नेगी, डॉ. अजय चौरसिया और अनूप कुमार ने अपनी



पुस्तक भारतीय पारंपरिक घरों की झलक का विमोचन किया, जो सीएसआईआर मिशन मोड प्रोजेक्ट क्लाइमेट रेजिलिएंट बिल्डिंग के परिणामों में से एक है। 2023-24 के सर्वश्रेष्ठ शोध पत्रों की घोषणा भी की गई। कार्यक्रम में विभिन्न खेल गतिविधियों के विजेताओं को भी पुरस्कृत किया गया। डॉ. अजय चौरसिया ने मुख्य अतिथि प्रो. एसके भट्टाचार्य का परिचय कराया। प्रो. भट्टाचार्य ने

संस्थान के अनुसंधान एवं विकास योगदान, उन्नत अनुसंधान सुविधाओं और राष्ट्रीय विकास में इसकी भूमिका की सराहना की। साथ ही सीएसआईआर-सीबीआरआई को अपने भविष्य के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित किया। डॉ. डी.पी. कानुनगो ने विनोद कुमार का परिचय प्रस्तुत किया। विनोद कुमार ने विभिन्न वैज्ञानिक संगठनों में अपने कार्यकाल पर विचार किया। जोर दिया कि वैज्ञानिक और प्रशासक दो मूलभूत स्तंभ हैं, जिन्हें संस्थागत सफलता के लिए मिलकर काम करना चाहिए। प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथि को स्मृति चिह्न और शॉल भेंट की। संस्थान में सांस्कृतिक संस्था का भी आयोजन किया गया। इस अवसर पर राष्ट्रीय भूकंप

इंजीनियरिंग परीक्षण सुविधा (एनईटीएफ) के तत्वावधान में दीवार पर आउट-ऑफ-प्लेन लोडिंग परीक्षण सुविधा सफलतापूर्वक राष्ट्र को सुविधा समर्पित की, जो भारत में अपनी तरह की पहली सुविधा है। इसका उद्घाटन शिव नादर विश्वविद्यालय, चेन्नई के कुलपति और सीएसआईआर-केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान के पूर्व निदेशक प्रो. कुमार भट्टाचार्य ने किया। ओओटीपी आउट-ऑफ-प्लेन मोनोटोनिक और साइकल लोडिंग के अधीन दीवारों का पूर्ण पैमाने पर परीक्षण करने में सक्षम बनाता है, जिससे दीवारों के लिए भूकंप सुरक्षा और रेडोफिट प्रौद्योगिकियों पर शोध को बढ़ावा मिलता है। इसका कार्य डॉ. अजय चौरसिया की देखरेख में हो रहा है। संस्थान के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने भूकंपीय लचीलापन और सुरक्षित निर्माण प्रौद्योगिकियों को आगे बढ़ाने के लिए संस्थान की प्रतिबद्धता पर जोर दिया।





# हवाई अड्डे की इमारतों और बुनियादी ढांचे की संरचनात्मक स्थिरता पर कार्यशाला आयोजित

रुड़की। सीएसआईआर-केंद्रीय उड्डयन मंत्रालय के सचिव वी. भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीबीआरआई) ने



अध्यक्ष विपिन कुमार मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुये और नागरिक उड्डयन मंत्रालय की संयुक्त सचिव सुश्री रुबीना अली भी मौजूद रही। सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने उद्घाटन भाषण दिया, जिसमें हवाई अड्डे के बुनियादी ढांचे में

नागरिक उड्डयन मंत्रालय (एमओसीए) के सहयोग से एएआई ऑफिसर्स इंस्टीट्यूट, नई दिल्ली में 'हवाई अड्डे की इमारतों और बुनियादी ढांचे की संरचनात्मक स्थिरता' पर एक कार्यशाला आयोजित की। इस कार्यक्रम का उद्घाटन नागरिक

संरचनात्मक सुरक्षा के महत्व पर जोर दिया गया। मुख्य वैज्ञानिक डॉ. अजय चौरसिया ने मौजूदा हवाई अड्डे की इमारतों में आम दोषों पर एक विस्तृत प्रस्तुति दी और सुधार के लिए व्यवहारिक समाधान प्रदान किए।

# 'आपदारोधी संरचनाओं की तत्काल आवश्यकता'

● जनशक्ती संवाददाता, रुड़की

सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की में आउटरीच और प्रसार सेवाएं सीएसआईआर एकीकृत कौशल पहल के तत्वावधान में रणनीति में आपदा प्रतिरोधी भवन निर्माण पर पांच दिवसीय कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित कर रहे हैं। यह कार्यक्रम हिमाचल प्रदेश राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एचपीएसडीएमए) द्वारा प्रायोजित है और यह हिमाचल प्रदेश के पंचायती राज और ग्रामीण निर्माण विभाग के जूनियर इंजीनियरों (जेई) और तकनीकी सहायकों (टीए) के लिए आयोजित किया जा रहा है, जिसमें बिलासपुर और किन्नौर जिले शामिल हैं। कार्यक्रम में कुल 25 प्रतिभागियों को ले रहे हैं, जो पहाड़ी क्षेत्रों में आपदा प्रतिरोधी भवनों के निर्माण के लिए बहुमूल्य जानकारी और कौशल प्राप्त कर रहे हैं। इंजीनियर आशीष पिपल, वरिष्ठ वैज्ञानिक और कार्यक्रम समन्वयक, सभी प्रतिभागियों का गर्मजोशी से स्वागत करते हैं और प्रशिक्षण कार्यक्रम का अवलोकन प्रदान करते हैं, पहाड़ी क्षेत्रों में आपदा प्रतिरोधी निर्माण प्रथाओं को बढ़ावा



देने में इसके महत्व पर जोर देते हैं। उन्होंने मंच पर उपस्थित सम्मानित अतिथियों का भी स्वागत किया, जिनमें सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार, उप निदेशक और मुख्य वैज्ञानिक एआर. एस.के. नेगी, मुख्य वैज्ञानिक डॉ. डी.पी. कानूनगो और ओडीएसओ के मुख्य वैज्ञानिक और प्रमुख नदीम अहमद शामिल थे। मुख्य वैज्ञानिक डॉ. डी.पी. कानूनगो ने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए प्राकृतिक आपदाओं के विनाशकारी प्रभावों और ऐसे जोखिमों को कम करने के लिए आपदा रोधी संरचनाओं की तत्काल आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने आपदाओं का प्रभावों को से सामना करने के लिए मौजूदा और नई

दोनों संरचनाओं में सुधार के महत्व पर प्रकाश डाला। डॉ. कानूनगो ने निर्माण सामग्री और प्रथाओं की गुणवत्ता सुनिश्चित करने में निजी उद्योगों और ठेकेदारों की महत्वपूर्ण भूमिका पर भी चर्चा की। मुख्य वैज्ञानिक एआर. एस.के. नेगी ने जोर दिया कि निर्माण में सुरक्षा सबसे महत्वपूर्ण मानदंड है, खासकर आपदा-प्रवण क्षेत्रों में उन्होंने आगे बताया कि निर्माण में सुरक्षा भूवैज्ञानिक कारकों से गहराई से जुड़ी हुई है, जो प्राकृतिक आपदाओं के खिलाफ लचीलापन और सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण की आवश्यकता को रेखांकित करती है। सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार भवन निर्माण

पहाड़ों में आपदा प्रतिरोधी भवन निर्माण पर पांच दिवसीय कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम

के विभिन्न पहलुओं पर बहुमूल्य अंतर्दृष्टि साझा करते हैं, उचित सामग्री का चयन करने, तापमान भिन्नता को समझने और लचीले ढांचे को डिजाइन करने के लिए क्षेत्र के ज्ञान का लाभ उठाने के महत्व पर बल देते हैं। वह आपदाओं के गंभीर परिणामों को संबोधित करते हैं, जिसमें जानमाल की दुखद हानि और महत्वपूर्ण संपत्ति का नुकसान शामिल है, और इन जोखिमों को कम करने के लिए सक्रिय उपायों की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। श्री नदीम अहमद ने प्रशिक्षण कार्यक्रम की सफलता में सक्रिय भागीदारी और योगदान के लिए सभी गणमान्य व्यक्तियों, प्रतिभागियों और आयोजकों को हार्दिक धन्यवाद दिया। उन्होंने प्रतिभागियों का गर्मजोशी से स्वागत किया और सीखने और कौशल विकास के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को स्वीकार किया।

10 दैनिक जागरण देहरादून/हरिद्वार, 28 जनवरी, 2025

हरिद्वार

## निर्माण में सुरक्षा होता है सबसे महत्वपूर्ण मानदंड

जागरण संवाददाता, रुड़की : केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) रुड़की में पहाड़ों में आपदा प्रतिरोधी भवन निर्माण पर पांच दिवसीय कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम सोमवार से शुरू हो गया है। इसमें संस्थान के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने भवन निर्माण के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा करते हुए उचित सामग्री का चयन करने,

तापमान भिन्नता को समझने व लचीले ढांचे को डिजाइन करने के लिए क्षेत्र के ज्ञान का लाभ उठाने के महत्व पर बल दिया।

सीबीआरआई में आयोजित कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम हिमाचल प्रदेश के पंचायती राज और ग्रामीण निर्माण विभाग के जूनियर इंजीनियरों (जेई) और तकनीकी सहायकों (टीए) के लिए आयोजित हो रहा है।

इसमें बिलासपुर और किन्नौर जिले शामिल हैं। कार्यक्रम में मुख्य विज्ञानी डा. डीपी कानूनगो ने प्राकृतिक आपदाओं के विनाशकारी प्रभावों और ऐसे जोखिमों को कम करने के लिए आपदा-रोधी संरचनाओं की तत्काल आवश्यकता पर बल दिया। डा. कानूनगो ने निर्माण सामग्री और प्रथाओं की गुणवत्ता सुनिश्चित करने में निजी उद्योगों और ठेकेदारों की

महत्वपूर्ण भूमिका पर भी चर्चा की। मुख्य विज्ञानी एसके नेगी ने जोर दिया कि निर्माण में सुरक्षा सबसे महत्वपूर्ण मानदंड है। उन्होंने कहा कि निर्माण में सुरक्षा भूवैज्ञानिक कारकों से गहराई से जुड़ी हुई है। जो प्राकृतिक आपदाओं के खिलाफ लचीलापन और सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण की आवश्यकता को रेखांकित करती है।

रफ़्तार कर दिया।

## दिल्ली में हवाई अड्डे की इमारतों की संरचनात्मक स्थिरता जांचेगी सीबीआरआई

रुड़की। केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान ने नागरिक उड्डयन मंत्रालय के सहयोग से एएआई ऑफिसर्स इंस्टीट्यूट, नई दिल्ली में हवाई अड्डे की इमारतों और बुनियादी ढांचे की संरचनात्मक स्थिरता पर एक कार्यशाला आयोजित की। कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि एएआई के अध्यक्ष विपिन कुमार तथा नागरिक उड्डयन मंत्रालय के सचिव वी वुलानम ने किया।

सीबीआरआई के निदेशक प्रो. आर प्रदीप कुमार ने हवाई अड्डे के बुनियादी ढांचे में संरचनात्मक सुरक्षा के महत्व पर जोर दिया। मुख्य वैज्ञानिक डॉ. अजय चौरसिया ने मौजूदा हवाई अड्डे की इमारतों में आम दोषों पर एक विस्तृत प्रस्तुति दी और सुधार और सुधार के लिए व्यावहारिक समाधान प्रदान किए। इस अवसर पर नागरिक उड्डयन मंत्रालय की संयुक्त सचिव रुबीना अली सहित संस्थान के वैज्ञानिक उपस्थित रहे।

## हवाई अड्डों के बुनियादी ढांचे में संरचनात्मक सुरक्षा के महत्व पर चर्चा

जागरण संवाददाता, रुड़की : केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) रुड़की ने नागरिक उड्डयन मंत्रालय (एमओसीए) के सहयोग से एएआई ऑफिसर्स इंस्टीट्यूट, नई दिल्ली में हवाई अड्डे की इमारतों और बुनियादी ढांचे की संरचनात्मक स्थिरता विषय पर कार्यशाला आयोजित की। इस दौरान विशेषज्ञों और हवाई अड्डा संचालकों के बीच संवादात्मक सत्र भी आयोजित किया गया।

कार्यशाला का उद्घाटन नागरिक उड्डयन मंत्रालय के सचिव वी वुलनम ने किया। इस मौके पर सचिव वी वुलनम ने कार्यशाला आयोजित करने और सुरक्षित एवं लचीले हवाई अड्डे के बुनियादी ढांचे के निर्माण और रखरखाव में नागरिक उड्डयन मंत्रालय का समर्थन करने के लिए सीबीआरआई का आभार व्यक्त किया। उन्होंने जोर दिया कि इस तरह के विचार-विमर्श सत्र समय-समय पर आयोजित किए जाने चाहिए। वहीं कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण के अध्यक्ष विपिन कुमार उपस्थित रहे। उन्होंने कहा कि कार्यशाला हवाई अड्डे के संचालकों के लिए परिचालन और संरचनात्मक

चुनौतियों का समाधान करने में अत्यधिक लाभकारी होगी। नागरिक उड्डयन मंत्रालय की संयुक्त सचिव रुबीना अली ने इस बात पर जोर दिया कि सुरक्षा न केवल अनिवार्य है, बल्कि टिकाऊ बुनियादी ढांचे के लिए एक पूर्व शर्त है। सीबीआरआई रुड़की के निदेशक प्रो. आर प्रदीप कुमार ने हवाई अड्डे के बुनियादी ढांचे में संरचनात्मक सुरक्षा के महत्व पर बल दिया। मुख्य विज्ञानी डा. अजय चौरसिया ने मौजूदा हवाई अड्डे की इमारतों में आम दोषों पर विस्तृत प्रस्तुति दी। साथ ही सुधार के लिए व्यावहारिक समाधान प्रदान किए। इसके नेगी, डा. डीपी. कानूनगो, डा. किशोर कुलकर्णी, डा. आशीष कपूर, डा. प्रशांत, अनूप कुमार और डा. निर्मल ने टिकाऊ व लचीले हवाई अड्डे के बुनियादी ढांचे के लिए रेट्रोफिटिंग रणनीतियों और आधुनिकीकरण दृष्टिकोणों पर चर्चा की। कार्यशाला का समापन विशेषज्ञों और हवाई अड्डा संचालकों के बीच संवादात्मक सत्रों के साथ हुआ। जिससे विमानन बुनियादी ढांचे में सुरक्षा और स्थिरता के वैश्विक मानकों को प्राप्त करने के लिए नागरिक उड्डयन मंत्रालय और सीबीआरआई के बीच साझेदारी मजबूत हुई।

## Jigyasa Activity at January 23<sup>rd</sup>, 2025

10 दैनिक जागरण देहरादून/हरिद्वार, 23 जनवरी, 2025

**रुड़की ज**

# भोजन, कपड़ा, मकान, वैज्ञानिक व तकनीकी प्रगति बढ़ाने में निभाते हैं अहम भूमिका

## केवि रायवाला के छात्रों ने सीबीआरआइ में आयोजित कार्यक्रम में किया प्रतिभाग

जागरण संबद्धता, रुड़की : केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआइ) रुड़की में जिज्ञासा 2.0 पहल के तहत आयोजित कार्यक्रम में मुख्य विज्ञानी नदीम अहमद ने कहा कि भोजन, कपड़ा और मकान वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। बताया कि संस्थान ऊर्जा-कुशल, टिकाऊ और किसानप्री प्रौद्योगिकियों के विकास के लिए प्रतिबद्ध है। जो राष्ट्र को लाभांशित करती है। वर्ष 1942 में स्थापित सीएसआईआर-सीबीआरआइ भवन विज्ञान के क्षेत्र में अग्रणी रहा है और भारत के प्रमुख अनुसंधान संस्थानों में से एक बनने की दिशा में निरंतर कार्य कर रहा है। कार्यक्रम में पीएम श्री केवि, रायवाला के 220 छात्रों और छह शिक्षकों ने भाग लिया।

बुधवार को संस्थान में विज्ञानी-छात्र कनेक्ट कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य विज्ञानी संगठनों और शैक्षिक संस्थानों के बीच सहयोग को बढ़ावा देना है। ताकि छात्रों में जिज्ञासा को बढ़ाया जा सके और वैज्ञानिक सोच को

केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की में जिज्ञासा 2.0 पहल के तहत विज्ञानी-छात्र कनेक्ट कार्यक्रम में पीएम श्री केवि, रायवाला के छात्रों और शिक्षकों ने भाग लिया • ख़ास: संस्थान

प्रोत्साहित किया जा सके। कार्यक्रम के उद्घाटन में मुख्य विज्ञानी नदीम अहमद ने जिज्ञासा परियोजना के उद्देश्य और लक्ष्यों पर चर्चा की। अगले सत्र में प्रधान विज्ञानी डा. सीमित्र मैती ने "वेस्ट टू केच" विषय पर व्याख्यान दिया। बताया कि किस तरह से अपशिष्ट पदार्थों को मूल्यवान संसाधनों में बदलने के लिए नवाचार रणनीतियों को अपनया जा सकता है। उन्होंने टिकाऊ विकास और पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए परिपत्र

अर्थव्यवस्था के महात्व पर जोर दिया। जहां कचरे को ब्योत्र के बजाय संसाधन के रूप में देखा जाता है। वीरिष्ठ विज्ञानी डा. तबिसा अहम ने "जनजातीय गौरव वर्ष 2024-25" पर व्याख्यान देते हुए इसके महात्व, उद्देश्य, इतिहास, सांस्कृतिक विरासत और भारत की प्रगति में जनजातीय समुदायों के योगदान के बारे में जानकारी दी। उन्होंने छात्रों को उन नानकों की सराहना करने के लिए प्रेरित किया जिन्होंने बाधाओं को पार

कर समाज को आकार दिया। इसके बाद छात्रों ने प्रदर्शनी गैलरी का दौरा किया। जहां डा. नवीन निशान और डा. हेमलता ने अनुसंधान और विकास के विभिन्न क्षेत्रों में चल रहे कार्यों की जानकारी दी। परिचयनाओं में अग्नि परीक्षण सुविधाएं, अग्निरोधक बैटल ऊर्जा-कुशल प्रयोगशाला, बॉम-कालम परीक्षण और राम भंडार के संरचनात्मक और नॉन डिजाइन शामिल थे।

नवीनी निताह में टोंपती



## Foundation Stone Laid for Model Resilient Village in Sil/Sunani, Himachal Pradesh

### CSIR Technologies to Contribute to Infrastructure like Shelters, Roads, Drinking Water Systems in the Model Village

Posted On: 20 JAN 2025 7:29PM by PIB Delhi

In a significant step toward rebuilding and strengthening resilience in disaster-affected areas, the foundation stone for a Model Resilient Village was laid on January 20, 2025, at Sil/Sunani in Bawansi Gram Panchayat, Baddi, District Solan, Himachal Pradesh. This initiative follows the devastating cloudburst-induced landslide that struck the region on August 14, 2023, causing extensive loss of property and livelihoods.

The project, a collaborative effort by the Council of Scientific and Industrial Research (CSIR), the Government of Himachal Pradesh, Bal Raksha Bharat, and Zee Entertainment, aims to redevelop the village and prepare it for future resilience through a comprehensive redevelopment plan. The initiative focuses on creating essential infrastructure such as housing, schools, anganwadis, healthcare facilities, community centres, and support systems for livelihoods and agriculture.



Dr. (Mrs.) N. Kalaiselvi, Secretary, DSIR, and Director General, CSIR, was the Chief Guest for the occasion, while Shri Ram Kumar Chaudhary, Member of Legislative Assembly, graced the event as the Guest of Honour. Key dignitaries, including Prof. R. Pradeep Kumar, Director, CSIR-CBRI; Shri Avinash Singh, Bal Raksha Bharat; Ms. Shalini Kotiya, Zee Entertainment; Shri Manmohan Sharma, Deputy Commissioner, Solan; Shri Vinod Kumar Dhiman, Superintendent of Police, Baddi; and Shri Vivek Mahajan, Sub-Divisional Magistrate, Baddi, participated in the event. Directors of CSIR-CSIO and CSIR-IMTECH, Prof. Shantanu Bhattacharya and Dr. Sanjeev Khosla, respectively, were also present.

Dr. (Mrs.) N. Kalaiselvi, Secretary, DSIR, and Director General, CSIR, was the Chief Guest for the occasion, while Shri Ram Kumar Chaudhary, Member of Legislative Assembly, graced the event as the Guest of Honour. Key dignitaries, including Prof. R. Pradeep Kumar, Director, CSIR-CBRI; Shri Avinash Singh, Bal Raksha Bharat; Ms. Shalini Kotiya, Zee Entertainment; Shri Manmohan Sharma, Deputy Commissioner, Solan; Shri Vinod Kumar Dhiman, Superintendent of Police, Baddi; and Shri Vivek Mahajan, Sub-Divisional Magistrate, Baddi, participated in the event. Directors of CSIR-CSIO and CSIR-IMTECH, Prof. Shantanu Bhattacharya and Dr. Sanjeev Khosla, respectively, were also present.

Dr. Kalaiselvi highlighted the initiative's transformative vision to uplift rural living standards by improving infrastructure, education, and healthcare facilities. She reiterated CSIR's commitment to providing technical expertise and knowledge support for similar projects across the country.

Prof. R. Pradeep Kumar, Director, CSIR-CBRI, detailed CSIR's technical contributions, including designing infrastructure like shelters, roads, drinking water systems, sanitation facilities, a health center, and a community hall.

An exhibition showcasing resilient, site-specific construction technologies for buildings and livelihoods, based on extensive post-disaster research, was a key highlight of the event. Visitors commended the innovations and the forward-looking habitat planning and design.

Dignitaries interacted with local residents, including women and children, to understand the specific needs of the community. Local administration representatives pledged continued support to ensure the success of the initiative.

The event witnessed enthusiastic participation from local residents and panchayat members, who described the program as a historic step toward rural development and disaster preparedness.

This collaborative endeavour is a testament to the Government of India's commitment to transforming disaster-hit areas into resilient communities, ensuring sustainable development and improved quality of life for its citizens.

सुनाता अस्तित्व और पाटा का पाटा का हर कायकला थावा क कर् वाहट पदापका, स चया का गड

## बेहतर एवं गुणवत्तायुक्त स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करना सरकार का लक्ष्य - राम कुमार चौधरी

बढ़ी 20 जनवरी सनीश जैन दुन के विधायक राम कुमार चौधरी ने कहा कि प्रदेश सरकार पूरे राज्य के साथ-साथ दुन विधानसभा क्षेत्र में लोगों को और बेहतर एवं गुणवत्तायुक्त स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने के लिए दृढ़ संकल्प है। राम कुमार चौधरी आज नगरिक अस्पताल बही के विद्यार्थीकरण तथा नर्स ओ.पी.डी. निर्माण का भूमि पूजन करने के उपरान्त जनसभा को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि इस कार्य पर 1.72 करोड़ रुपए खर्च किए जाएंगे। राम कुमार चौधरी ने कहा कि और ही नगरिक अस्पताल बही को 100 बिस्तरों के अस्पताल के रूप में सरोजित किया जाएगा ताकि क्षेत्रवासियों को एक ही स्थान पर बेहतर इंडोर एवं आउटडोर सुविधाएं प्राप्त हो सकें। उन्होंने कहा कि नगरिक अस्पताल बही में रोगियों के लिए



सभी प्रकार की और बेहतर सुविधाएं उपलब्ध करवाना उनकी प्राथमिकता है। विधायक ने कहा

कि इस कार्य के लिए बजट को कमी नहीं आने दी जाएगी। उन्होंने कहा कि नगरिक अस्पताल बही

के विद्यार्थीकरण से बढ़ी सलित 18 ग्राम पंचायतों के निवासियों सलित क्षेत्र के उद्योगों में कार्यरत श्रमिक बही संख्या में लाभांशित होंगे। उन्होंने कहा कि बही उपमण्डल में खण्ड चिकित्सा अधिकारी कार्यालय ने कार्य करना आरम्भ कर दिया है और इसके साथ क्षेत्र के चरमस्थ रोगियों को सम्बद्ध किया गया है ताकि लोगों को ससयता का सामना न करना पड़े इस अवसर पर नगर परिषद बही एवं अध्यक्ष महन लाल चौधरी, हरसेम चौधरी, नगर परिषद बही के अध्यक्ष सुरजोत चौधरी, उपमण्डलाधिकारी बही विवेक महाजन, खण्ड चिकित्सा अधिकारी बही योगेश गुप्त, लोक निर्माण विभाग के अधिकारी अधिपता परचरसर सिंह तथा विभिन्न विभागों के अधिकारी, अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।



# राजभाषा के प्रयोग को बढ़ावा देना ही कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य

## ■ सीबीआरआई ने किया हिंदी पर कार्यशाला का आयोजन

रुड़की, 9 जनवरी (अनिल) : सीएसआईआर केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) में स्थित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य कार्यालयों के लिए हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का उद्देश्य राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देना और संस्थान के कर्मचारियों को हिंदी के अधिकाधिक उपयोग के लिए प्रेरित करना था।

कार्यशाला का शुभारंभ करते हुए संस्थान के निदेशक प्रो. आर प्रदीप कुमार ने कहा कि हिंदी न केवल हमारी राजभाषा है, बल्कि हमारी सांस्कृतिक धरोहर भी है। विशेषज्ञ वक्ता नराकास

के सचिव पंकज शर्मा ने कार्यालयी कार्यों में हिंदी का महत्व, भारत सरकार की राजभाषा नीति, आधुनिक हिंदी टूल्स का उपयोग जैसे विषयों पर व्याख्यान दिए।

वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी मेहर सिंह ने राजभाषा कार्यान्वयन के महत्वपूर्ण बिन्दुओं की जानकारी दी। कार्यशाला में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के 20 से अधिक प्रतिभागी शामिल हुए। कार्यशाला का संयोजन वरिष्ठ हिंदी अधिकारी मेहर सिंह ने किया। इस अवसर पर संस्थान के मुख्य वैज्ञानिक एसके नेगी, डा. पीसी थपलियाल, डा. ताबिश आलम, मोहम्मद रियाजुर रहमान, डा. वीणा चौधरी, दिनेश कुमार, भावना, सुगम कुमार, हिमांशु शर्मा तथा प्रदीप कुमार आदि उपस्थित रहे।





HOME संपादकीय उत्तराखंड हेल्थ संस्कृति दुनिया धार्मिक वीडियो ज्योतिष अपराध राजनी

उत्तराखंड

संपादकीय

## Roorkee News...जिज्ञासा 2.0 पहल के तहत एक छात्र-वैज्ञानिक संपर्क कार्यक्रम | Click कर पढ़िये पूरी News

December 26, 2024 Malkhit rauthan 0 Comments #citylive today media house, #roorkee news, #roorkee-news-haridwar

सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई), रुड़की ने जिज्ञासा 2.0 पहल के तहत एक छात्र-वैज्ञानिक संपर्क कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसमें राजकीय बालिका इंटर कॉलेज, सेक्टर-51, नोएडा के लगभग 50 छात्रों और 7 शिक्षकों का स्वागत किया गया। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. हेमलता और डॉ. चंदन स्वरूप मीना ने छात्रों और उनके शिक्षकों का अभिवादन किया, जिससे एक प्रेरक शैक्षिक यात्रा की शुरुआत हुई। कार्यक्रम के हिस्से के रूप में, छात्रों ने प्रदर्शनी गैलरी का दौरा किया,



जहाँ वैज्ञानिकों और समन्वयकों ने सीबीआरआई द्वारा विकसित विभिन्न आवास प्रौद्योगिकियों के बारे में जानकारी प्रदान की। डॉ. चंदन ने भारत भर में सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के व्यापक नेटवर्क पर प्रकाश डाला, विज्ञान और प्रौद्योगिकी में सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की की विशेषज्ञता पर जोर दिया। छात्रों ने कोविड-19 महामारी के दौरान विकसित



सीबीआरआई की अभिनव वायु शोधन प्रणालियों और प्रधानमंत्री ग्रामीण आवास योजना (पीएमएवाई-जी) के तहत टिकाऊ आवास में इसके महत्वपूर्ण योगदान के बारे में भी जाना। कार्यक्रम में इन प्रौद्योगिकियों और उनके व्यावहारिक अनुप्रयोगों के पीछे के वैज्ञानिक सिद्धांतों पर प्रकाश डाला गया, जिससे छात्रों को अनुसंधान और नवाचार के प्रभाव की सराहना करने के लिए प्रेरित किया गया। छात्रों और स्टाफ सदस्यों ने इस अद्भुत और शैक्षिक दौरे के आयोजन के लिए सीबीआरआई रुड़की के प्रति आभार व्यक्त किया।

Visit of School Students at CSIR- CBRI under Jigyasa 2.0  
and  
Janjatiya Gaurav Varsh Lecture on 18<sup>th</sup> December, 2024

## सीबीआरआई में छात्र-वैज्ञानिक संवाद में जुटे छात्र



### » मदरलैंड संवाददाता

रुड़की। सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की ने जिज्ञासा 2.0 के तहत छात्र-वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया। इसमें के.बी. मेरठ कैंट और के.बी. मुरादनगर के लगभग 350 छात्र-छात्राओं एवं 20 अध्यापकों ने सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की का शैक्षिक भ्रमण किया। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. चंदन स्वरूप मीना, डॉ. ताबिश आलम और डॉ. हेमलता ने छात्रों और उनके शिक्षकों का स्वागत किया। कार्यक्रम के दौरान छात्रों ने प्रदर्शनी गैलरी और ग्रामीण प्रौद्योगिकी पार्क का दौरा किया। जहाँ वैज्ञानिकों और समन्वयकों ने

सीबीआरआई द्वारा विकसित विभिन्न आवास प्रौद्योगिकियों का अवलोकन प्रदान किया। इनमें सौर जल तापन प्रणाली, दो-गड्डे वाली स्वच्छता प्रणाली, ऊर्जी-कुशल ग्रामीण आवास, नवीन छत तकनीक और ग्रामीण क्षेत्रों में आमतौर पर उपयोग की जाने वाली जल निस्पंदन प्रणाली शामिल रही।

स्पष्टीकरण में इन प्रौद्योगिकियों के पीछे के वैज्ञानिक सिद्धांतों और दैनिक जीवन में उनके व्यावहारिक अनुप्रयोगों को शामिल किया गया। यात्रा के दौरान जिन उल्लेखनीय परियोजनाओं पर प्रकाश डाला गया, उनमें राम मंदिर का निर्माण, एक प्रतिष्ठित वास्तुशिल्प उपलब्ध और सुपरटेक दिवन टावर्स का निर्गमित

विध्वंस शामिल था, जो आधुनिक इंजीनियरिंग में एक उल्लेखनीय उपलब्धि थी। इसके अलावा उन्होंने अपनी यात्रा के दौरान एपीईई विभाग एनजी बिल्डिंग को प्रयोगशाला का भी अवलोकन किया। ताबिश आलम ने सीएसआईआर-सीबीआरआई की स्थापना और योगदान पर व्याख्यान दिया। उन्होंने सीबीआरआई में जनजातीय गौरव वर्ष 2024-2025 समारोह के बारे में बहुमूल्य जानकारी भी साझा की तथा बिरसा मुंडा जैसे आदिवासी नावकों के महत्वपूर्ण योगदान पर जोर दिया। छात्रों और स्टाफ सदस्यों ने इस अद्भुत और शैक्षिक दौरे के आयोजन के लिए सीबीआरआई रुड़की के प्रति आभार व्यक्त किया।

## सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की ने जिज्ञासा 2.0 के तहत एक छात्र-वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम का किया आयोजन

### ३५० छात्र-छात्राओं एवं २० अध्यापकों ने सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की का शैक्षिक भ्रमण किया

रुड़की ( दैनिक हाक ) : सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की ने जिज्ञासा 2.0 के तहत एक छात्र-वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम में पीएम श्री केंद्रीय के.बी. मेरठ कैंट और के.बी. मुरादनगर के लगभग 350 छात्र-छात्राओं एवं 20 अध्यापकों ने सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की का शैक्षिक भ्रमण किया।

वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. चंदन स्वरूप मीना, डॉ. ताबिश आलम और डॉ. हेमलता ने छात्रों और उनके शिक्षकों का स्वागत किया। कार्यक्रम के दौरान छात्रों ने प्रदर्शनी गैलरी और ग्रामीण

प्रौद्योगिकी पार्क का दौरा किया,



जहाँ वैज्ञानिकों और समन्वयकों ने सीबीआरआई द्वारा विकसित विभिन्न आवास प्रौद्योगिकियों का अवलोकन प्रदान किया। इनमें सौर जल तापन प्रणाली, दो-गड्डे वाली स्वच्छता प्रणाली, ऊर्जी-कुशल ग्रामीण आवास, नवीन छत तकनीक और

ग्रामीण क्षेत्रों में आमतौर पर उपयोग की जाने वाली जल निस्पंदन प्रणाली शामिल थी। स्पष्टीकरण में इन प्रौद्योगिकियों के पीछे के वैज्ञानिक सिद्धांतों और दैनिक जीवन में उनके व्यावहारिक अनुप्रयोगों को शामिल किया गया। यात्रा के दौरान जिन

उल्लेखनीय परियोजनाओं पर प्रकाश डाला गया, उनमें राम मंदिर का निर्माण, एक प्रतिष्ठित वास्तुशिल्प उपलब्ध और सुपरटेक दिवन टावर्स का निर्गमित विध्वंस शामिल था, जो आधुनिक इंजीनियरिंग में एक उल्लेखनीय उपलब्धि थी। इसके अलावा उन्होंने अपनी यात्रा के दौरान एपीईई विभाग एनजी बिल्डिंग को प्रयोगशाला का भी अवलोकन किया। ताबिश

आलम ने सीएसआईआर-सीबीआरआई की स्थापना और योगदान पर व्याख्यान दिया। उन्होंने सीबीआरआई में जनजातीय गौरव वर्ष 2024-2025 समारोह के बारे में बहुमूल्य जानकारी भी साझा की, तथा बिरसा मुंडा जैसे आदिवासी नावकों के महत्वपूर्ण योगदान पर जोर दिया। छात्रों और स्टाफ सदस्यों ने इस अद्भुत और शैक्षिक दौरे के आयोजन के लिए

## सीबीआरआई में छात्र-वैज्ञानिक संवाद में जुटे छात्र



### » मदरलैंड संवाददाता

रुड़की। सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की ने जिज्ञासा 2.0 के तहत छात्र-वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया। इसमें के.बी. मेरठ कैंट और के.बी. मुरादनगर के लगभग 350 छात्र-छात्राओं एवं 20 अध्यापकों ने सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की का शैक्षिक भ्रमण किया। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. चंदन स्वरूप मीना, डॉ. ताबिश आलम और डॉ. हेमलता ने छात्रों और उनके शिक्षकों का स्वागत किया। कार्यक्रम के दौरान छात्रों ने प्रदर्शनी गैलरी और ग्रामीण प्रौद्योगिकी पार्क का दौरा किया। जहाँ वैज्ञानिकों और समन्वयकों ने

सीबीआरआई द्वारा विकसित विभिन्न आवास प्रौद्योगिकियों का अवलोकन प्रदान किया। इनमें सौर जल तापन प्रणाली, दो-गड्डे वाली स्वच्छता प्रणाली, ऊर्जी-कुशल ग्रामीण आवास, नवीन छत तकनीक और ग्रामीण क्षेत्रों में आमतौर पर उपयोग की जाने वाली जल निस्पंदन प्रणाली शामिल रही।

स्पष्टीकरण में इन प्रौद्योगिकियों के पीछे के वैज्ञानिक सिद्धांतों और दैनिक जीवन में उनके व्यावहारिक अनुप्रयोगों को शामिल किया गया। यात्रा के दौरान जिन उल्लेखनीय परियोजनाओं पर प्रकाश डाला गया, उनमें राम मंदिर का निर्माण, एक प्रतिष्ठित वास्तुशिल्प उपलब्ध और सुपरटेक दिवन टावर्स का निर्गमित

विध्वंस शामिल था, जो आधुनिक इंजीनियरिंग में एक उल्लेखनीय उपलब्धि थी। इसके अलावा उन्होंने अपनी यात्रा के दौरान एपीईई विभाग एनजी बिल्डिंग को प्रयोगशाला का भी अवलोकन किया। ताबिश आलम ने सीएसआईआर-सीबीआरआई की स्थापना और योगदान पर व्याख्यान दिया। उन्होंने सीबीआरआई में जनजातीय गौरव वर्ष 2024-2025 समारोह के बारे में बहुमूल्य जानकारी भी साझा की तथा बिरसा मुंडा जैसे आदिवासी नावकों के महत्वपूर्ण योगदान पर जोर दिया। छात्रों और स्टाफ सदस्यों ने इस अद्भुत और शैक्षिक दौरे के आयोजन के लिए सीबीआरआई रुड़की के प्रति आभार व्यक्त किया।

Visit of School Students at CSIR- CBRI under Jigyasa 2.0  
and  
Janjatiya Gaurav Varsh Lecture on 18<sup>th</sup> December, 2024

## छात्र-वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम का आयोजन

स्वतंत्र वेतना रुड़की। सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की ने जिज्ञासा 2.0 के तहत एक छात्र-वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम में पीएम श्री केंद्रीय केवी, डील, मेरठ कैंट और पीएम श्री केंद्रीय केवी, मुरादनगर के लगभग 350 छात्र-छात्राओं एवं 20 अध्यापकों ने सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की का शैक्षिक भ्रमण किया।

वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. चंदन स्वरूप मीना, डॉ. ताबिश आलम और डॉ. हेमलता ने छात्रों और उनके शिक्षकों का स्वागत किया। कार्यक्रम के दौरान छात्रों ने प्रदर्शनी गैलरी और ग्रामीण प्रौद्योगिकी पार्क का दौरा किया, जहाँ वैज्ञानिकों और समन्वयकों ने सीबीआरआई द्वारा विकसित विभिन्न आवास प्रौद्योगिकियों का अवलोकन प्रदान किया। इनमें सौर जल तापन प्रणाली, दो-गड्ढे वाली स्वच्छता प्रणाली, ऊर्जा-कुशल ग्रामीण



आवास, नवीन छत तकनीक और ग्रामीण क्षेत्रों में आमतौर पर उपयोग की जाने वाली जल निस्पंदन प्रणाली शामिल थी। स्पष्टीकरण में इन प्रौद्योगिकियों के पीछे के वैज्ञानिक सिद्धांतों और दैनिक जीवन में उनके व्यावहारिक अनुप्रयोगों को शामिल किया गया। यात्रा के दौरान जिन उल्लेखनीय परियोजनाओं पर प्रकाश डाला गया, उनमें राम मंदिर का निर्माण, एक प्रतिष्ठित वास्तुशिल्प उपलब्धि और सुपरटेक टि्वन टावर्स का नियंत्रित विध्वंस शामिल था, जो आधुनिक इंजीनियरिंग में एक उल्लेखनीय उपलब्धि थी। इसके अलावा, उन्होंने अपनी यात्रा

के दौरान एपीआई विभाग एनर्जी बिल्डिंग की प्रयोगशाला का भी अवलोकन किया। ताबिश आलम ने सीएसआईआर-सीबीआरआई की स्थापना और योगदान पर व्याख्यान दिया। उन्होंने सीबीआरआई में जनजातीय गौरव वर्ष 2024-2025 समारोह के बारे में बहुमूल्य जानकारी भी साझा की तथा बिरसा मुंडा जैसे आदिवासी नायकों के महत्वपूर्ण योगदान पर जोर दिया। छात्रों और स्टाफ सदस्यों ने इस अद्भुत और शैक्षिक दौरे के आयोजन के लिए सीबीआरआई रुड़की के प्रति आभार व्यक्त किया।

## शैक्षिक भ्रमण में छात्र वैज्ञानिक संवाद का उठाया लाभ

■ कार्यक्रम में 350 छात्र-छात्राओं एवं 20 अध्यापकों ने संस्थान का किया शैक्षिक भ्रमण

रुड़की (एसएनबी)। सीबीआरआई, रुड़की ने जिज्ञासा 2.0 के तहत एक छात्र-वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम में पीएम श्री केंद्रीय केवीडील मेरठ कैंट और पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय मुरादनगर के लगभग 350 छात्र-छात्राओं एवं 20 अध्यापकों ने संस्थान का शैक्षिक भ्रमण किया।

वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. चंदन स्वरूप मीना, डॉ. ताबिश आलम और डॉ. हेमलता ने छात्रों और उनके शिक्षकों का स्वागत किया। कार्यक्रम के दौरान, छात्रों ने प्रदर्शनी गैलरी और ग्रामीण प्रौद्योगिकी पार्क का दौरा किया, जहाँ वैज्ञानिकों और समन्वयकों ने सीबीआरआई द्वारा विकसित विभिन्न आवास प्रौद्योगिकियों का अवलोकन प्रदान किया। इनमें सौर जल तापन प्रणाली, दो-गड्ढे वाली स्वच्छता प्रणाली, ऊर्जा-कुशल ग्रामीण आवास, नवीन छत तकनीक और ग्रामीण क्षेत्रों में आमतौर पर उपयोग की जाने वाली जल निस्पंदन प्रणाली शामिल थी। स्पष्टीकरण



रुड़की : विद्यार्थियों को सम्बोधित करते सीबीआरआई के वैज्ञानिक।

में इन प्रौद्योगिकियों के पीछे के वैज्ञानिक सिद्धांतों और दैनिक जीवन में उनके व्यावहारिक अनुप्रयोगों को शामिल किया गया। यात्रा के दौरान जिन उल्लेखनीय परियोजनाओं पर प्रकाश डाला गया, उनमें राम मंदिर का निर्माण, एक प्रतिष्ठित वास्तुशिल्प उपलब्धि और सुपरटेक टि्वन टावर्स का नियंत्रित विध्वंस शामिल था, जो आधुनिक इंजीनियरिंग में एक उल्लेखनीय उपलब्धि थी। इसके अलावा, उन्होंने अपनी यात्रा के दौरान एपीआई विभाग एनर्जी बिल्डिंग की प्रयोगशाला

का भी अवलोकन किया। ताबिश आलम ने सीबीआरआई की स्थापना और योगदान पर व्याख्यान दिया। उन्होंने सीबीआरआई में जनजातीय गौरव वर्ष 2024-2025 समारोह के बारे में बहुमूल्य जानकारी भी साझा की तथा बिरसा मुंडा जैसे आदिवासी नायकों के महत्वपूर्ण योगदान पर प्रकाश डाला। छात्रों और स्टाफ सदस्यों ने इस अद्भुत और शैक्षिक दौरे के आयोजन के लिए सीबीआरआई रुड़की के प्रति आभार व्यक्त किया।

**Visit of School Students at CSIR- CBRI under Jigyasa 2.0 and Janjatiya Gaurav Varsha  
Lecture on 11<sup>th</sup> December, 2024**

सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की ने जिज्ञासा 2.0 के तहत एक छात्र-वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम का किया आयोजन

भी बहुत सीमा अंतरों में  
 परिवर्तित हो सकती है। जो कर्मचारी  
 को मारता भी हो सकता है। इस  
 आकांक्षे प्रकृति में, किसी का  
 जीवन, सम्पत्ति और पैसा, या  
 कोई वस्तु, और जीवन की  
 सभी चीजें व्यर्थ हो सकती  
 हैं। इससे और डराने का प्रयास  
 करना क्या? सभी को समझना  
 है कि आकांक्षी चीजें सब  
 2014-2022 कर्मचारी को सब में  
 व्यर्थ हो सकती हैं। जो सब में,  
 सब फिर सब की आकांक्षी  
 प्रकृति को ध्यानपूर्वक समझना  
 को फिर। जो सब का प्रयास  
 किसी को सब में सब प्रकृति  
 प्रकृति प्रकृति में सब प्रकृति,  
 किसी प्रकृति प्रकृति प्रकृति और  
 प्रकृति प्रकृति में सब प्रकृति  
 प्रकृति प्रकृति प्रकृति



**Roorkee: सीएसआईआर-सीबीआरआई द्वारा छात्र-वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम का आयोजन**

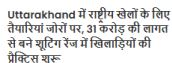
0 82 1 minute read



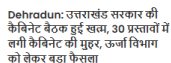
**रड़की।** सीएसआईआर-सीबीआरआई ने जिज्ञासा 2.0 के तहत एक छात्र-वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम में राजकीय इंटर कॉलेज, बीएचएल, हरिद्वार के लगभग 102 छात्रों और 10 शिक्षकों ने सक्रिय भागीदारी की। प्रतिभागियों का स्वागत मुख्य वैज्ञानिक और ओडीएसओ के प्रमुख नदीम अहमद ने वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. वंदन स्वरूप मीना, डॉ. हेमलता और डॉ. ताविश आलम के साथ किया।

कार्यक्रम के दौरान, छात्रों ने **प्रदर्शनी** गैलरी का दौरा किया, जहाँ वैज्ञानिकों और स्टाफ समन्वयकों ने उन्हें विभिन्न विषयों पर गहन जानकारी प्रदान की। श्री नदीम अहमद ने सीएसआईआर- सीबीआरआई की स्थापना और योगदान पर एक आकर्षक प्रस्तुति दी, जिसमें भवन विज्ञान, वास्तुकला और योजना, ऊर्जा दक्षता, और अधिक सहित इसके विविध अनुसंधान एवं विकास प्रयासों और प्रभागों पर प्रकाश डाला गया।

### Related Articles



🕒 18 hours ago



🕒 18 hours ago

उन्होंने सीबीआरआई में जनजातीय गौरव वर्ष 2024-2025 समारोह के बारे में बहुमूल्य जानकारी भी साझा की, तथा बिरसा मुंडा जैसे आदिवासी नायकों के महत्वपूर्ण योगदान पर जोर दिया। इस यात्रा का समापन शिक्षकों और छात्रों द्वारा हार्दिक धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ, जिसमें उन्होंने प्रेरणादायक और शैक्षिक अनुभव के लिए अपना आभार व्यक्त किया।



Roorkee: सीएसआईआर-सीबीआरआई द्वारा छात्र-वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम का आयोजन - Nazariya...

NAZARIYA 🗨️ NEWS ...✍️✍️✍️

Roorkee: सीएसआईआर-सीबीआरआई द्वारा छात्र-वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम का आयोजन

देखें पूरी खबर। इस लिंक पर क्लिक करें।



<https://www.nazariyanews.com/16222/>

फेसबुक पर जूझें -\*

FOLLOW US

<https://www.facebook.com/nazariyanewsindia/>

व्हाट्सऐप ग्रुप पर जडें -

<https://chat.whatsapp.com/IIQCIG3B1X93PDYv6JxRff>

खबर 📺 एवं विज्ञापन 📢 के लिए संपर्क करें-----

9368932200, 9927328328

08:22

# Brainstorming "Climate Change Impacts on Mountain Hazards with Special Reference to Rock Ice Avalanches, Debris & GLOF" (CCMH) on 27 Nov 2024 at IHC New Delhi

8 हरिवार: दैनिक हाक, बृहस्पतिवार, 28 नवम्बर 2024

रुड़की

## सीएसआईआर-सीबीआरआई ने एक दिवसीय विचार-मंथन कार्यशाला का किया आयोजन

कार्यशाला का उद्देश्य भारतीय हिमालय में हिमस्खलन, जीएलओएफ और भूस्खलन के उभरते मुद्दों का मूल्यांकन और चर्चा करना है

रुड़की (दैनिक हाक) : सीएसआईआर-सीबीआरआई ने भारतीय हिमालय में हिमस्खलन, जीएलओएफ और भूस्खलन के उभरते मुद्दों का मूल्यांकन और चर्चा करना है।



हिमालय में हिमस्खलन, जीएलओएफ और भूस्खलन के उभरते मुद्दों का मूल्यांकन और चर्चा करना है।

## CSIR-CBRI, Roorkee Organised A One-Day Brainstorming Workshop



Roorkee (The Hawk): CSIR-CBRI, Roorkee organised a one-day brainstorming workshop on "Towards Developing a National Plan for Climate Change Impacts on Avalanches, GLOFs, and Landslides" at Indian Habitat Centre, New Delhi on 27th November 2024. The aim of this workshop is to appraise and discuss the emerging issues of avalanches, GLOFs and landslides in Indian Himalayas. The workshop is intended to address the proposal and initiative of CSIR-CBRI in order to draw attention to the need for increased funding for research and development, capacity building, specialized organizations and institutions on mountain hazards, and national and international collaboration to address such emerging issues. The brainstorming workshop has been inaugurated in the gracious presence of the Chief

encourages for considering holistic approach to deal with such hazards and establish collaboration with National and International agencies for effective disaster control. He recommended the following to the gathering for better risk management, including monitoring and early warning, hazard zonation, application of Radar technology, engineering solutions for vulnerable slopes, ecological and environmental management, engage local community and social education, policy making, and finally research and innovation. At S.K. Negi (Chief Scientist and Chair, organising committee) gives the vote of thanks after the inaugural session. Dr. Rajesh Kumar Dash was the organising secretary of this event. The workshop conducted successfully in 4 technical sessions, including Monitor and Measure, Quantity and Forecast, Mitigate and Prepare, and a National Plan with national and international experts working in this domain. Prof. R. Pradeep Kumar moderated the Panel discussion after the last session. More than 80 delegates and experts representing organisations/institutions across the country along with scientific and administrative staff members of CSIR-CBRI, Roorkee are present in this brainstorming workshop.

# एक दिवसीय विचार-मंथन कार्यशाला आयोजित

रुड़की बड़ी विशाल

सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की ने बुधवार को भारतीय परिसरों में, नई दिल्ली में 'हिमस्खलन



जीएलओएफ और भूस्खलन पर जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के लिए एक राष्ट्रीय योजना विकसित करने की दिशा में विचार पर एक दिवसीय विचार-मंथन कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यशाला का उद्देश्य भारतीय हिमालय में हिमस्खलन, जीएलओएफ और भूस्खलन के उभरते

मुद्दों का मूल्यांकन और चर्चा करना है। कार्यशाला का उद्देश्य सीएसआईआर-सीबीआरआई के प्रस्ताव और पहल को समर्थित करना है, ताकि अनुसंधान और विकास, क्षमता निर्माण, पर्वतीय खतरों पर विशेष संगठनों और संस्थानों और ऐसे उभरते मुद्दों को संबोधित करने के लिए राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय सहयोग के लिए बड़े हुए विचारों का आवश्यकता पर ध्यान आकर्षित किया जा सके। इस विचार-मंथन कार्यशाला का उद्देश्य मुख्य अतिथि डॉ. एम. रविचंद्रन (सचिव, एमआईएस, भारत सरकार), विशिष्ट अतिथि डॉ. आर. के. भंडारी (पूर्व निदेशक, सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की), प्रो. आर. प्रदीप कुमार (निदेशक, सीएसआईआर-

सीबीआरआई, रुड़की), आर.एस.के. नेगी (अध्यक्ष, आयोजन समिति) और डॉ. डी.पी. कानुनगो (सह-अध्यक्ष, आयोजन समिति) ने संयुक्त रूप से किया। वहीं निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने भाषण के दौरान देश में जलवायु परिवर्तन प्रभावित पर्वतीय खतरों के लिए राष्ट्रीय योजना तैयार करने के महत्व और आवश्यकता पर बात दिया। यदि ऐसी योजनाएं अभी नहीं बनाई गईं, तो भविष्य में आपदा प्रीति जोड़ोपी हरित 2047 तक 8 प्रतिशत से बढ़कर 15 प्रतिशत तक पहुंच सकती है। कार्यक्रम के सह-आयोजक और मुख्य वैज्ञानिक डॉ. डी.पी. कानुनगो ने पर्वतीय खतरों की निगरानी और माॉडलिंग के लिए इनपुट्स/आउटपुट तकनीकी अनुसंधान पर जोर दिया। विशिष्ट अतिथि डॉ. आर. के. भंडारी (पूर्व निदेशक, सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की) ने

प्रभावी आपदा जोखिम न्यूनीकरण के लिए बहु-खतरा ऑकलन और डैमिनेज प्रभाव आधारित तरीकों पर ध्यान केंद्रित किया है। उन्होंने जलवायु परिवर्तन के तहत डेटा-सूचित निर्णय लेने के लिए बिग डेटा, एआई और एमएल की क्षमता पर भी चर्चा की। डॉ. एम. रविचंद्रन, मुख्य अतिथि (सचिव, एमआईएस, भारत सरकार) ने ऐसे पर्वतीय खतरों को बेहतर समझ और भविष्यवाणी के लिए स्पेस-टाइम डुप्लिकेशन पर ध्यान केंद्रित किया। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि चतुर्हो जलवायु परिवर्तन की घटना में इन उच्च पर्वतीय खतरों की आवृत्ति और परिमाण को बढ़ाने की क्षमता है। वह ऐसे खतरों से निपटने के लिए समग्र दुष्टकोण पर विचार करने और प्रभावी आपदा नियंत्रण के लिए राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों के साथ सहयोग स्थापित करने के लिए

प्रोत्साहित करते हैं। धन्यवाद ज्ञापन मुख्य वैज्ञानिक एवं आयोजन समिति के अध्यक्ष डॉ. राजेश कुमार दास ने किया। कार्यशाला में लगभग 4 तकनीकी सत्र हुए, जिसमें माॉनटर एंड मेजर, क्वांटिटी एंड फोरकास्ट, मिगिटे एंड प्रिपेयर और इस क्षेत्र में काम कर रहे राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय विशेषज्ञों के साथ राष्ट्रीय योजना विकसित करने की दिशा में एक फैल चर्चा शामिल थी। अंतिम सत्र के बाद फैल चर्चा का संचालन प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने किया। इस विचार-मंथन कार्यशाला में देश भर के विभिन्न संगठनों/संस्थानों का प्रतिनिधित्व करने वाले 80 से अधिक प्रतिनिधि और विरोध और सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की के वैज्ञानिक, तकनीकी और प्रशासनिक कर्मचारी मौजूद रहे।

## पर्वतीय खतरों की बेहतर समझ पर ध्यान केंद्रित किया

● उभरते मुद्दों का मूल्यांकन

सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की ने भारतीय परिसरों में, नई दिल्ली में हिमस्खलन, जीएलओएफ और भूस्खलन पर जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के लिए एक राष्ट्रीय योजना विकसित करने की दिशा में विचार पर एक दिवसीय विचार-मंथन कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यशाला का उद्देश्य भारतीय हिमालय में हिमस्खलन, जीएलओएफ और भूस्खलन के उभरते मुद्दों का मूल्यांकन और चर्चा करना है।



कुमार निदेशक, सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की, आर.एस.के. नेगी (अध्यक्ष, आयोजन समिति) और डॉ. डी.पी. कानुनगो (सह-अध्यक्ष, आयोजन समिति) ने संयुक्त रूप से किया। वहीं निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार (निदेशक, सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की) ने

प्रभावों को समझ पर ध्यान केंद्रित किया। यदि ऐसी योजनाएं अभी नहीं बनाई गईं, तो भविष्य में आपदा प्रीति जोड़ोपी हरित 2047 तक 8 प्रतिशत से बढ़कर 15 प्रतिशत तक पहुंच सकती है। कार्यक्रम के सह-आयोजक और मुख्य वैज्ञानिक डॉ. डी.पी. कानुनगो ने पर्वतीय खतरों की निगरानी और माॉडलिंग के लिए इनपुट्स/आउटपुट तकनीकी अनुसंधान पर जोर दिया। विशिष्ट अतिथि डॉ. आर. के. भंडारी (पूर्व निदेशक, सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की) ने

## सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की ने विचार-मंथन कार्यशाला में हिमस्खलन, जीएलओएफ और भूस्खलन के उभरते मुद्दों पर की चर्चा देश में जलवायु परिवर्तन को लेकर तैयार हो राष्ट्रीय योजना: प्रदीप

आयोजन समिति

रुड़की। सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की ने भारतीय परिसरों में, नई दिल्ली में हिमस्खलन, जीएलओएफ और भूस्खलन पर जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के लिए एक राष्ट्रीय योजना विकसित करने की दिशा में विचार पर एक दिवसीय विचार-मंथन कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यशाला का उद्देश्य भारतीय हिमालय में हिमस्खलन, जीएलओएफ और भूस्खलन के उभरते मुद्दों का मूल्यांकन और चर्चा करना है।



कार्यशाला के दौरान आने वाले विचारों को विचारित किया।

कार्यशाला के दौरान आने वाले विचारों को विचारित किया।

**Janjatiya Gaurav Divas from 15th November to 26th November 2024**  
**&**  
**Valedictory Function on 26<sup>th</sup> Nov., 2024**

छात्र-छात्राओं ने किया सीबीआरआई का शैक्षिक भ्रमण

अखंडता, चरित्र ओर नैतिकता, अच्छे इंसान के रूप में परिभाषित करते हैं: प्रो. प्रदीप कुमार

**रुड़की बट्टी विशाला**  
सोएसआईआर के डीडीयू भवन  
अनुसंधान संस्थान केन्द्रीय भवन  
केन्द्र के जवाबदात्री गौरा  
विमल एवं विजया 20 जून 2015

भादर और सामाजिक कार्यकर्ता) का त्याग किया और निरक्षर लोग को भी जन आन्दोलन में शामिल करने में सफल हुए। उन्होंने प्रत्यक्ष कार्य में भाग लिया और निरक्षर लोगों को शिक्षित करने में सहायता दी। उन्होंने निरक्षरों को शिक्षित करने में सहायता दी। उन्होंने निरक्षरों को शिक्षित करने में सहायता दी।

के तहत लगभग 100 हजार-लाखों का शैक्षिक धन आवंटित किया गया। जिनमें शैक्षणिक स्थलों का निर्माण और उच्च माध्यमिक विद्यालयों, इंस्टीट्यूटों के रूप में परिवर्तित करते हैं। सुरेंद्र कुमार ने जवाब दिया कि सम्मान समारोह अथवा एक प्रमुख व्याख्यान दिना. उन्होंने जवाबों में गौरव के महत्व ने सीएसआईआई-सीओआईआई सदस्यों में अनुसंधान और विकास कार्य को जवाबकारी प्रदान की है। इस शैक्षणिक धन का उपयोग 'सीएसआईआई' का दृष्टी भाव है। अनेकों, मोहन सिंह, अमन, प्रदीप, गुरुदेव, कुलदेव और, चन्दन ने बहोली, डॉ. हामिर सिंह, डॉ. ताराश शर्मा, डॉ. नरेश मिश्रा, गौरव गोविन्द शर्मा

**CSIR-CBRI, Roorkee, Organized The Valedictory Function To Mark  
The Culmination Of The Janjatiya Gaurav Divas Celebrations**

**Roorkee (The Hawk):** Roorkee, organized the Vaidikayan function to mark the culmination of the cultural activities of the Gaurav Divas celebrations. The event witnessed the participation of the

[illegible]

The event commenced with an inspiring and inaugural address by the Prof. R. Prem Kumar, president of the organization, who highlighted the need for the celebrations and emphasizing the importance of the event. The Director expressed his appreciation for the efforts of the students, faculty, and staff who participated in the event. He also highlighted the importance of the event in promoting the cultural heritage of the institution and the country.

culture, history, and contributions. The winning students who participated in various competitions held were awarded prizes, leaving them feeling motivated and encouraged.

Sh. Nadeem Ahmad provided a brief introduction to Janjatiya Gaurav Diwas, highlighting its

vided a brief introduction of the Chief Guest, highlighting their achievements and contributions.

Janjatiya Gaurav Diwas is observed annually on 15 November to honour the birth anniversary of Bhagwan Birsa Munda, an iconic leader in India's tribal freedom

सी एस आई आर - केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की में छात्र-छात्राओं का शैक्षिक भ्रमण

कदुली।

[illegible]

अवधार के तालीक प्रभावका ज्ञान के साथ  
 हुका कार्यकाल कीसी सुदृष्ट, की अवधारका,  
 की प्रकाशित, की अवधारका की प्रकाश के जेसी, की  
 सुकोशिक अवधारका, की अवधारका प्रकाश की, की  
 प्रकाश, की अवधारका प्रकाश की, की  
 प्रकाश, की अवधारका प्रकाश की, की

में तथा पवन संस्कार में श्रौतमनिकों के प्रयोग द्वारा जीवन को अस्तित्व बनाने के तरीकों पर चर्चा की। कार्यक्रमा का आयोजन डॉ. हरिद्वार अरार के हरिद्वार प्रकाशक ज्ञान के राय दत्ता कार्यक्रमा ओपरी सुपुत्र, डॉ. अमरेश, डॉ. रमेश सिंह और अग्रज और पद्म के नेतृत्व में सुभाषित अंग, डॉ. चन्द्र शक्ता शर्मा, डॉ. दिवान, डॉ. सविता अग्रवाल, डॉ. मनीष निहार और संविदा एमएस से।

8 हरिद्वार: दैनिक हाक, बुधवार, 27 नवम्बर 2024

**रुइकी**

सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की में जनजातीय गौरव दिवस एवं जिज्ञासा प्रोग्राम में 100 छात्र-छात्राओं का शैक्षिक भ्रमण आयोजित

[illegible]

## छात्र-छात्राओं ने किया शैक्षिक भ्रमण

स्वतंत्र चैतना

रुड़की। सी एस आर और केडीए धन अग्रगण्य नगरन रुड़की में जनजातीय सीएस दिवस एवं चित्रासा 2.0 प्रोग्राम के तहत लगभग 100 छात्र-छात्राओं का शैक्षिक प्रमाण आयोजित किया गया। जिनमें शैक्षिक स्कूल कविवर रुड़की और उच्च माध्यमिक विद्यालय, मुजफ्फरनगर के छात्र-छात्राओं

[illegible]

अत्याधुनिक तकनीक से रूबरू हुए छात्र-छात्राएं

प्रौद्योगिकी के प्रयोग से  
जीवन को आसान बनाने के  
तरीकों पर चर्चा

१०० छा छा छाओं का शक्तिमय भ्रमण  
 आधोजीवित किया गया। जिनमें शेफीलड  
 स्कूल कलिंगर रुक्मी और उच्च मध्याह्निकी  
 विद्यालय, मुजफ्फरनगर के छात्र-छात्राओं  
 ने भाग लिया। सीएसआईआई  
 रबीआईआई स्कूलों के निदेशक प्रो. प्रदीप  
 कुमार ने मुख्य अतिथि सुन्दर कुमार के डेरा  
 महन्त का स्वागत किया और निदेशक  
 जीवन के तीन आवश्यक मूल्यों को  
 किस्मिस्त करने के महत्व पर जोर दिया  
 अखंडता, चरित्र और नैतिकता, जो हमें  
 अनेक दुःखाने के रूप में परिभाषित करते हैं  
 सुन्दर कुमार ने जपमतीय दिवस के सम्मान  
 सम्प्राप्त पर एक प्रेरक व्याख्यान दिया

उत्कृष्टता प्राप्त करने और राष्ट्र के सौम्य में बेधन देने का प्रयास करने और संस्कृतिक विचारों के माध्यम से ही राष्ट्र संस्कृतिक है। इस विकास का समर्थन डॉ. राम, मैथिली ने कहा और उसके बाद सौम्य के मुख्य विचारों के अन्तर्गत वे जनजातीय विचारों के माध्यम पर प्रस्ताव दिया। मुख्य अर्थव्यवस्था का विकास विचार दिया। डॉ. प्रदीप ने मैथिली का विकास करने के विचारों को और समन्वयकों के समन्वयकों-समन्वयकों के रूप में अनुसंधान पर विकास करवा के जनजातीय प्रदान की।

उन्होंने जनजातीय गौरव दिवस के अवसर पर प्रकाश डाला, छात्रों को अपने करियर में इस गैरशैक्षणिक भ्रमण का उद्देश्य सी एस आई और -केंद्रीय भवन अनुसंधान डॉ. हेमलता, डॉ. ताविस आलम, डॉ. नवीन निशान, गौरव गोविन्द शर्मिल थे

Hon'ble Secretary, Shri K. Srinivas, Ministry of Housing & Urban Affairs,  
GoI New Delhi to CSIR-CBRI, on Nov. 24, 2024

## भूकंप इंजीनियरिंग परीक्षण प्रयोगशाला का उद्घाटन

उड़ी प्रिंटेड कंक्रीट बिल्डिंग  
सुविधा के साथ देश की पहली  
प्रयोगशाला रुड़की में

रुड़की (एसएनबी)। केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान में राष्ट्रीय भूकंप इंजीनियरिंग परीक्षण और उड़ी प्रिंटेड कंक्रीट बिल्डिंग सुविधा प्रयोगशाला की स्थापना की गई है। यह भारत में अपनी तरह की अनूठी और अत्याधुनिक प्रयोगशाला है। प्रयोगशाला का उद्घाटन आवास और शहरी मामलों के केंद्रीय मंत्रालय सचिव के श्रीनिवास ने किया। इस सुविधा के निर्माण के साथ सीबीआरआई रुड़की में 3 मंजिला प्रीकास्ट प्रीमिनिशड वॉल्यूमेट्रिक निर्मित भवन पर पूर्ण पैमाने पर भूकंपीय परीक्षण और दो मंजिला, उड़ी कंक्रीट प्रिंटेड बिल्डिंग की छपाई भी शुरू करेगा। इस अवसर पर सीबीआरआई, रुड़की के निदेशक प्रो.आर प्रदीप कुमार ने राष्ट्रीय आवश्यकताओं को पूरा करने और



प्रयोगशाला का शुभारम्भ करते केन्द्रीय सचिव।

आम आदमी तक किफायती कीमत पर सुरक्षित, उभरती, जलवायु अनुकूल तकनीकों को पहुंचाने का आश्वासन दिया। उन्होंने कहा कि यह सुविधाएं प्राथमिकता

वाले क्षेत्र के रूप में मजबूत मौजूदा, नई और पारंपरिक भवन प्रौद्योगिकियों के विकास और सुधार पर ध्यान केंद्रित करेंगी।

एनईईटीएफ परीक्षण सुविधा से किया जा सकेगा मूल्यांकन एनईईटीएफ भारत में एक अनेकड़ी और अत्याधुनिक परीक्षण सुविधा है, जिसमें अर्ध-स्वैच्छिक, रिवर्स साइक्लिक और छद्म-गतिशील लोडिंग स्थितियों के अंतर्गत 12 मीटर (4 मंजिला इमारतों) की ऊंचाई तक के इमारतों और संरचनाओं का पूर्ण पैमाने पर भूकंपीय प्रदर्शन के मूल्यांकन किया जा सकेगा। नवाचारों और उभरती पारंपरिक भवन निर्माण प्रौद्योगिकियों के मद्देनजर, एनईईटीएफ ऐसी संरचनाओं के परीक्षण के लिए प्लेटफॉर्म, चार मंजिला तक की पूर्ण-स्तरीय भवनों, महत्वपूर्ण उपकरणों और प्रणालियों को भूकंप नियमों के साथ उनके अनुपालन की जांच की जा सकेगी और भूकंपीय घटनाओं के दौरान नुकसान को कम करने और जीवन सुरक्षा के उद्देश्य से भूकंप रेट्रोफिट तकनीकों की प्रभावशीलता को सत्यापित किया जा सके।

## सीबीआरआई में हुई भूकंप परीक्षण सुविधा एवं प्रयोगशाला की स्थापना

रुड़की। केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) में राष्ट्रीय भूकंप इंजीनियरिंग परीक्षण सुविधा (एनईईटीएफ) और उड़ी प्रिंटेड कंक्रीट बिल्डिंग प्रयोगशाला की स्थापना की गई है। यह देश में अभी तक की अत्याधुनिक प्रयोगशाला है। जिसका उद्घाटन रविवार को आवास एवं शहरी मंत्रालय, नई दिल्ली के सचिव के श्रीनिवास ने किया। सीबीआरआई निदेशक प्रो. आर प्रदीप कुमार ने कहा कि राष्ट्रीय आवश्यकताओं को पूरा करने और आम आदमी तक किफायती कीमत पर सुरक्षित, उभरती, जलवायु अनुकूल तकनीकों को पहुंचाने के लिए यह प्रयोगशाला मददगार होगी। डॉ. अजय चौरसिया ने बताया कि एनईईटीएफ के जरिए 12 मीटर यानी 4

दोरा में अभी तक की अत्याधुनिक प्रयोगशाला मंजिला इमारतों की ऊंचाई तक भूकंपीय प्रदर्शन का मूल्यांकन किया जा सकेगा। भूकंपीय घटनाओं के दौरान नुकसान को कम करने के उद्देश्य से यह प्रयोगशाला महत्वपूर्ण साबित होगी। इससे रेट्रोफिट तकनीकों की प्रभावशीलता को भी सत्यापित किया जा सकेगा। पूर्वानुमान के लिए संरचनात्मक मॉडल विकसित करने में भी इसका उपयोग होगा। इसके साथ ही सीबीआरआई के इस कदम से अनुसंधान करने और आम आदमी के लिए उड़ी तकनीकी आधारित भवन को निर्माण को बढ़ावा मिलेगा। इस मौके पर डॉ. एसके जेगी, डॉ. डॉनो कांमरुनी, आशीष कपूर, जयजय पारस्यार, सुभाष कुमार आदि मौजूद रहे। सचिव

### शोध

### सीएसआईआर-सीबीआरआई की अनूठी पहल

## राष्ट्रीय भूकंप इंजीनियरिंग परीक्षण और उड़ी प्रिंटेड कंक्रीट प्रयोगशाला का उद्घाटन

रुड़की, 24 नवंबर (अनिल) : सीएसआईआर-केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान में राष्ट्रीय भूकंप इंजीनियरिंग परीक्षण सुविधा (एनईईटीएफ) और उड़ी प्रिंटेड कंक्रीट बिल्डिंग सुविधा की स्थापना की गई है, जो भारत में अपनी तरह की अनूठी और अत्याधुनिक है। इस प्रयोगशाला का उद्घाटन के. श्रीनिवास, सचिव आवास और शहरी मामलों के मंत्रालय, भारत सरकार ने किया। इस सुविधा के निर्माण के साथ, सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की में तीन मंजिला प्रीकास्ट प्रीमिनिशड वॉल्यूमेट्रिक निर्मित भवन पर पूर्ण पैमाने पर भूकंपीय परीक्षण और दो मंजिला, उड़ी कंक्रीट प्रिंटेड बिल्डिंग की छपाई भी शुरू करेगा।

एनईईटीएफ भारत में एक अनेकड़ी और अत्याधुनिक परीक्षण सुविधा है,

जो अर्ध-स्वैच्छिक, रिवर्स साइक्लिक और छद्म-गतिशील लोडिंग स्थितियों के अंतर्गत 12 मीटर (4 मंजिला इमारतों) की ऊंचाई तक के इमारतों और संरचनाओं का पूर्ण पैमाने पर भूकंपीय प्रदर्शन के मूल्यांकन के लिए है। नवाचारों और उभरती, पारंपरिक भवन निर्माण प्रौद्योगिकियों के मद्देनजर, एनईईटीएफ ऐसी संरचनाओं के परीक्षण के लिए प्लेटफॉर्म, चार मंजिला तक की पूर्ण-स्तरीय भवनों, महत्वपूर्ण उपकरणों और प्रणालियों को भूकंप नियमों के साथ उनके अनुपालन की जांच की जा सकेगी और भूकंपीय घटनाओं के दौरान नुकसान को कम करने और जीवन सुरक्षा के उद्देश्य से भूकंप रेट्रोफिट तकनीकों की प्रभावशीलता को सत्यापित किया जा सके। संरचनाओं पर इस तरह की जांच संरचनात्मक

की महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करेगी। इस अवसर पर प्रो. आर. प्रदीप कुमार, निदेशक सीएसआईआर-सीबीआरआई ने राष्ट्रीय आवश्यकताओं को पूरा करने और आम आदमी तक किफायती कीमत पर सुरक्षित, उभरती, जलवायु अनुकूल तकनीकों को पहुंचाने का आश्वासन दिया। उन्होंने कहा कि यह सुविधाएं प्राथमिकता वाले क्षेत्र के रूप में मजबूत मौजूदा, नई और पारंपरिक भवन प्रौद्योगिकियों के विकास और सुधार पर ध्यान केंद्रित करेंगी।



शोध कार्य का अवलोकन करते मुख्य अतिथि।

## बिल्डिंग पर भूकंप का प्रभाव जानने में मददगार साबित होगी प्रयोगशाला : श्रीनिवास

रुड़की सीबीआरआई में थीडी प्रिंटेड कंक्रीट बिल्डिंग प्रयोगशाला की हुई स्थापना

अजय चौरसिया, भारत सरकार के सचिव श्रीनिवास ने कहा कि यह प्रयोगशाला महत्वपूर्ण साबित होगी। इससे रेट्रोफिट तकनीकों की प्रभावशीलता को भी सत्यापित किया जा सकेगा। पूर्वानुमान के लिए संरचनात्मक मॉडल विकसित करने में भी इसका उपयोग होगा। इसके साथ ही सीबीआरआई के इस कदम से अनुसंधान करने और आम आदमी के लिए उड़ी तकनीकी आधारित भवन को निर्माण को बढ़ावा मिलेगा। इस मौके पर डॉ. एसके जेगी, डॉ. डॉनो कांमरुनी, आशीष कपूर, जयजय पारस्यार, सुभाष कुमार आदि मौजूद रहे। सचिव



- आवास और शहरी मामलों के मंत्रालय, भारत सरकार के सचिव श्रीनिवास ने किया उद्घाटन
- मुख्य विद्वान डॉ. चौरसिया ने भी इस तकनीक के बारे में विस्तार से दी जानकारी

सीबीआरआई में प्रयोगशाला में बिल्डिंग का अवलोकन करते सचिव श्रीनिवास व सचिव चौरसिया

जाननी के जरीये सीरीट व बर्कन प्लेटिड के उपयोग के लिए कुर्मी ओरिजिक करते का इस्तेमाल करने हुए और अच्छे भवन बनाए जा सकेंगे। इस दौरान मुख्य विद्वान डॉ.

अजय चौरसिया ने भी इस तकनीक के बारे में विस्तार से जानकारी दी। इस अवसर पर डॉ. एसके जेगी, डॉ. डॉनो कांमरुनी, आशीष कपूर, जयजय पारस्यार, सुभाष कुमार आदि मौजूद रहे। सचिव

# आयुर्वेद उतना ही पुराना है, जितने हमारे वेद : प्रो. प्रदीप

■ केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान में मनाया गया आयुर्वेद दिवस

रुड़की, 12 नवम्बर (अनिल): सीएसआईआर- केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान में नौवां आयुर्वेद दिवस धूमधाम से मनाया गया। समारोह का उद्घाटन संस्थान के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने दीप प्रज्वलित जलाकर किया। इस अवसर पर प्रो. प्रदीप कुमार ने कहा कि आयुर्वेद उतना ही पुराना है, जितने हमारे वेद। आयुर्वेद का वर्णन अथर्ववेद में मिलता है।

संस्थान की स्वास्थ्य एवं चिकित्सा समिति के अध्यक्ष डॉ. प्रकाश चंद्र थपलियाल ने बताया कि आयुर्वेदिक उपचार प्रणाली सबसे पुरानी और व्यापक रूप से इस्तेमाल की जाने वाली पद्धति में से एक है। आयुर्वेदिक



महिला चिकित्सक को सम्मानित करते हुए संस्थान के निदेशक।

उपचार में अधिकांश दवाएं हर्बल प्रकृति की होती हैं और इसलिए दुष्प्रभाव से मुक्त होती हैं। इस अवसर पर, आयुष्मान आरोग्य मंदिर, भंगेड़ी, सेपथरी डॉ. चित्रा वल्लभ ने आयुर्वेद

के इतिहास और आस्टियोआर्थराइटिस के प्रबंधन पर जानकारी दी तथा डॉ. प्रियंका सिंह, आयुर्वेदशाला, बेलड़ी द्वारा आयुर्वेद के साथ स्वस्थ जीवनशैली और दैनिक दिनचर्या पर

रोचक व्याख्यान दिया। इस अवसर पर एस.के. नेगी, डॉ. सुनील शर्मा, डॉ. बी.के. सुमन, डॉ. एम.के. सिन्हा, डॉ. नीरज जैन, डॉ. राजेश वर्मा, सुशील आदि उपस्थित रहे।

## मानव जीवन में आयुर्वेद का विशेष महत्व : कुमार

जागरण संवाददाता, रुड़की : केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान में नौवां आयुर्वेद दिवस मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए संस्थान के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने कहा कि आयुर्वेद उतना ही पुराना है, जितने कि वेद। आयुर्वेद का वर्णन अथर्ववेद में मिलता है। मानव जीवन में इसके महत्व के कारण लोग अब आयुर्वेद को पांचवां वेद कहते हैं। दैनिक

दिनचर्या का पालन करने और जीवनशैली संबंधी बीमारियों को ठीक करने में आयुर्वेद महत्वपूर्ण है।

संस्थान की स्वास्थ्य एवं चिकित्सा समिति के अध्यक्ष डा. प्रकाश चंद्र थपलियाल ने कहा कि आयुर्वेदिक उपचार प्रणाली सबसे पुरानी और व्यापक रूप से इस्तेमाल की जाने वाली पद्धति में से एक है। ऐसा माना जाता है कि आयुर्वेदिक उपचार में

अधिकांश दवाएं हर्बल प्रकृति की होती हैं और इसलिए दुष्प्रभाव से मुक्त होती हैं। साठ से अधिक स्टाफ और सेवानिवृत्त सदस्यों ने परिवार के साथ संस्थान के ओडीएस सभागार में मुख्य कार्यक्रम में भाग लिया और विशेषज्ञों द्वारा व्याख्यान का लाभ उठाया। इस अवसर पर आयुष्मान आरोग्य मंदिर, भंगेड़ी की डा. चित्रा वल्लभ ने आयुर्वेद के इतिहास और

आस्टियोआर्थराइटिस के प्रबंधन पर जानकारी दी। वहीं, डा. प्रियंका सिंह, आयुर्वेदशाला, बेलड़ी की ओर से आयुर्वेद के साथ स्वस्थ जीवनशैली और दैनिक दिनचर्या पर रोचक व्याख्यान दिया। इस अवसर पर एसके नेगी, डा. सुनील शर्मा, डा. बीके सुमन, डा. एमके सिन्हा, डा. नीरज जैन, डा. राजेश वर्मा, सुशील आदि उपस्थित रहे।

## सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की में जिज्ञासा 2.0 के तहत मेरठ के छात्रों का शैक्षणिक भ्रमण

By ADMIN  
Nov 7, 2024



1 / 161 Next »

सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की में जिज्ञासा 2.0 के तहत मेरठ के छात्रों का शैक्षणिक भ्रमण

सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) रुड़की में जिज्ञासा 2.0 प्रोग्राम के तहत मेरठ छात्रों के पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय पंजाब साइंस के छात्रों के लिए एकदिवसीय शैक्षणिक भ्रमण आयोजित किया गया। इस भ्रमण में कक्षा 8 से 12 तक के करीब 400 छात्र-छात्राओं और 22 शिक्षकों ने भाग लिया।

इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य छात्रों को सीबीआरआई के इतिहास, महत्वपूर्ण प्रोजेक्ट्स, आधुनिक तकनीकों से ऐतिहासिक इमारतों के परीक्षण और संरक्षण, और देश के विकास में संस्थान के योगदान से परिचित कराना था। साथ ही, छात्रों को जीवन में प्रौद्योगिकी के उपयोग और भवन संरक्षण के तरीकों के बारे में जानकारी दी गई।

इस अवसर पर संस्थान के निदेशक प्रोफेसर आर. प्रदीप कुमार, वरिष्ठ वैज्ञानिक एस. के. नेगी, और डॉ. नदीम अहमद के मार्गदर्शन में छात्रों को टेक्नोलॉजी पार्क, प्रयोगशालाओं, और प्रदर्शन गैलरी का भ्रमण कराया गया। वैज्ञानिक चंद्रभान पटेल और डॉ. सोमिन्द्र मैथी ने 'वेस्ट टू वेल्थ' और 'आईओटी के अनुप्रयोग' जैसे विषयों पर प्रस्तुतियाँ दीं।

संस्थान के निदेशक प्रोफेसर प्रदीप कुमार समवाती ने अपने व्याख्यान कार्यक्रम से समय निकालकर छात्रों को प्रेरित किया। कार्यक्रम का सफल संचालन वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. चन्दन खरूप मीणा ने किया। कार्यक्रम में वैज्ञानिकों की टीम और ओडीएस टीम के सदस्य उपस्थित रहे।

छोरे के समापन पर, छात्रों और शिक्षकों ने सीएसआईआर-सीबीआरआई की इस पहल की सराहना करते हुए प्रतिक्रिया दी और इस अनुभव को अपने शैक्षणिक विकास में महत्वपूर्ण बताया।



« हरिद्वार और आसपास के क्षेत्रों में हाथियों की दस्तक से दहशत, हरिद्वार के ग्रामीण क्षेत्रों में जंगली जानवरों का खतरा  
हाथियों को रोकना वन विभाग के लिए बड़ी चुनौती, देखे विडियो ,,,, बरकरार हाथी की दस्तक से ग्रामीण भयभीत, »

## पहाड़ पर बोझ बन रहे मैदान

राज्य ब्यूरो, जामरगन • शिमला : पहाड़ों पर भूस्खलन के अलावा अन्य



आशीष पिपल  
• जामरगन

प्राकृतिक आपदाओं का सबसे बड़ा कारण बढ़ता अतिरिक्त बोझ है। भवन निर्माण के लिए आज हर कोई परंपरागत तकनीक को छोड़कर आधुनिकता की दौड़ में शामिल हो रहा है। बुजुर्गों को वैज्ञानिक आधार पता था और उसी आधार पर वह भवन निर्माण करते थे। यह कहना है कि सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च संस्थान (सीबीआरआई) रुड़की के वरिष्ठ विज्ञानी आशीष पिपल का, जो हिमाचल के इंजीनियरों को भवन निर्माण का प्रशिक्षण देने के साथ आम लोगों को महत्वपूर्ण जानकारी दे रहे हैं। उनका कहना है कि पुराने समय में भवन निर्माण के लिए इस्तेमाल होने वाला पत्थर, मिट्टी और अन्य सामग्री आसपास की ही होती थी। वर्तमान में मकान का सारा सामान मैदानी क्षेत्रों से आ रहा है। इस कारण पहाड़ का बोझ और बढ़ाया जा रहा है। स्थानीय सामग्री से भवन निर्माण किया जाए तो हम अपनी जमीन का बोझ कम कर सकते हैं।

- भूस्खलन व आपदाओं का कारण बन रही मैदान से लाई जा रही भवन निर्माण सामग्री
- हिमाचल को तीन जोन में बांटकर सुरक्षित भवन तकनीक पर किताब तैयार



आशीष ने बताया कि चाहे ऊंचे पहाड़ी क्षेत्र हों या मध्य और निचले, वहां एक जैसे भवनों का निर्माण हो रहा है। हालांकि सबकी ज़रूरतें और भौगोलिक स्थितियां अलग-अलग हैं। इंजीनियरों को इसी आधार पर प्रशिक्षित किया जा रहा है। हिमाचल प्रदेश भूकंप के लिए अति संवेदनशील है। ऐसे में भूकंपरोधी मकान बनाए जाना आवश्यक है। इसके लिए राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण ने सीबीआरआई रुड़की के इंजीनियरों के साथ मिलकर आम लोगों को सुविधा

### पेड़ों की वनावट बताती है जमीन का हाल

आशीष का कहना है कि भवन निर्माण के लिए वैसे जमीन की क्षमता की जांच होती है। लेकिन आम व्यक्ति पेड़ों की वनावट के आधार पर जमीन का हाल जान सकता है। पेड़ हमेशा सीधे आकाश की ओर जाते हैं। यदि पुराने पेड़ों में तिरछापन है तो भूमि धंसाव के कारण ऐसे होने की संभावना रहती है। यदि नए पेड़ों में भी ऐसा है तो वहां भूमि धंसाव जारी है।

के लिए भवन निर्माण पर पुस्तक तैयार की है। मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू सोमवार को समर्थ 2024 कार्यक्रम के तहत इस पुस्तक का विमोचन करेंगे। इसमें समझाया गया है कि कैसे आम व्यक्ति बिना इंजीनियर की मदद के भूकंपरोधी मकान बना सकेगा। इसमें बहुत सरल तरीके से डिजाइन के साथ मकान बनाने की तकनीक बताई गई है। हिमाचल को तीन जोन में बांटकर भवन निर्माण की तकनीक भौगोलिक स्थिति के आधार पर बताई गई है।



## After Delhi Airport canopy collapse, government enlists CBRI to advise airport operators on structural safety

The decision to engage CBRI follows several concerning incidents, including canopy collapses at Jabalpur and Rajkot airports in June. A senior official from the Ministry of Civil Aviation confirmed that the CBRI will guide the structural aspects of airport infrastructure, ensuring operators take necessary precautions to prevent such occurrences in the future.

Written by [FE Online](#)

Updated: October 6, 2024 16:24 IST



After Delhi Airport canopy collapse, government enlists CBRI to advise airport operators on structural safety.

In response to a series of structural failures at various airports, including the partial collapse of a canopy at Terminal 1 (T1) of Delhi's Indira Gandhi International Airport in June, the Indian government has enlisted the expertise of the Central Building Research Institute (CBRI). The Roorkee-based CBRI has been tasked with advising airport operators across the country on structural safety and integrity.

The decision to engage CBRI follows several concerning incidents, including canopy collapses at Jabalpur and Rajkot airports in June. A senior official from the Ministry of Civil Aviation confirmed that the CBRI will guide the structural aspects of airport infrastructure, ensuring operators take necessary precautions to prevent such occurrences in the future.

In addition to CBRI's involvement, the ministry is also organizing a technical workshop for airport operators, where experts from the institute will provide specialized training on structural safety and resilience.

### Also Read



**Chandigarh-Dibrugarh Express derailment...**



**Inflation calculator: What will be the value of Rs...**



**India breaks the mould, signs liberal treaty with UAE**



**Based on Japan's Shinkansen technology, wi...**

### Incident at Delhi Airport

On June 28, a partial collapse of a canopy at the old departure forecourt of T1 in Delhi resulted in one fatality and injuries to nine others. Heavy rains at the time of the incident were a significant contributing factor. The structural failure prompted an immediate review by structural engineers from IIT Delhi. The ministry is now reviewing the report from IIT Delhi and is continuing to examine the structural integrity of the rest of T1.

### Broader Inspection and Study

In the aftermath of the incident at Delhi's Terminal 1, the ministry ordered the Airports Authority of India (AAI) to conduct inspections of all major and minor airports across the country. This comprehensive review is aimed at identifying any structural vulnerabilities and ensuring that airports can withstand extreme weather conditions and other stressors.

According to ministry sources, a detailed structural study of Terminals 2 and 3 at the Delhi airport is also underway, conducted by a team from IIT Madras. However, DIAL (Delhi International Airport Ltd), which operates the Delhi airport, has yet to provide an official comment on the study's progress.

### Nationwide Review of Airport Infrastructure

The CBRI's advisory role is part of a broader initiative to safeguard India's airport infrastructure. The structural study at airports managed by AAI is ongoing, with a focus on both minor and major facilities. Following the June 28 incident, the AAI was directed to issue a circular instructing all airports under its jurisdiction to conduct thorough inspections of their structural strength.

The ministry emphasised the importance of these inspections in its statement, noting that findings from the studies would inform future safety measures and long-term policies to prevent similar incidents. These measures are seen as crucial as India's aviation sector continues to expand, with 157 operational airports, heliports, and waterdromes currently in service and more expected to open in the coming years.

In June, Minister of State for Civil Aviation Murlidhar Mohol informed Rajya Sabha that the tensile fabric canopies at Jabalpur and Rajkot airports had torn during incidents on June 27 and 29, respectively. Investigations into the causes of these failures are underway.

As air travel continues to rise, ensuring the safety and reliability of airport infrastructure is a key priority for both the government and airport operators. With the involvement of CBRI, IIT Delhi, and IIT Madras, authorities aim to address structural vulnerabilities and restore confidence in airport infrastructure.

[Market Data](#)

(With PTI inputs)

## Uttarakhand: सीबीआरआई रुड़की की देखरेख में होगा तृतीय केदार तुंगनाथ मंदिर का जीर्णोद्धार, सीएम ने दी अनुमति

अमर उजाला ब्यूरो, देहरादून Published by: अमर उजाला Updated Mon, 30 Sep 2024 07:38 PM IST

सार

42309 Followers देहरादून

बदरीनाथ केदारनाथ केदारनाथ मंदिर समिति (बीकेटीसी) के अध्यक्ष अर्जेन्द्र अजय ने तुंगनाथ मंदिर के संरक्षण कार्य के लिए अनुमति देने पर मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी का आभार जताया है।



तुंगनाथ मंदिर - फोटो : अमर उजाला फाइल फोटो



विस्तार

Follow Us

विश्व में सबसे अधिक ऊंचाई पर स्थित तृतीय केदार के नाम से विख्यात तुंगनाथ मंदिर के जीर्णोद्धार, सौंदर्यीकरण और सुरक्षात्मक कार्यों के लिए प्रदेश सरकार ने अनुमति दे दी है। इस संबंध में सचिव धर्मस्व हरिचंद्र सेमवाल ने बदरीनाथ-केदारनाथ मंदिर समिति को पत्र जारी किया। केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की (सीबीआरआई) की देखरेख में मंदिर के संरक्षण कार्य किए जाएंगे। बदरीनाथ केदारनाथ केदारनाथ मंदिर समिति (बीकेटीसी) के अध्यक्ष अर्जेन्द्र अजय ने तुंगनाथ मंदिर के संरक्षण कार्य के लिए अनुमति देने पर मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी का आभार जताया है।

उन्होंने गत वर्ष भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग (एएसआई) और भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (जीएसआई) के महानिदेशक को पत्र लिखकर समुद्र तल से 11,942 फीट की ऊंचाई पर स्थित तुंगनाथ मंदिर के जीर्णोद्धार, सौंदर्यीकरण व सुरक्षात्मक कार्यों को कराने के लिए तकनीकी परामर्श उपलब्ध कराने का आग्रह किया था।

विज्ञापन



इस पर दोनों विभागों के विशेषज्ञों ने मंदिर का अध्ययन कर रिपोर्ट बीकेटीसी को सौंपी थी। रिपोर्ट के बाद बीकेटीसी ने केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की से भी इस संबंध में राय मांगी है। सीबीआरआई के वैज्ञानिक पिछले दिनों तुंगनाथ का भ्रमण कर चुके हैं। उनकी रिपोर्ट भी जल्दी ही बीकेटीसी को मिल जाएगी।

**Kedarnath Yatra: सोनप्रयाग में पैदल बाईपास का कार्य फिर शुरू, भूस्खलन जोन से मिलेगी निजात, 70 मजदूर जुटे**

इस बीच बीकेटीसी के अध्यक्ष अर्जेन्द्र ने शासन को एसआई व जीएसआई की रिपोर्ट का हवाला देते तुंगनाथ मंदिर के संरक्षण कार्यों के लिए सहमति देने का आग्रह किया था। इस पर सचिव धर्मस्व व संस्कृति हरिचंद्र सेमवाल ने बीकेटीसी को पत्र लिखकर इसकी अनुमति प्रदान कर दी है।

शासन ने मंदिर की पौराणिकता को देखते हुए इसकी विस्तृत योजना रिपोर्ट (डीपीआर) और संपूर्ण कार्य सीबीआरआई रुड़की के माध्यम से कराने के निर्देश दिए हैं। शासन ने यह भी निर्देश दिए कि संपूर्ण कार्य एसआई और जीएसआई के तकनीकी विशेषज्ञों के साथ समन्वय स्थापित करते हुए किए जाएंगे।

## सीबीआरआई रुड़की की देखरेख में होगा तुंगनाथ मंदिर का जीर्णोद्धार

प्रदेश की धामी सरकार ने दी मंदिर के संरक्षण के कार्य को कराने की अनुमति

अमर उजाला ब्यूरो



तुंगनाथ मंदिर - अमर

देहरादून। विश्व में सबसे अधिक ऊंचाई पर स्थित तृतीय केदार के नाम से विख्यात तुंगनाथ मंदिर के जीर्णोद्धार, सौंदर्यीकरण और सुरक्षात्मक कार्यों के लिए प्रदेश सरकार ने अनुमति दे दी है।

पत्र संस्था में सचिव धर्मस्व हरिचंद्र सेमवाल ने बदरीनाथ-केदारनाथ मंदिर समिति को पत्र जारी किया। केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की (सीबीआरआई) की देखरेख में मंदिर के संरक्षण कार्य किए जाएंगे। बदरीनाथ केदारनाथ केदारनाथ मंदिर समिति (बीकेटीसी) के अध्यक्ष अर्जेन्द्र अजय ने तुंगनाथ मंदिर के संरक्षण कार्य के लिए अनुमति देने पर मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी का आभार जताया है।

उन्होंने गत वर्ष भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग (एसआई) और भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (जीएसआई) के महानिदेशक को पत्र लिखकर समुद्र तल से 11,942 फीट की ऊंचाई पर स्थित तुंगनाथ मंदिर के जीर्णोद्धार, सौंदर्यीकरण व सुरक्षात्मक कार्यों को कराने के लिए तकनीकी परामर्श उपलब्ध कराने का आग्रह किया था।

इस पर दोनों विभागों के विशेषज्ञों ने मंदिर का अध्ययन कर रिपोर्ट बीकेटीसी को सौंपी थी। रिपोर्ट के बाद बीकेटीसी ने केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की से भी इस संबंध में राय मांगी है।

सीबीआरआई के वैज्ञानिक पिछले दिनों तुंगनाथ का भ्रमण कर चुके हैं। उनकी रिपोर्ट भी जल्दी ही

भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (जीएसआई) के महानिदेशक को पत्र लिखकर समुद्र तल से 11,942 फीट की ऊंचाई पर स्थित तुंगनाथ मंदिर के जीर्णोद्धार, सौंदर्यीकरण व सुरक्षात्मक कार्यों को कराने के लिए तकनीकी परामर्श उपलब्ध कराने का आग्रह किया था।

इस पर दोनों विभागों के विशेषज्ञों ने मंदिर का अध्ययन कर रिपोर्ट बीकेटीसी को सौंपी थी। रिपोर्ट के बाद बीकेटीसी ने केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की से भी इस संबंध में राय मांगी है।

सीबीआरआई के वैज्ञानिक पिछले दिनों तुंगनाथ का भ्रमण कर चुके हैं। उनकी रिपोर्ट भी जल्दी ही

भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (जीएसआई) के महानिदेशक को पत्र लिखकर समुद्र तल से 11,942 फीट की ऊंचाई पर स्थित तुंगनाथ मंदिर के जीर्णोद्धार, सौंदर्यीकरण व सुरक्षात्मक कार्यों को कराने के लिए तकनीकी परामर्श उपलब्ध कराने का आग्रह किया था।

इस पर दोनों विभागों के विशेषज्ञों ने मंदिर का अध्ययन कर रिपोर्ट बीकेटीसी को सौंपी थी। रिपोर्ट के बाद बीकेटीसी ने केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की से भी इस संबंध में राय मांगी है।

सीबीआरआई के वैज्ञानिक पिछले दिनों तुंगनाथ का भ्रमण कर चुके हैं। उनकी रिपोर्ट भी जल्दी ही

एसआई, जीएसआई के तकनीकी विशेषज्ञों संग समन्वय बना होगा कार्य

बीकेटीसी को मिल जाएगी।

इस बीच बीकेटीसी के अध्यक्ष अर्जेन्द्र ने शासन को एसआई व जीएसआई की रिपोर्ट का हवाला देते तुंगनाथ मंदिर के संरक्षण कार्यों के लिए सहमति देने का आग्रह किया था। इस पर सचिव धर्मस्व व संस्कृति हरिचंद्र सेमवाल ने बीकेटीसी को पत्र लिखकर इसकी अनुमति प्रदान कर दी है।

शासन ने मंदिर की पौराणिकता को देखते हुए इसकी विस्तृत योजना रिपोर्ट (डीपीआर) और संपूर्ण कार्य सीबीआरआई रुड़की के माध्यम से कराने के निर्देश दिए हैं। शासन ने यह भी निर्देश दिए कि संपूर्ण कार्य एसआई और जीएसआई के तकनीकी विशेषज्ञों के साथ समन्वय स्थापित करते हुए किए जाएंगे।

# अपने विचार हिंदी में अभिव्यक्त करें : गोयल

## सीबीआरआई में हिंदी पखवाड़े का समापन, प्रतियोगिता के विजेताओं को किया सम्मानित

संवाद न्यूज एजेंसी

रुड़की। सीबीआरआई में हिंदी पखवाड़े के समापन पर अतिथियों ने सरकारी कामकाज के साथ ही अपने विचार व्यक्त करने में भी हिंदी के उपयोग पर बल दिया। इस मौके पर हिंदी पखवाड़े के दौरान हुई प्रतियोगिताओं के विजेताओं को सम्मानित किया गया।

मंगलवार को सीबीआरआई में हिंदी पखवाड़े का समापन पुरस्कार वितरण समारोह के साथ किया गया। मुख्य अतिथि राष्ट्रीय जल संस्थान के निदेशक डॉ. मनमोहन कुमार गोयल ने कहा कि हिंदी हमारे गर्व की भाषा है। संस्थान के निदेशक प्रो. आर प्रदीप कुमार ने कहा कि सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी का प्रयोग करना हम सबका दायित्व है। हिंदी एक ऐसी सरल भाषा है जो देश के जनसामान्य से जुड़ी है और प्रयोग करने



रुड़की स्थित सीबीआरआई में आयोजित हिंदी पखवाड़े के समापन पर पुस्तिका का विमोचन करते संस्थान के निदेशक व अन्य । स्रोत : संस्थान

में आसान है।

इस अवसर पर सीबीआरआई की ओर से प्रकाशित वार्षिक पत्रिका निर्माणका का विमोचन भी किया गया। बताया कि राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने के लिए संस्थान में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए। इनमें हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी, हिंदी लेखन प्रतियोगिता, नोटिंग एवं

डाफ्टिंग प्रतियोगिता, हिंदी आशु भाषण प्रतियोगिता, हिंदी प्रश्नोत्तरी आदि प्रतियोगिता आयोजित की गई। समापन अवसर पर प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। इनमें सुधीर कुमार को प्रथम, सुशील कुमार और अक्वीश कुमार को द्वितीय व अमन कुमार को तृतीय पुरस्कार

प्राप्त हुआ।

इसी तरह वैज्ञानिक तकनीकी कार्य के लिए प्रोत्साहन योजना में डॉ. प्रदीप चौहान को प्रथम, सुशील कुमार को द्वितीय, आईए सिद्धिकी को तृतीय और डॉ. ताबिश आलम, राकेश कुमार, डॉ. रविन्द्र बिष्ट, डॉ. सोमित्र मैती, विनीत कुमार सैनी और डॉ. सिद्धार्थ सिंह को प्रोत्साहन पुरस्कार दिया गया।

इसके अलावा हिंदी टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता में अमन कुमार को प्रथम, हुमैरा अथहर को द्वितीय, पूजा को तृतीय और विश्वास त्यागी को प्रोत्साहन पुरस्कार मिला। आशु भाषण प्रतियोगिता में अर्पण महेश्वरी को प्रथम, विनीत कुमार सैनी को द्वितीय, शान मोहम्मद को तृतीय और धीरज कुमार को प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त हुआ। इस मौके पर प्रशासन नियंत्रक कुमुद सिंह, भूमिका, दीप्ति कर्मकर, अमन कुमार आदि मौजूद रहे।

# स्वच्छता ही सेवा व स्वच्छ भारत दिवस अभियान के तहत रुड़की रेलवे स्टेशन के आस-पास सफाई कार्यक्रम - दिनांक 30.09.2024 दिन सोमवार

## स्वच्छता पखवाड़ा कार्यक्रम

### रेलवे स्टेशन पर सीबीआरआई रुड़की और रेलवे विभाग द्वारा आयोजित किया गया स्वच्छता कार्यक्रम

रुड़की बट्टी विशाल। आज सेवा पखवाड़े के निमित्त रुड़की रेलवे स्टेशन पर सीबीआरआई रुड़की और रेलवे विभाग द्वारा एक

आकर्षक बनाना एवं लोगों को स्वच्छता के प्रति जागरूक करना था। इस अवसर पर सीबीआरआई रुड़की के उप-निदेशक हरपाल सिंह ने कहा कि

वातावरण को स्वच्छ रखना चाहिए। स्वच्छता से न सिर्फ खुद को लाभ होता, अपितु समाज को भी लाभ होगा। उन्होंने स्टेशन अधीक्षक अरुण कुमार को सराहना करते हुए कहा कि



स्वच्छता हमारी संस्कृति का हिस्सा है और हमें अपने आस-पास के वातावरण को स्वच्छ रखना चाहिए। उन्होंने रेलवे विभाग के अधिकारियों और कर्मचारियों को स्वच्छता के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दिखाने के लिए धन्यवाद दिया। इस अवसर पर रेलवे बोर्ड सदस्य और रोटरी आरसीसी अध्यक्ष पूजा नंदा ने कहा कि हमें अपने आसपास के प्रति जागरूक किया।

स्वच्छता कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें सीबीआरआई रुड़की और रेलवे विभाग के अधिकारियों और कर्मचारियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का उद्देश्य रेलवे स्टेशन को स्वच्छ और

कर्मचारियों को स्वच्छता के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दिखाने के लिए धन्यवाद दिया। इस अवसर पर रेलवे बोर्ड सदस्य और रोटरी आरसीसी अध्यक्ष पूजा नंदा ने कहा कि हमें अपने आसपास के प्रति जागरूक किया।

कर्मचारी ने सीबीआरआई के पदाधिकारियों और कर्मचारियों के साथ मिलकर स्टेशन के प्लेटफार्म पर स्वच्छता का कार्य किया एवं अन्य यात्रियों को भी स्वच्छता के प्रति जागरूक किया।

Harpal Forwarded

**समर्थ भारत न्यूज़**

रुड़की रेलवे स्टेशन पर सीबीआरआई रुड़की और रेलवे विभाग द्वारा एक स्वच्छता कार्यक्रम का आयोजन\* ....  
आज सेवा पखवाड़े के निमित्त रुड़की रेलवे स्टेशन पर सीबीआरआई रुड़की और रेलवे विभाग द्वारा एक स्वच्छता कार्यक्रम का आयोजन

[www.samarthbharatnews.com](http://www.samarthbharatnews.com)

रुड़की रेलवे स्टेशन पर सीबीआरआई रुड़की और रेलवे विभाग द्वारा एक स्वच्छता कार्यक्रम का आयोजन\*  
<https://www.samarthbharatnews.com/latest/19733>

11:50 AM

Harpal Forwarded

**Pooja Classes**  
Pooja Classes was live.

[www.facebook.com](http://www.facebook.com)

<https://www.facebook.com/share/v/qwcco7uZwmdBiw5b/?mibextid=qI2Om9>

11:51 AM

## विज्ञान और प्रौद्योगिकी के जरिए समस्याओं का समाधान प्रस्तुत कर रहा सीएसआईआर : शंकर

रुड़की, 27 सितम्बर (अनिल) : सीएसआईआर - केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान में वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद का 83वां स्थापना दिवस धूमधाम से मनाया गया। स्थापना दिवस का मुख्य समारोह संस्थान के रविन्द्रनाथ टैगोर सभागार में दीप-प्रज्वलन के साथ शुरू हुआ। इस अवसर पर केरल के आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के सलाहकार ने मुख्य अतिथि श्री शंकर ने कहा कि सीएसआईआर देश की विभिन्न क्षेत्रों की समस्याओं का विज्ञान और प्रौद्योगिकी के जरिये समाधान प्रस्तुत कर रहा है। आप सभी को इतने बड़े वैज्ञानिक और अनुसंधान संगठन का हिस्सा होने पर गर्व करना चाहिए। सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रोफेसर आर. प्रदीप कुमार ने



समारोह को संबोधित करते केरल के आपदा प्रबंधन सलाहकार।

कहा कि हमें विशेष रूप से युवा वैज्ञानिकों को अनुसंधान के अपने लक्ष्य तय करने होंगे। सीएसआईआर में 25 वर्षों से अधिक की सेवा देने वाले कर्मिकों को सम्मानित किया गया। इसके अलावा पिछले एक वर्ष की अवधि में सेवानिवृत्त होने वाले वैज्ञानिकों और अधिकारियों को भी सम्मानित किया गया। इंटर की परीक्षा में तीन विज्ञान विषयों में 90 प्रतिशत अंक प्राप्त करने वाले राहुल अरोड़ा पुत्र डॉ. हरीश चन्द्र अरोड़ा को सम्मानित किया गया।



## सीएसआईआर में स्थापना दिवस पर रही सांस्कृतिक कार्यक्रमों की धूम

» मद्रलैंड संवाददाता

रुड़की। सीएसआईआर-केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान में वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद का 83वां स्थापना दिवस मनाया गया। मुख्य समारोह सुबह साढ़े दस बजे संस्थान के रविन्द्रनाथ टैगोर सभागार में हुआ। समारोह का शुभारम्भ दीप-प्रज्वलन के साथ शुरू हुआ। केरल राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के सलाहकार शंकर ने मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए कहा कि सीएसआईआर देश की विभिन्न क्षेत्रों की समस्याओं का विज्ञान और प्रौद्योगिकी के जरिये समाधान प्रस्तुत कर रहा है। सभी को इतने बड़े वैज्ञानिक और अनुसंधान संगठन का हिस्सा होने पर गर्व करना चाहिए। सीएसआईआर की तरह ही सीबीआरआई भी भवन निर्माण से संबंधित विभिन्न प्रौद्योगिकियों के माध्यम से समाधान दे रहा है। सीबीआरआई की प्रौद्योगिकियों द्वारा लोगों के लिए आवास निर्माण की लागत में कमी आ रही है।



भविष्य के लिए शुभकामनाएं भी दीं। सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रोफेसर आर. प्रदीप कुमार ने कहा कि हमें विशेष रूप से युवा वैज्ञानिकों को अनुसंधान के अपने लक्ष्य तय करने होंगे। ताकि हम सामाजिक मुद्दों की पहचान करके कार्य कर सकें। चूँकि युवा वैज्ञानिकों को 2-3 दशकों तक संस्थान की सेवा करनी है, इसलिए उपलब्ध संसाधनों के अनुसार अपने लक्ष्यों तक पहुंचें। सीएसआईआर में 25 वर्षों से अधिक सेवा देने वाले कर्मिकों को हाथ धड़ी देकर सम्मानित किया गया। इसके अलावा पिछले एक वर्ष की अवधि में सेवानिवृत्त होने वाले वैज्ञानिकों और अधिकारियों को भी सम्मानित किया गया। इंटर की परीक्षा में तीन विज्ञान विषयों में 90 प्रतिशत अंक प्राप्त करने वाले राहुल अरोड़ा पुत्र डॉ. हरीश चन्द्र अरोड़ा को 3 हजार रुपये देकर सम्मानित किया गया। स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में सीबीआरआई परिवार के बच्चों के लिए चित्रकला प्रतियोगिता भी आयोजित की गई। इसमें विजेता बच्चों को पुरस्कार दिए गए। इसके अलावा संस्थान के द्विवार्षिक प्रतिवेदन का विमोचन भी

अतिथियों द्वारा किया गया। समारोह का स्वागत संबोधन संस्थान के मुख्य वैज्ञानिक एसके नेगी ने दिया। डॉ. डीपी कानूनगो, मुख्य वैज्ञानिक ने मुख्य अतिथि का परिचय दिया। डॉ. अजय चैरसिया, मुख्य वैज्ञानिक ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। गरिमा सिंह ने मंच संचालन किया। इस अवसर पर संस्थान की प्रशासन नियंत्रक कुमुद सिंह, डॉ. हरपाल सिंह, डॉ. पीसी थपलियाल, विनीत सैनी, नवल किशोर, किशोर कुलकर्णी, चंदन स्वरूप मीना, मेहर सिंह, अमन कुमार, विक्रम सिंह आदि शामिल रहे।

आयोजित की जाएगी हो, इसके साथ कार्मिकों के बच्चों के लिए भी हिन्दी कविता पाठ तथा भाषण प्रतियोगिता भी आयोजित की जाएगी। हिन्दी पखवाड़े का समापन एवं पुरस्कार वितरण 1 अक्तूबर को होगा। इस अवसर पर डॉ. नीरज जैन, डॉ. राजेश वर्मा, डॉ. प्रदीप चहान, अक्वीश कुमार, वीणा चैपरी, अतहर, पुष्पेन्द्र अरोड़ा, धर्म सिंह नेगी, अमन कुमार, विनीत सैनी, डॉ., चन्दन मीना आदि उपस्थित रहे।

## घर बनाते समय स्थान चयन में बरतें सावधानी

### शहरी निकायों में सुरक्षित भवन निर्माण को लेकर कनिष्ठ अभियंताओं को दिप टिप्स

शिमला, 13 सितम्बर (भूचित्र): हिमाचल प्रदेश में घर बनाने समय लोगों को स्थान का चयन करने में सावधानी बरनी चाहिए। इसके लिए जहाँ जहाँ स्थान ऐसा होना चाहिए, जहाँ पर भूस्वतंत्र व भूमि के धंसने का खतरा न हो।

यहाँ निर्माण में कई तरह की बातों का विशेष ध्यान देना चाहिए। शहरी निकायों में सुरक्षित भवन निर्माण को लेकर कनिष्ठ अभियंताओं को दिप

टिप्स दिए गए। शुक्रवार को शिमला के प्रदेश सचिवालय में शहरी विकास विभाग तथा टी.सी.पी. के जूनियर आने वाले अभियंताओं के लिए एक कार्यशाला का आयोजन किया गया।

कार्यशाला का आयोजन हिमाचल प्रदेश राज्य आपदा प्रतिक्रिया प्राधिकरण (एच.पी.एस.डी.एम.ए.) द्वारा किया गया, जिससे आवश्यक निर्देशक एवं एक्सपर्ट ऑफिशियल विशेष सचिव राज्य आपदा प्रतिक्रिया डी.सी.एम.ए. ने की। इस मौके पर सी.डी.आर.आई. रुड़की के मुख्य वैज्ञानिक अजय चौधरी और एस.के. नेगी ने अभियंताओं को सुरक्षित भवन निर्माण को लेकर टिप्स दिए। उन्होंने कहा कि घर बनाने समय लोकेशन का

ध्यान रखना होगा। इसके लिए ऐसे स्थान पर भूमि का चयन किया जाए, जहाँ पर भूस्वतंत्र का खतरा न हो तथा वह धंसने वाली भूमि न हो। साथ ही इस बात का भी ध्यान रखा जाए कि नदी-नालों के समीप भवन निर्माण न किया जाए।

साथ ही भवन भूकंपरोधी कैसे बनाए जाएं, इसकी भी कार्यशाला में जानकारी दी गई। अब कार्यशाला में भाग लेने वाले अभियंता अपने अपने क्षेत्र में निर्माण कार्य से जुड़े लोगों तथा स्थानीय जनप्रतिनिधियों को जागरूक करेंगे। कार्यशाला में डाकून एंड कंट्रोलिंग (टी.सी.पी.) और शहरी विकास (यू.डी.) विभाग के 61 शहरी स्थानीय निकायों के



शिमला : राज्य स्तरीय कार्यशाला में भाग लेते शहरी विकास और नगर एवं ग्राम नियोजन विभाग के इंजीनियरों (पी.सी.)

इंजीनियरों ने भाग लिया।

अगले माह पूरे प्रदेश में चलाया

जाएगा जागरूकता अभियान

अगले माह यानी अक्टूबर में

समय योजना के तहत पूरे प्रदेश में

एक विशेष जागरूकता अभियान चलाया जाएगा। इसमें शहरी विकास विभाग तथा टी.सी.पी. के अधीन आने वाले कनिष्ठ अभियंता व अन्य अभियंता अपने-अपने क्षेत्र में लोगों को जागरूक करेंगे।



सौरभ आर आर  
CSIR  
भारत का नवाचार इंजन  
The Innovation Engine of India

CSIR Daily News Bulletin  
[15-09-2024]

### Roorkee institute to retrofit 20 British-era buildings in Shimla

The Central Building Research Institute (CBRI), Roorkee, will undertake retrofitting of the British-era buildings in Shimla district, including the landmark colonial heritage properties, to make these earthquake-resistant. The buildings that will be retrofitted in the first phase include Raj Bhawan, Oak Over, Secretariat, Deputy Commissioner's Office, Superintendent of Police's Office, All India Radio Building and Doordarshan. A two-day workshop was organised by the District Disaster Management Authority (DDMA) here today, which was presided over by Additional District Magistrate (Protocol) Jyoti Rana. There are many old buildings in Shimla district, which need to be retrofitted so that disaster risk can be reduced. In the first phase, 20 old government buildings have been selected for retrofitting in Shimla district. Rana said it was the buildings that cause maximum loss of life during an earthquake, for which we need to make them quake-resistant. Himachal Pradesh falls in the most vulnerable seismic zones four and five, which make these areas highly prone to earthquakes, she added.

Source: Tribuneindia

Science Communication and Dissemination Directorate  
(SCDD)  
Council of Scientific and Industrial Research (CSIR)  
Ministry of Science & Technology, Govt. of India  
Anusandhan Bhawan, 2 Rafi Marg, New Delhi - 110001  
Tel: +91 11 23714249; 23470121

## सचिवालय और राजभवन बनेंगे भूकंप प्रतिरोधक

जागरण संबद्धता, शिमला : शिमला जिला के भवनों को भूकंप प्रतिरोधक बनाने के उद्देश्य से वीरवार को बचत भवन में जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण ने दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया। इसकी अध्यक्षता अतिरिक्त जिला देहाधिकारी (प्रोटोकाल) ज्योति राणा ने की। एडीएम ने कहा कि भूकंप के दौरान जीवन को हानि हमारे भवन ही पहुंचाते हैं। भवनों को भूकंप प्रतिरोधक बनाने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश भूकंप की दृष्टि से संवेदनशील जोन चार व पांच में आता है। इसके चलते यहाँ पर भूकंप का अत्यधिक खतरा बना रहता है। जिला शिमला में काफी सारे पुराने भवन हैं। इनकी रेट्रोफिटिंग करना आवश्यक है ताकि आपदा जोखिम में कमी लाई जा सके। सीएम आवास, सचिवालय सहित राजभवन की रेट्रोफिटिंग के शीघ्र भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) करेगा।



शिमला में वीरवार को आयोजित भूकंप प्रतिरोधक भवन निर्माण की दो दिवसीय कार्यशाला में उपस्थित अधिकारी व अन्य

भूकंप प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए सीबीआरआई करेगा काम  
शिमला में पहले चरण में 20 सरकारी भवनों का चयन

इसके तहत पहले चरण में 20 सरकारी भवनों का चयन किया गया है। इसमें राजभवन, ओक ओवर, हिमाचल प्रदेश सचिवालय, उपायुक्त कार्यालय, पुलिस अधीक्षक कार्यालय, आल इंडिया रेडियो बिल्डिंग एवं

दूरदर्शन बिल्डिंग, रोहडू उपमंडल के अंतर्गत उपमंडल देहाधिकारी कार्यालय भवन, तहसील कार्यालय चिड़गांव, संयुक्त कार्यालय कोपेक्स चिड़गांव, पुराना भवन नागरिक अस्पताल रोहडू एवं राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला भवन रोहडू, जुबल्ल उपमंडल के अंतर्गत नागरिक अस्पताल जुबल्ल, तहसील कार्यालय जुबल्ल, पुलिस स्टेशन जुबल्ल तथा राजकीय (छात्र) वरिष्ठ माध्यमिक

पाठशाला जुबल्ल, कोटखांड उपमंडल के अंतर्गत राजकीय (छात्र) वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला कोटखांड, तहसील कार्यालय कोटखांड एवं पुलिस स्टेशन कोटखांड तथा कुम्भी उपमंडल के अंतर्गत सीएमएस के भवन प्रस्तावित है। केडीएम भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) रुड़की से चीफ सॉल्यूटिस्ट एसके नेगी एवं सॉल्यूटिस्ट आशीष कपूर विषय विशेषज्ञ के रूप में उपस्थित हुए।

A team of 30 S&T staff members for Survey (Risk Assessment of Houses Under NDMA, New Delhi Project)

## ददाहू के शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में घरों का रिस्क आकलन सर्वेक्षण किया

**सी.बी.आर.आई. रुड़की के वैज्ञानिकों और तकनीकी टीम ने किया सर्वेक्षण**

नाहन, 11 सितम्बर (चंद्र) : जिला सिरमौर के नाहन, पच्छाद व पांवटा साहिब उपमंडल क्षेत्रों में भूकंप, बाढ़ आदि आपदाओं के मद्देनजर राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, नई दिल्ली की अधिकृत परियोजना अनुसार लगभग 2000-2200 घरों का रिस्क आकलन सर्वेक्षण कार्य आरंभ हो चुका है। केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सी.बी.आर.आई.) रुड़की उत्तराखंड से लगभग 30 सदस्यों में वैज्ञानिक एवं अन्य तकनीकी स्टाफ की टीम द्वारा यह सर्वेक्षण किया जा रहा है।

बुधवार को टीम ने नाहन उपमंडल के ददाहू के ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के करीब 1 हजार घरों के सर्वेक्षण का कार्य किया। इस सर्वेक्षण में सिरमौर जिला के स्थानीय



नाहन : असुरक्षित भवन का सर्वेक्षण करने पहुंची सी.बी.आर.आई. रुड़की की टीम व (नीचे) रिस्क आकलन करते हुए। (अवतल)

अभियंताओं, पंचायत प्रतिनिधियों, राजस्व अधिकारियों, खंड विकास अभियंताओं एवं अन्य स्टाफ द्वारा सहायता की जा रही है। टीम ऐसे असुरक्षित भवनों को भी चिन्हित कर रही है जो कि भूकंप एवं भूस्खलन के कारण अत्यधिक संवेदनशील एवं कमजोर हैं।

जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण सिरमौर डी.सी. कार्यालय नाहन के प्रभारी राजन कुमार शर्मा ने बताया कि सिरमौर जिला के नाहन, पांवटा साहिब और पच्छाद उपमंडल के करीब 2200 घरों

का रिस्क आकलन सर्वेक्षण किया जा रहा है। बुधवार को ददाहू में करीब 1 हजार घरों का रिस्क आकलन सर्वे टीम द्वारा किया गया।





**CSIR-Central Building Research Institute  
Roorkee (Uttarakhand)  
Scientists and Students Interaction Program  
10<sup>th</sup> September, 2024**



### स्मार्ट प्रौद्योगिकी पर विचार साझा किए

रुड़की। केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान में जिज्ञासा पहल के तहत वैज्ञानिक और छात्रों के बीच एक संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसका विषय स्मार्ट प्रौद्योगिकी का भविष्य रोबोटिक एवं आईओटी रहा।

कार्यक्रम में केंद्रीय विद्यालय एक के करीब 150 छात्रों और 10 संकाय सदस्यों ने हिस्सा लिया। संवाद कार्यक्रम में छात्रों को रोबोटिक और आईओटी जैसी उभरती हुई स्मार्ट तकनीकों के बारे में बताया गया। कार्यक्रम में वैज्ञानिक डॉ. रविंद्र सिंह बिष्ट, चंद्रभान पटेल, मुख्य वैज्ञानिक एआर एसके नेगी, डॉ. ताबिश आलम, आशीष पिप्पल, डॉ. नवीन निशांत, गुंजन जोशी, प्राची ढोंगिया, पूजा, नमिता शाह, अमजद, विकास और महेश आदि मौजूद रहे।



## Technology Transfer Meeting with Laghu Udyog Bharati (LUB)

### आत्मनिर्भर भारत बनाने के लिए नई तकनीक अपनाएं उद्यमी

■ 100 दिन-100 प्रौद्योगिकी पर सेमिनार आयोजित

रुड़की, 4 सितम्बर (अनिल) : सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की, भारतीय पेट्रोलियम संस्थान देहरादून तथा लघु उद्योग भारती ने एक दिवसीय औद्योगिक सेमिनार '100 दिन-100 प्रौद्योगिकी' का आयोजन किया। सेमिनार का उद्देश्य सीबीआरआई और लघु उद्योग भारती मिलकर उद्यमियों को आदान-प्रदान करने, विनोदों में केवल उद्योगों का लाभ होना, बल्कि समाज और देश के विकास में तेजी भी आनी।

सेमिनार का उद्घाटन करते हुए सीबीआरआई के निदेशक प्रो. आर प्रदीप कुमार ने कहा कि लघु उद्योग भारती देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर रहा है। वहीं दूसरी ओर सीएसआईआर-सीबीआरआई नई-नई



सेमिनार में मंचासीन अतिथि।

प्रौद्योगिकियों का अनुसंधान एवं विकास कार्य देश के विकास में योगदान दे रहा है। आत्मनिर्भर भारत बनाने के लिए उद्यमियों को तकनीक अपनाना।

लघु उद्योग भारती के सचिव ओम प्रकाश गुप्ता ने कहा कि सीबीआरआई रुड़की, भारतीय पेट्रोलियम संस्थान देहरादून तथा लघु उद्योग भारती का यह संयुक्त प्रयास देश के विकास में मील का पत्थर साबित होगा। सीएसआईआर-आईआईपी देहरादून के डॉ. अनुराज रंजन ने भी अपने विचार रखे। इस अवसर पर

सीएसआईआर मुख्यालय के वैज्ञानिक डा. मोहन कुमार ने सीएसआईआर के '100 दिन-100 प्रौद्योगिकी' के संकल्प के बारे में जानकारी दी। पीबीडी समूह के प्रमुख डा. डीपी कानुनगो ने कहा कि यह सेमिनार सभी उद्यमियों को समझाएगा और अपेक्षाओं का समायोजन देने में सहायक हो सकता है। सेमिनार का संयोजन विनोद कुमार सेनी ने किया।

सेमिनार में लघु उद्योग भारती के प्रदेश अध्यक्ष विषय सिंह तोमर, सचिव राजीव मेघना, कोषाध्यक्ष मयंक शर्मा,



सेमिनार में अतिथि को सम्मानित करते लघु उद्योग भारती के पदाधिकारी।

प्रदेश कार्यकारीणी सदस्य राजेश जायसवाल, प्रो. संयुक्त प्रमुख राजेश शर्मा, प्रिंसिपल मैनेजर, योगेश नाथ, देहरादून छात्रों का प्रिंसिपल प्रिंसिपल रविन्द्र शर्मा, विनोद चन्द्राणी, योगेश मोहन, योगेश मोहन, हरिद्वार निवासी अश्विनी प्रमोद प्रो. अमित तिवारी, दिव्य रंजन सैकेट्री आरती साहल, सीबीआरआई से नवीन सेनी, डॉ. डीपी कानुनगो, भाग्य

लघु उद्योग प्रमोद के प्रदेश संयोजक राहुल देवेंद्र, चन्दन शर्मा, प्रकाश गोपाल, अश्विनी शर्मा, प्रिंसिपल, अशोक शर्मा, राजकुमार शर्मा, निरंजन शर्मा, नीलम साहल, योगेश शर्मा, एसके सेनी, डा. अजय चौधरी, डा. प्रदीप शर्मा, डा. एसके पाण्डेय, प्रो. एसके सिंह, शिव गुप्ता, राजेश शर्मा, अमित कुश आदि मौजूद रहे।



### ‘तकनीकों का होगा आदान-प्रदान’

सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की में हुआ औद्योगिक सेमिनार

माई सिटी रिपोर्टर

रुड़की। सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की, भारतीय पेट्रोलियम संस्थान देहरादून और लघु उद्योग भारती उत्तराखंड की ओर से औद्योगिक सेमिनार का आयोजन किया गया। इस सेमिनार का आयोजन '100 दिन-100 प्रौद्योगिकी' के लिए किया गया। इससे सीबीआरआई और लघु उद्योग भारती मिलकर उन तकनीकों का आदान-प्रदान करेंगे। इनसे न केवल उद्योगों को लाभ होगा बल्कि समाज और देश के विकास में तेजी भी आनी।

सीबीआरआई के निदेशक प्रो. आर प्रदीप कुमार ने कहा कि लघु उद्योग भारती देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर रहा है। वहीं दूसरी ओर सीएसआईआर-सीबीआरआई नई-नई प्रौद्योगिकियों का अनुसंधान और विकास कार्य देश के विकास में अपना योगदान दे रहा है।

लघु उद्योग भारती के सचिव ओम प्रकाश गुप्ता ने कहा कि सीबीआरआई रुड़की, भारतीय पेट्रोलियम संस्थान देहरादून और लघु उद्योग भारती उत्तराखंड



रुड़की स्थित सीबीआरआई में आयोजित सेमिनार में उपस्थित वैज्ञानिक। स्रोत: संस्थान

लघु उद्योग भारती देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर रहा है। प्रो. कुमार

का यह संयुक्त प्रयास देश के विकास में मील का पत्थर साबित होगा। सीएसआईआर-आईआईपी देहरादून से पहुंचे डॉ. अनुराज रंजन ने भी अपने विचार रखे। सीएसआईआर मुख्यालय के वैज्ञानिक डॉ. मोहन कुमार ने सीएसआईआर के '100 दिन-100 प्रौद्योगिकी' के संकल्प के बारे में जानकारी दी।

पीबीडी समूह के प्रमुख डॉ. डीपी कानुनगो ने कहा कि हमें विज्ञान है कि आज का सेमिनार सभी उद्यमियों को समस्याओं और अपेक्षाओं का समायोजन देने में अवसर ही सफल होगा। सेमिनार का संयोजन विनोद कुमार सेनी ने किया। इस अवसर पर डॉ. हरपाल सिंह, डॉ. मिश्रकी मेरान, दिलबेरा, प्रो. एसके सिंह, डॉ. नीरज जैन, डॉ. रविन्द्र सिंह बिष्ट, डॉ. शिवा चिदम्बरम, डॉ. ताविश आलम, डॉ. देवुदत्त घोष आदि सम्मिलित रहे।

देहरादून, हरिद्वार, रुड़की, ऋषिकेश, एवं अन्य

newsdesk@motherlandvoice.org  
editor@motherlandvoice.org

उत्तराखंड

### एक दिवसीय औद्योगिक सेमिनार में किया उद्योगों पर विचार

मदरलैंड संवाददाता

रुड़की। सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की, भारतीय पेट्रोलियम संस्थान, देहरादून तथा लघु उद्योग भारती उत्तराखंड के संयुक्त प्रयास से एसआईए पर एक दिवसीय औद्योगिक सेमिनार का आयोजन किया गया। 100 दिन, 100 प्रौद्योगिकी को ध्यान में रखकर सेमिनार का आयोजन आयोजित किया गया। सेमिनार का उद्देश्य सीबीआरआई और लघु उद्योग भारती द्वारा मिलकर उन तकनीकों का आदान-प्रदान करना है, जिससे उद्योग, समाज और देश के विकास में तेजी आएगी।



गुप्ता ने कहा कि सीबीआरआई रुड़की, भारतीय पेट्रोलियम संस्थान, देहरादून तथा लघु उद्योग भारती, उत्तराखंड का यह संयुक्त प्रयास देश के विकास में एक मील का पत्थर साबित होगा। सीएसआईआर-आईआईपी देहरादून से पहुंचे डॉ. अनुराज रंजन ने भी अपने विचार रखे। इस अवसर पर सीएसआईआर

मुख्यालय के वैज्ञानिक डॉ. मोहन कुमार ने अपने संयोजन में सीएसआईआर के 100 दिन, 100 प्रौद्योगिकी के संकल्प के बारे में जानकारी दी। पीबीडी समूह के प्रमुख डॉ. डीपी कानुनगो ने कहा कि हमें विज्ञान है कि आज का सेमिनार सभी उद्यमियों को समस्याओं और अपेक्षाओं का समायोजन देने में सफल होगा तथा हम

प्रौद्योगिकी विकसित करने के लिए व्यक्तिगत रूप से सम्पर्क करेंगे। सेमिनार का संयोजन विनोद कुमार सेनी ने किया। सीबीआरआई और भारतीय पेट्रोलियम संस्थान, देहरादून के वैज्ञानिकों ने उद्यमियों के सम्पर्क अपनी अपनी प्रौद्योगिकियां प्रस्तुत की। इनमें डॉ. हरपाल सिंह, डॉ. मिश्रकी मेरान, दिलबेरा, प्रो. एसके सिंह, डॉ. नीरज जैन, डॉ. रविन्द्र सिंह बिष्ट, डॉ. शिवा चिदम्बरम, डॉ. ताविश आलम, डॉ. देवुदत्त घोष शामिल रहे। उद्यमियों ने वैज्ञानिकों से बन-बू-वन प्रौद्योगिकियों के बारे में जानकारी ली तथा प्रौद्योगिकी दोनों का अवलोकन एवं प्रयोगशाला का प्रयोग भी किया। सेमिनार में रुड़की, हरिद्वार, देहरादून, मेरठ, मुजफ्फर नगर, गाजियाबाद, उदरपुर, कोटा आदि जगह से उद्यमी शामिल हुए, जिसमें चन्दन शर्मा, प्रकाश गोपाल, अश्विनी शर्मा, प्रमोद प्रो. अशोक शर्मा, नीरज साहल, योगेश शर्मा, एसके सेनी, डा. अजय चौधरी, डा. प्रदीप शर्मा, डा. एसके पाण्डेय, प्रो. एसके सिंह, शिव गुप्ता, राजेश शर्मा, अमित कुश आदि शामिल रहे।

## नई दिल्ली में हुआ एक सप्ताह-एक थीम कार्यक्रम का आयोजन

» मदरलैंड संवाददाता

रुड़की। सीएसआईआर-केंद्रीय सड़क अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली तथा सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान, रुड़की द्वारा संयुक्त रूप से इंडिया हेबिटाट सेंटर, नई दिल्ली में एक सप्ताह-एक थीम कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का थीम 'सिविल, इंफ्रास्ट्रक्चर और इंजीनियरिंग' रहा। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि रविंद्र कुमार गोयल, प्रधान कार्यकारी निदेशक, पुल, भारतीय रेलवे ने कहा कि हम जो भी अनुसंधान करें, वे चिरस्थायी, ऊर्जा दक्ष तथा लागत प्रभावी हों, जो समाज को प्रत्यक्ष रूप में लाभ दें। समारोह के गेस्ट आफ ऑनर यूके भट्टाचार्य, पूर्व निदेशक, एनटीपीसी लि. तथा अध्यक्ष, अनुसंधान परिषद,

सीएसआईआर-एसईआरसी ने कहा कि विकसित भारत-2047 को लक्ष्य करते हुए अनुसंधान करने की आवश्यकता पर बल दिया। कार्यक्रम का शुभारम्भ दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। सीएसआईआर-एसईआरसी, चेन्नई के निदेशक एवं सीआईई के थीम निदेशक डॉ. एन. आनन्दवल्ली ने स्वागत भाषण दिया। आयोजक सीएसआईआर के निदेशक प्रो. मनोरंजन परिदा ने हार्वन वीक-वन थीम के बारे में जानकारी दी। सीएसआईआर, भोपाल के निदेशक डॉ. अक्वीश कुमार श्रीवास्तव, सीएसआईआर-सीएमईआरआई, दुर्गापुर के निदेशक डॉ. नरेश चंद्र मुर्मू और सीबीआरआई के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने भी इस दौरान सम्बोधित किया। कार्यक्रम का उद्देश्य सिविल इंजीनियरी के क्षेत्र में शोध कार्य में

लगी सीएसआईआर की सभी प्रयोगशालाओं को एक मंच पर लाना था। कार्यक्रम में सीआरआरआई, नई दिल्ली; सीबीआरआई, रुड़की; एएमपीआरआई, भोपाल; एसईआरसी, चेन्नई तथा सीएमईआरआई, दुर्गापुर ने शिरकत की। इस अवसर पर सीबीआरआई रुड़की के डॉ. अजय चौरसिया, मुख्य वैज्ञानिक ने भवन भौतिकी और सामग्री निर्माण रसायन समेत पर, सीएसआईआर-सीआरआरआई, नई दिल्ली के डॉ. एमल्लू मधु, मुख्य वैज्ञानिक ने मोबिलिटी इंफ्रास्ट्रक्चर और प्लानिंग पर, सीएसआईआर-एसएमपीआरआई, भोपाल के डॉ. प्रदीप राजन, वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक ने ऑटोमेशन और रोबोटिक्स पर, डॉ. पी. अशोकन ने अपशिष्ट से सम्पदा, सीएसआईआर-एसईआरसी चेन्नई के डॉ. एस. सतर्षि, मुख्य वैज्ञानिक ने

संरचना निगरानी और उसका जीवन विस्तार पर तथा सीएसआईआर-एसईआरसी, चेन्नई के डॉ. पी. हरिकृष्णा मुख्य वैज्ञानिक ने आपदा न्यूनीकरण संरचना विषय पर व्याख्यान दिए। सीएसआईआर-एएमपीआरआई, भोपाल के निदेशक डॉ. अक्वीश कुमार श्रीवास्तव ने मुख्य अतिथि रविंद्र कुमार गोयल, विशिष्ट अतिथि, गेस्ट आफ ऑनर यूके भट्टाचार्य ने प्रयोगशालाओं के निदेशकों, वक्ताओं, वैज्ञानिकों का धन्यवाद किया। आज ही सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की ने दिल्ली में सीबीआरआई उद्योग समागम का आयोजन किया गया। जिसमें सीबीआरआई के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने स्वागत भाषण दिया। कार्यक्रम के मोडरेटर प्रो. आर. प्रदीप कुमार और संस्थान के मुख्य वैज्ञानिक, डॉ. अजय

चौरसिया ने संरचनात्मक रेगुलैटिंग, स्वास्थ्य निगरानी और जलवायु-लचीले भवन भारतीय परिदृश्य पर पैनल चर्चा की। उद्योगों प्रतिनिधियों ने कहा कि उद्योगों की अपेक्षाओं और आवश्यकताओं के अनुरूप काम करने पर बल दिया तथा कोड ऑफ कंडक्ट को अद्यतन करने पर भी जोर दिया। डॉ. एसके सिंह ने कहा कि हम उद्योगों की आवश्यकताओं पर ध्यान देते हुए कार्य करेंगे। डॉ. हरपाल सिंह ने अग्नि अनुसंधान कार्यक्रम पर चर्चा की। डॉ. पीसी थपलियाल ने धन्यवाद व्यक्त किया। इस अवसर पर डॉ. हरपाल सिंह, डॉ. डीपी कानुनगी, डॉ. एसके सिंह, नदीम अहमद, डॉ. एसके पाणिगुही, डॉ. गणेश बाबु बालम, डॉ. सीमित्र मैती, डॉ. किशोर कुलकर्णी, डॉ. शिवा चिदम्बरम, डॉ. चन्दन स्वरूप मीना, डॉ. तबीश आलम आदि उपस्थित रहे।

## चिरस्थायी, ऊर्जा दक्ष व लागत प्रभावी हों अनुसंधान : रविंद्र



दिल्ली में सीबीआरआई रुड़की की ओर से आयोजित कार्यक्रम में मंचासीन अतिथि। स्रोत : संस्थान

रुड़की। सीएसआईआर-केंद्रीय सड़क अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली एवं सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की की ओर से संयुक्त रूप से इंडिया हेबिटाट सेंटर, नई दिल्ली में 'सिविल, इंफ्रास्ट्रक्चर और इंजीनियरिंग' विषय पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। एक सप्ताह तक यह कार्यक्रम चलेगा। इसमें सिविल, इंफ्रास्ट्रक्चर और इंजीनियरिंग पर चर्चा की गई।

कार्यक्रम में भारतीय रेलवे के प्रधान कार्यकारी निदेशक रविंद्र कुमार गोयल बतौर मुख्य अतिथि शामिल हुए। उन्होंने कहा कि हम जो भी अनुसंधान करें, वे चिरस्थायी, ऊर्जा दक्ष और लागत प्रभावी हों, जो समाज को प्रत्यक्ष रूप में लाभ दें। समारोह के गेस्ट

ऑफ ऑनर एनटीपीसी लिमिटेड के पूर्व निदेशक यूके भट्टाचार्य रहे। उन्होंने विकसित भारत-2047 को लक्ष्य करते हुए अनुसंधान करने की आवश्यकता पर बल दिया। इस मौके पर सीएसआईआर-एसईआरसी, चेन्नई के निदेशक एवं सीआईई के थीम निदेशक डॉ. एन. आनन्दवल्ली, सीएसआईआर-सीआरआरआई के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। सीएसआईआर-एएमपीआरआई, भोपाल के निदेशक डॉ. अक्वीश कुमार श्रीवास्तव, सीएसआईआर-सीएमईआरआई, दुर्गापुर के निदेशक डॉ. नरेश चंद्र मुर्मू और सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने भी विचार रखे। संवाद


**हिन्दुस्तान**  
[www.livehindustan.com](http://www.livehindustan.com)

### विकसित भारत का लक्ष्य लेकर करें अनुसंधान कार्य: भट्टाचार्य

रुड़की, संवाददाता। केंद्रीय सड़क अनुसंधान संस्थान नई दिल्ली (सीएसआईआर) और केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) रुड़की की ओर से संयुक्त रूप से इंडिया हेबिटाट सेंटर नई दिल्ली में एक सप्ताह-एक थीम कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का थीम 'सिविल, इंफ्रास्ट्रक्चर और इंजीनियरिंग' रहा। कार्यक्रम में भारतीय रेलवे पुल के कार्यकारी निदेशक रविंद्र कुमार गोयल मुख्य अतिथि रहे। मुख्य अतिथि ने कहा कि हम जो भी अनुसंधान करें वे स्थायी, ऊर्जा दक्ष और लागत प्रभावी हों। जो समाज को प्रत्यक्ष रूप में लाभ दें। समारोह के गेस्ट ऑफ ऑनर एनटीपीसी के पूर्व निदेशक यूके भट्टाचार्य ने कहा कि विकसित भारत-2047 को लक्ष्य करते हुए अनुसंधान करने की आवश्यकता पर बल दिया। सीएसआईआर-एसईआरसी चेन्नई के निदेशक और सीआईई के थीम निदेशक डॉ. एन. आनन्दवल्ली ने स्वागत भाषण दिया। आयोजक सीएसआईआर सीआरआरआई के निदेशक प्रो. मनोरंजन परिदा की ओर से 'वन वीक-वन थीम' के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम का उद्देश्य सिविल इंजीनियरिंग के क्षेत्र में शोध

**उद्योगों की आवश्यकताओं के अनुसार करें काम: प्रो. प्रदीप**

सीबीआरआई रुड़की ने दिल्ली में सीबीआरआई उद्योग समागम का आयोजन किया गया। जिसमें सीबीआरआई के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने स्वागत भाषण दिया। उद्योगों प्रतिनिधियों ने उद्योगों की अपेक्षाओं और आवश्यकताओं के अनुरूप काम करने पर बल दिया। कोड ऑफ कंडक्ट को अद्यतन करने पर भी जोर दिया। डॉ. एसके सिंह ने कहा कि हम उद्योगों की आवश्यकताओं पर ध्यान देते हुए काम करेंगे। डॉ. हरपाल सिंह ने अग्नि अनुसंधान के कार्यक्रम पर चर्चा की। इस दौरान डॉ. थपलियाल, डॉ. सिंह, डॉ. कानुनगी, डॉ. एसके सिंह, नदीम अहमद, डॉ. पाणिगुही, विनीत सैनी, डॉ. बालम, डॉ. मैती, डॉ. कुलकर्णी, डॉ. चिदम्बरम, डॉ. मीना, डॉ. तबीश आलम आदि मौजूद रहे।

कार्य में लगी सीएसआईआर की सभी प्रयोगशालाओं को एक मंच पर लाना था। सीबीआरआई रुड़की के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. अजय चौरसिया ने भवन भौतिकी और सामग्री पर व्याख्यान दिए।

## Post-Disaster Needs Assessment team begins study on Chooralmala landslides



A study team of the National Disaster Management Authority (NDMA) visited the landslip-hit areas in Vilangad in Kozhikode on Saturday (August 31, 2024). The team that had earlier assessed the situation in Wayanad was in Vilangad upon the request of MLA E.K. Vijayan. The four-member team comprising R. Pradeep Kumar, Director of Scientists D.P. Kanungo, Ajay Chaurasia and Member Secretary of Kerala State Disaster Management Authority Shekhar. L. Krurikose visited areas such as Vayad, Panniyeri, Malayangadu and Vilangad town, some of the worst hit areas in the landslip that took place on July 30, 2024. They spoke to survivors and collected data from the local authorities. A Post-Disaster Needs Assessment (PDNA) report will be submitted to the Central Government within two weeks, comprising the information gathered from Chooralmala, Mundakkai and Vilangad. The team was accompanied by MLA E.K. Vijayan and representatives of Vanimal Grama Panchayat. The Tamil Nadu government has inked a pact with US-based Ohmium to set up a new green hydrogen and electrolyser gigafactory in Chengalpattu district of the state. The Memorandum of Understanding (MoU) was signed in the presence of Chief Minister M K Stalin in San Francisco, on the second day of the CM's US trip, on Saturday. State Minister for Industries, Investment Promotions and Commerce TRB Rajaa and Ohmium Co-Founder and CEO Arne Ballantine were present. Ohmium's proposed Chengalpattu plant will be set up at an estimated cost of Rs 400 crore. The plant is expected to generate 500 jobs, a state government release said. Green hydrogen, a clean energy source that only emits water vapour and leaves no residue in the air, unlike coal and oil, is expected to enable India's transition to clean energy. Ohmium has existing R&D partnerships with the IIT Madras Research Park (IITMRP) and the ICSIR- in Karaikudi.

-- Team SCDD

---

Science Communication and Dissemination  
Directorate  
(SCDD)  
Council of Scientific and Industrial Research (CSIR)  
Ministry of Science & Technology, Govt. of India  
Anusandhan Bhawan, 2 Rafi Marg, New Delhi - 110001  
Tel: +91 11 23714249: 23470121

## Gurgaon: More trouble in Paradiso, 7th tower at Chintels condo declared unsafe

Rao Jaswant Singh / TNN / raojaswantsingh / Updated: Aug 21, 2024, 07:05 IST

SHARE

PRINT

AA

FOLLOW US

CBRI deemed Tower C of Chintels Paradiso uninhabitable due to severe structural issues, similar to six other towers previously declared unsafe after a tragic collapse in 2022. The institute identified high chloride content and substandard concrete as the main causes. Demolition has been advised for safety.



GURGAON: The Central Building Research Institute (CBRI) has declared Tower C of Chintels Paradiso unsafe for habitation, following a structural analysis.

This is the seventh tower in the condominium of nine towers - where a vertical collapse of living rooms killed two residents in Feb 2022 - to be declared unfit.

### 60 FAMILIES LIVING IN TOWER C

**9 towers in Chintels Paradiso**  
➤ D, E, F, G and H (phase 1) and A, B, C, J (phase 2)

**7 towers declared unsafe**  
By IIT Delhi, dist admin | D, E, F, G, H and J (Total 340 Flats)  
By CBRI | C (64 flats)

**What CBRI report says**  
**Unsafe for habitation** | Tower C is declared unsafe for habitation due to severe structural deficiencies, including extensive corrosion of reinforcement in almost all structural elements, primarily caused by high chloride content in concrete

➤ Use of poor-quality concrete in construction, which contributed to increased carbonation and accelerated corrosion

**High cost of repairs** | The cost of necessary repairs, retrofitting, and rehabilitation would exceed 50% of the original construction cost, making retrofitting economically unfeasible

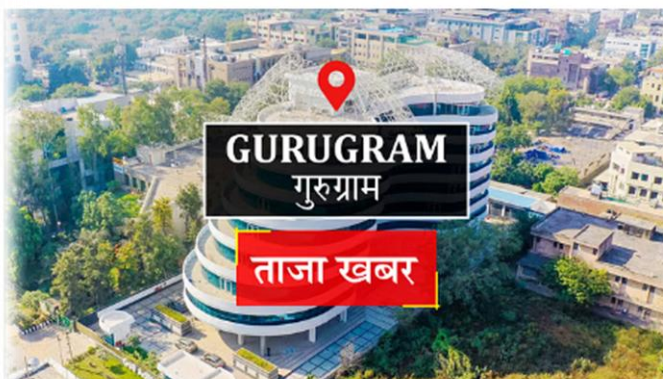
**Razing recommended** | Demolition of Tower C is recommended due to widespread structural failures and high maintenance requirements

**60 families living in Tower C**

CBRI's findings uncovered extensive structural deficiencies, primarily due to severe corrosion caused by high chloride content and substandard concrete.

## Gurugram News: अब तक सात... चिटल्स पराडिसा का सी-टावर भी असुरक्षित घोषित

नोएडा न्यूज़  
Updated Wed, 21 Aug 2024 04:35 AM IST



सीएसआईआर-सीबीआरआई की रिपोर्ट में रहने योग्य नहीं है सी-टावर

## Gurugram real estate news: Audit declares 7th tower at Chintels Paradiso as unsafe

By Abhishek Behl

Aug 21, 2024 06:22 AM IST



The structural audit, undertaken by experts from the Central Building Research Institute (CBRI), was commissioned by Chintels India Ltd.



Tower C of Chintels Paradiso, which has been deemed unsafe by experts of CBRI, who conducted the structural audit of the building at Sector-109 near Dwarka Expressway, in Gurugram. (HT PHOTO)

A structural audit of the Chintels Paradiso condominium at Gurugram Sector 109 has deemed a seventh tower in the complex — Tower C — to be unsafe, and has recommended that it be demolished, people aware of the development said on Tuesday.

10:02



india.indiatimes.com



Now Playing

Badlapur: Mob Pelts School, Storms Railway Tracks Over Abuse Of Two Kids

ciencies, including extensive corrosion of reinforcement in almost all structural elements, primarily caused by high chloride content in concrete

➤ Use of poor-quality concrete in construction, which contributed to increased carbonation and accelerated corrosion

**High cost of repairs** | The cost of necessary repairs, retrofitting, and rehabilitation would exceed 50% of the original construction cost, making retrofitting economically unfeasible

**Razing recommended** | Demolition of Tower C is recommended due to widespread structural failures and high maintenance requirements



CBRI's findings uncovered extensive structural deficiencies, primarily due to severe corrosion caused by high chloride content and substandard concrete.



## सीबीआरआई ने हरी प्रोजेक्ट को किया लांच

सीएसआईआर की महानिदेशिका डॉ. एन. कलैसेत्वी ने सीबीआरआई में हरी का उद्घाटन किया। कार्यक्रम में सीआरबी की आधारशिला

[www.livehindustan.com](http://www.livehindustan.com)

<https://www.livehindustan.com/uttarakhand/roorki/story-csir-director-inaugurates-high-altitude-regions-initiative-at-cbri-highlights-climate-resilient-buildings-201723814110271.html>

## सीबीआरआई ने हरी प्रोजेक्ट को किया लांच

सीएसआईआर की महानिदेशिका डॉ. एन. कलैसेत्वी ने सीबीआरआई में हरी का उद्घाटन किया। कार्यक्रम में सीआरबी की आधारशिला रखी गई। उन्होंने उद्घाटन वाले शेषों के लिए उर्जा कुशल समाधानों की सहजगी की। सीबीआरआई...



Newsrap • हिन्दुस्तान, राउरी

Fri, 16 Aug 2024 06:45 PM



सीएसआईआर की महानिदेशिका और विज्ञान और औद्योगिक अनुसंधान विभाग की सचिव डॉ. एन. कलैसेत्वी ने केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) में हरी एल्टीट्यूड रीजन ऑफ इंडिया (एचएआरआई, हरी) का औपचारिक शुभारंभ किया। शुक्रवार को सीबीआरआई के सभागार में कार्यक्रम कि शुरुआत सीबीआरआई के निदेशक प्रोफेसर आर. प्रदीप कुमार ने मुख्य अतिथि का स्वागत करने के साथ किया। बात चिन्ता मिटर सीबीआरआई स्कूल के छात्रों ने एक नृप प्रदर्शनी से मुख्य अतिथि का स्वागत किया। इसके बाद क्लाइमेट रिलिएन्स बिजिनेस (सीआरबी) की आधारशिला रखी गई। यह आयोजन जलवायु परिवर्तन को ध्यान में रखते हुए सुरक्षा, सेवा, स्थिरता, अर्थव्यवस्था, सौंदर्य, आराम और सामाजिक स्वीकार्यता को ध्यान में रखकर भवन निर्माण के प्रति सीएसआईआर की प्रतिबद्धता का प्रतीक है। डॉ. कलैसेत्वी ने वरिष्ठ अधिकारियों के साथ सीएसआईआर-सीबीआरआई की विभिन्न अत्याधुनिक सुविधाओं का दौरा किया। उन्होंने हरी की रणनीतिक और सामाजिक महत्ता पर जोर दिया। कहा कि यह लक्ष्य जैसे क्षेत्रों के लिए धार्मिक बुनियादी ढांचे, ऊर्जा समाधान और पर्यावरण प्रबंधन रणनीतियों को प्रदान कर सकता है। उन्होंने सीबीआरआई के बुनियादी अनुसंधान और विकास आरएण्डडी कार्य पर ध्यान केंद्रित करने और उच्च एवं अग्रणी तकनीकों के निर्माण के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने उद्घाटन वाले क्षेत्रों के लिए प्रसृत ऊर्जा-कुशल समाधानों और एडवांस्ड सोलर वाटर हीटर और सीबीआरआई की ग्रीन रूफिंग का उपयोग करके 3-मंजिला इमारत बनाने की पहल की भी प्रशंसा की।

प्रो. आर प्रदीप कुमार ने हरी प्रोजेक्ट कि चुनौतियों और सीबीआरआई की क्षमता के बारे में बताया। कहा कि यह पहल न केवल उच्च-ऊंचाई वाले अनुसंधान में तकनीकी प्रगति के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है। बल्कि भारत की रणनीतिक और सामाजिक भलाई में भी एक महत्वपूर्ण योगदान है। सीबीआरआई के वैज्ञानिकों द्वारा हरी पर एक विस्तृत प्रस्तुति दी गई। जिसमें उन्होंने लेड लद्दाख के लोगों द्वारा जिन वर्तमान चुनौतियों का सामना किया जा रहा है उनपर विशेष चर्चा की। इसमें ड्राई टॉपोग्राफ, पानी की कमी, बॉटर हीटर की इफिशिएन्सी में कमी के कारण ज्यादा ऊर्जा का प्रयोग और उद्घाटन वाले क्षेत्रों में बिजली की कम उपलब्धता जैसे मुद्दों पर चर्चा की गई। डॉ. नवीन, डॉ. चित, डॉ. मैथी, डॉ. चन्दन, निर्मल, डॉ. नागेश, डॉ. किशोर ने प्रोजेक्ट की विस्तृत जानकारी दी। वैज्ञानिक एसके मेरी द्वारा धन्यवाद प्रस्तुत किया गया। उन्होंने यह आश्वासन दिया कि विकसित भारत 2047 के लक्ष्य को पूरा करने पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा। इस अवसर पर डॉ. कानूगो, डॉ. हरपाल, डॉ. धनिय्याल, नदीम, डॉ. लीना, डॉ. अरोड़ा, डॉ. राजेश, डॉ. एके सिंह, अविनाश, परवेश, डॉ. जीशान, डॉ. गणेश, डॉ. आशीष, कुमुद सिंह, आदि मौजूद रहे।

# सूर्य तिलक अभिनंदन समारोह का आयोजन

## ■ भारत विकास परिषद अविरल गंगा शाखा रुड़की ने किया कार्यक्रम

रुड़की, 11 अगस्त (अनिल) : भारत विकास परिषद अविरल गंगा शाखा रुड़की ने त्योहारों का महाउत्सव मनाया और सूर्य तिलक अभिनंदन समारोह का भी आयोजन किया। कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण सीबीआरआई वैज्ञानिकों द्वारा भगवान राम की प्रतिमा को सूर्य तिलक का पीपीडी के माध्यम से प्रस्तुति देना रहा।

नगर के एक मोटल में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि सीबीआरआई निदेशक आर प्रदीप कुमार ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का उद्घाटन किया। परिषद की अध्यक्ष प्रीति अग्रवाल ने सभी सदस्यों और अतिथियों का



सम्मानित किए गए सीबीआरआई के वैज्ञानिक।

स्वागत कर कार्यक्रम की शुरुआत की। इस अवसर पर सावन मास के त्योहार शिवरात्रि, तीज, 15 अगस्त, राखी, जन्माष्टमी को नृत्य और नाट्य के द्वारा इनकी महिमा और महत्व को दर्शाया गया।

शाखा ने इस वर्ष से शुरू हुआ प्रथम

अविरल रमेश चंद्र मित्तल उत्कृष्ट अनुसंधान सम्मान मुख्य अतिथि सीबीआरआई रुड़की के निदेशक प्रो आर प्रदीप कुमार एवं टीम सदस्यों वी. चक्रधर, डॉ देवदत्ता घोष, डा रविंद्र, डा सूरज कुमार, ई कोतिलाल, ई दिनेश कुमार और समीर को दिया। इन्होंने

अयोध्या में नवनिर्मित राम मंदिर में भगवान राम की मूर्ति के माथे पर सूर्य की रोशनी से तिलक लगाया था। इस अवसर पर वैज्ञानिकों ने अपने द्वारा लगाए सूर्य तिलक की पीपीडी के माध्यम से प्रस्तुति दी और बताया इस कार्य के लिए अयोध्या में कितनी मुश्किल स्थितियों का सामना करना पड़ा। शाखा संरक्षक डा. सत्येंद्र मित्तल ने प्रोफेसर आर प्रदीप सम्मान पत्र, शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया।

मंच का संचालन महिला संयोजिका विमलेश गिरी और डा. संगीता सिंह ने किया। इस अवसर पर प्रदीप वधावन, संजय कालरा, अनिल महेश्वरी, नीरज मित्तल, डा. संगीता सिंह, पीयूष गर्ग, संदीप गुप्ता, मुकुल गर्ग, राधेश्याम गुप्ता, विजय कुमार, संजय, भारत, प्रदीप अग्रवाल, ऋषिपाल सैनी, दीपाली, ममता आदि उपस्थिति रहे।

इलैक्ट्रॉनिक चित्र न जान कर अनुमति नही दये।

विस्तार से जानकारी दी। प्रदर्शन में हानि के लिए कहा। उन्होंने बताया कि आरओ टबल लगेई जाएंगी। इस दौरान

उद्घाटन

नैनो विज्ञान और प्रौद्योगिकी में नवीनतम प्रगति को प्रदर्शित करना है उद्देश्य

## सीबीआरआई में दो दिवसीय 'नैनो जत्था' का शुभारंभ

रुड़की, 12 जुलाई (अनिल) : सीएसआईआर-सीबीआरआई में सेंटर फॉर नैनो एंड सॉफ्ट मैटर साइंसेज (सीईएनएस), बेंगलुरु के सहयोग से 'नैनो जत्था' नामक महत्वपूर्ण कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। 'नैनो जत्था' के आयोजन का उद्देश्य नैनो विज्ञान और प्रौद्योगिकी में नवीनतम प्रगति को प्रदर्शित करना है।

सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने रवींद्रनाथ टैगोर ऑडिटोरियम में उद्घाटन सत्र का शुभारंभ दीप प्रज्वलन के साथ किया। इस अवसर पर संस्थान निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने कहा कि नैनो प्रौद्योगिकी के माध्यम से बहुत सी समस्याओं का हल निकाला जा सकता है। हमारा संस्थान विभिन्न प्रौद्योगिकियों के अनुसंधान एवं विकास

में नैनो प्रौद्योगिकी का उपयोग कर रहा है। प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने कहा कि नैनो प्रौद्योगिकी में दुनिया को बदलने की ताकत है। प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने सेंटर फॉर नैनो एंड सॉफ्ट मैटर साइंसेज (सीईएनएस), बेंगलुरु के निदेशक प्रो. बीएलवी प्रसाद का इस नैनो जत्था के आयोजन में नोडल अधिकारी की महत्वपूर्ण भूमिका की प्रशंसा की।

सेंटर फॉर नैनो एंड सॉफ्ट मैटर साइंसेज (सीईएनएस), बेंगलुरु के डॉ. आशुतोष सिंह ने सीईएनएस के बारे में विस्तार से जानकारी दी। कार्यक्रम के समन्वयक एवं मुख्य वैज्ञानिक डा. एसआर कराडे ने इस दो दिवसीय कार्यक्रम की रूपरेखा से अवगत कराया। कार्यक्रम का संयोजन संस्थान के मुख्य वैज्ञानिक नदीम अहमद द्वारा



कार्यक्रम में मंचासीन अतिथि। (दोषक)

किया गया और इंजीनियर आशीष पिप्पल ने धन्यवाद प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में संस्थान के वैज्ञानिकों,

विभिन्न क्षेत्रों के छात्रों, परियोजना स्टार, शोधार्थी सम्मिलित हुए। इस अवसर पर डा. पीसी थपलियाल, डा.

प्रदीप चौहान, सौरभ जैन, डा. ताबीश आलम, सिद्धार्थ सिंह, राजीव शर्मा, मेहर सिंह, समीर आदि उपस्थित रहे।

## सीबीआरआई में शुरू हुआ दो दिवसीय नैनो जत्था कार्यक्रम

» मद्रलैंड संवाददाता

रुड़की। सीएसआईआर-सीबीआरआई में सेंटर फॉर नैनो एंड सॉफ्ट मैटर साइंसेज, बेंगलुरु के सहयोग से हानैनो जत्था नामक कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। हानैनो जत्था आयोजन का उद्देश्य नैनो विज्ञान और प्रौद्योगिकी में नवीनतम प्रगति को प्रदर्शित करना है। नैनो जत्था कार्यक्रम का उद्घाटन सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रोफेसर आर. प्रदीप कुमार द्वारा रवींद्रनाथ टैगोर ऑडिटोरियम में किया गया। उद्घाटन सत्र का शुभारंभ दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। संस्थान निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने कहा कि नैनो प्रौद्योगिकी के माध्यम से बहुत

सी समस्याओं का हल निकाला जा सकता है। हमारा संस्थान विभिन्न प्रौद्योगिकियों के अनुसंधान एवं विकास में नैनो प्रौद्योगिकी का उपयोग कर रहा है। प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने कहा कि नैनो प्रौद्योगिकी में दुनिया को बदलने की ताकत है। प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने सेंटर फॉर नैनो एंड सॉफ्ट मैटर साइंसेज, बेंगलुरु के निदेशक प्रो. बीएलवी प्रसाद की नैनो जत्था के आयोजन में नोडल अधिकारी की महत्वपूर्ण भूमिका की प्रशंसा की। सेंटर फॉर नैनो एंड



सॉफ्ट मैटर साइंसेज (सीईएनएस), बेंगलुरु के डॉ. आशुतोष सिंह ने सीईएनएस के बारे में विस्तार से जानकारी दी। इस दो दिवसीय कार्यक्रम के समन्वयक एवं मुख्य वैज्ञानिक डा. एसआर कराडे ने कार्यक्रम की रूपरेखा से अवगत कराया। कार्यक्रम का संयोजन संस्थान के मुख्य वैज्ञानिक नदीम अहमद द्वारा किया गया। इंजीनियर आशीष पिप्पल ने धन्यवाद प्रस्तुत किया। नैनो जत्थे में प्रसिद्ध वैज्ञानिकों के आकर्षक व्याख्यान, वीडियो शो,

दर्शकों के साथ संवाद सत्र और एक ज्ञानवर्धक प्रदर्शनी शामिल होगी। प्रदर्शनी में लाइव प्रदर्शन होंगे जो नैनो विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विभिन्न पहलुओं को स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं। कार्यक्रम में संस्थान के वैज्ञानिकों, विभिन्न क्षेत्रों के छात्रों, परियोजना स्टॉफ, शोधार्थी शामिल हुए इस अवसर पर डॉ. पीसी थपलियाल, डॉ. प्रदीप चौहान, सौरभ जैन, डॉ. ताबीश आलम, सोज अलेगेंडर, सिद्धार्थ सिंह, राजीव शर्मा, मेहर सिंह, समीर आदि उपस्थित रहे।

# SCIENCE REPORTER

Exploring Science & Technology

[Home](#) [About Us](#) [COVID-19](#) [Features](#) [S&T News](#) [Previous Issues](#) [Competitions](#) [Subscribe](#)

## Highlights

Unveiling the Genius behind Hepatitis C Virus Breakthroughs in Conversation with

Charles M Rice

## CSIR Initiates the "One Week One Theme" Campaign

Staff



After the successful conduct of the "One Week One Lab" programme by all CSIR laboratories in 2023, Hon'ble Dr Jitendra Singh, the Minister of State (Independent Charge) for Science and Technology and Vice President of CSIR launched the "One Week One Theme" (OWOT) campaign by unveiling its logo on 24 June 2024 at India Habitat Centre, New Delhi. Built on the achievements of the "One Week One Lab", "One Week One Theme" is the brainchild of Dr Jitendra Singh to bring together the efforts at CSIR labs working on similar themes/projects. This will help reduce the overlapping of work, making the best use of the resources.

The main objective of the "One Week One Theme" programme is to highlight the innovative approaches and technological developments of all CSIR labs. The weeklong activities under OWOT focus on each of the eight themes of CSIR. Over the years, CSIR has undertaken various initiatives to transform laboratory research into marketable, value-added...[read more on NOPR](#)

# Dr. Jitendra Singh Launches "One Week One Theme" (OWOT) Campaign

*Dr. Jitendra Singh on June 24, launched "One Week One Theme" (OWOT) campaign showcasing recent success stories of India in different streams of science and technology.*

Posted by [trilok](#) Published On June 25th, 2024



Union Minister of State (Independent Charge) for Science and Technology, Minister of State (Independent Charge) for Earth Sciences, MoS PMO, Department of Atomic Energy, Department of Space, Personnel, Public Grievances and Pensions **Dr. Jitendra Singh on June 24**, launched **"One Week One Theme" (OWOT)** campaign showcasing recent success stories of India in different streams of science and technology.

## **Aim of the campaign**

Dr. Jitendra Singh said, **Our aim** is to integrate the efforts of all CSIR labs working on similar projects to reduce overlap and optimize resources. 'One Week One Theme' initiative under Council for Scientific and Industrial Research (CSIR) aims to make innovation inclusive for all. Pertinent to mention, 'One week One Theme' is the brainchild of Minister Dr. Jitendra Singh. 'OWOT' is built on the **legacy and success of the 'One Week One Lab' (OWOL)** initiative started last year. OWOL was also made possible under his guidance.

- The **Science and Technology minister** highlighted the aim and objective behind this initiative is to **create awareness among citizens** about the progress and development in Labs, to benefit them giving them new avenues and opportunities for employment, empowering stakeholders such as **MSMEs, Startups, SHGs, scientists**, researchers by integration and collaboration with Industry.

सीएसआईआर-सीबीआरआई में योग करते निदेशक प्रोफेसर आर प्रदीप कुमार, एसके नेगी, एसके सिंह, हरपाल सिंह व अन्य। -संवाद

[illegible]

— — — — —

## CSIR-CBRI Hosts Industry Meet on Sustainable Construction Using C&D Waste

The Industry Meet organized by CSIR-CBRI emphasized the urgent need for proper coordination, accountability, and awareness in the effective collection, segregation, recycling, and utilization of Construction and Demolition (C&D) wastes, bringing together 75 professionals (government and industry people) to discuss sustainable construction practices and address the challenges posed by India's rapidly growing C&D waste.



The event, held at the India Habitat Center in New Delhi, was graced by esteemed dignitaries including Ar. Rajesh K. Kaushal, Director General of CPWD, as the Chief Guest, and Dr. Sanjay Pant, Deputy Director General of BIS, as the Guest of Honour. In his inaugural address, Ar. Kaushal emphasized the importance of sustainable construction practices that leverage C&D waste, while Dr. Pant highlighted critical standards and regulatory frameworks necessary for sustainable construction, underlining the need for adherence to guidelines for environmental sustainability.

Prof. R. Pradeep Kumar, Director of CSIR-CBRI, welcomed participants and stressed the importance of achieving 100% utilization of C&D waste to foster a circular economy. Dr. D.P. Kanungo provided a comprehensive overview of the meet, outlining its agenda and objectives. The event was coordinated by Prof. S.K. Singh, ensuring smooth execution and engagement of participants.

The sustainable management of C&D waste has become a pressing concern in India due to its large volume, negative environmental and societal impacts, lack of recycling infrastructure, and inadequate stakeholder coordination. Despite the annual demand of 45,000 - 50,000 million tonnes of aggregates for infrastructure projects (roads, railways, etc.), and the proven quality of recycled C&D materials, India recycles only 1% of its C&D waste, according to the Center for Science and Environment.



In response to this challenge, the Government of India introduced the Construction and Demolition Waste Management Rules in 2016, the first initiative of its kind to specifically address C&D waste. These rules mandate local authorities to use recycled C&D materials in municipal and government contracts, establish waste management facilities, and encourage proper waste segregation at the source and its channelling to recycling facilities. However, implementation remains inconsistent across states and cities due to financial constraints, lack of technical expertise, and limited public awareness.

Conference discussions revealed that although India has over 70 recycling facilities for C&D debris, the unavailability of waste at plant sites is a concern due to transportation costs and illegal dumping. The supply chain costs of waste acquisition, transportation, and processing are significant challenges owing to the lack of stringent regulations and enforcement.



The Industry Meet featured three panel discussions covering various dimensions of C&D waste management and sustainable construction practices. Experts in the respective fields, including Dr. Shailesh K. Agrawal, ED of BMTPC; Dr. L.P. Singh, DG of NCCBM; and Dr. S.R. Karade, Chief Scientist of CSIR-CBRI, moderated these discussions, fostering insightful exchanges and idea-sharing among participants.

Estimates indicate that India's construction industry generates about 150-500 million tonnes of C&D waste annually, posing challenges such as unauthorized dumping, lack of disposal space, and environmental hazard. Rapid urbanization, booming construction activities, and subsequent demolition processes significantly contribute to this waste generation.



Additional issues include the lack of incentives and awareness about recycling techniques, unavailability of guidelines and enforcement rules, and inadequate coordination among stakeholders (C&D contractors, government engineers, architects, RMC producers, recycling plant owners, etc.). There is also a gap between policy formulation and implementation with local bodies often facing challenges due to limited funds, lack of expertise, and insufficient enforcement mechanisms. Awareness about the importance of C&D waste management and recycling is low among stakeholders, leading to illegal dumping and non-compliance with regulations.



A key suggestion from the event was the creation of a portal for accountability and awareness, where government officials and stakeholders can update information regarding C&D waste generation, utilization, techniques, and recycling plants, making it accessible to all. Proper coordination among stakeholders and increased awareness are essential for the effective collection, segregation, recycling, and utilization of C&D wastes.

Overall, the Industry Meet served as a vital platform for stakeholders to converge, exchange knowledge, and chart a path towards sustainable construction practices leveraging C&D waste effectively.

## सीबीआरआई में दिया पर्यावरण संरक्षण की महत्ता पर जोर



» मदरलैंड संवाददाता

रुड़की। सीबीआरआई रुड़की में विश्व पर्यावरण दिवस पर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। उत्तराखंड राज्य आपदा न्यूनीकरण प्राधिकरण के सचिव आईएस डॉ. रंजीत कुमार सिन्हा ने दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। सीबीआरआई के वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक डॉ. नीरज जैन ने सभी के साथ विश्व पर्यावरण दिवस से संबंधित जानकारी साझा की तथा कार्यक्रमों की रूपरेखा प्रस्तुत की। संस्थान के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप

कुमार ने अपने अध्यक्षीय भाषण में बताया कि इस बार पर्यावरण दिवस की थीम, लैंड रेस्टोरेशन डिजिटलफिकेशन और ड्राफ्ट रिसिलियंस है। इसलिए जो जमीन बंजर हो गई है या जो पानी की कमी से रेगिस्तान बन रही है या सूखा पड़ रहा है उसे पुनः ठीक करने की आवश्यकता है। ताकि हम आने वाली पीढ़ियों को एक हरा-भरा प्लेनेट दे सकें। यह तभी संभव हो पाएगा जब हम पर्यावरण संरक्षण की महत्ता को समझेंगे और जलवायु परिवर्तन से होने वाले नुकसान को बचाने की दिशा में काम करेंगे। मुख्य अतिथि डॉ. रंजीत कुमार सिन्हा ने

बताया कि बच्चा जब जन्म लेता है तभी से उसे ऑक्सीजन की जरूरत पड़ती है और हम जीवन भर इस पर निर्भर रहते हैं। अतः मनुष्य का जन्म और जीवन पर्यावरण से जुड़ा है और उसे बचाने के लिए हमें पेड़ों की गुलामी भी करनी पड़े तो उसमें कोई गलत बात नहीं है। हमें अधिक से अधिक पेड़ लगाकर पर्यावरण को बचाना है। इस अवसर पर सीबीआरआई ने यूएसडीएमए के साथ एक समझौता पत्र पर भी हस्ताक्षर किया। जिसके अंतर्गत दोनों सरकारी तंत्र आपदा प्रबंधन से संबंधित समस्याओं पर भविष्य में मिलकर काम करेंगे। संस्थान के पूर्व वैज्ञानिक डॉ. शान्तनु सरकार ने निदेशक उत्तराखंड भूस्खलन न्यूनीकरण एवं प्रबंधन केंद्र के निदेशक के तौर पर समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। इस दौरान संस्थान द्वारा निदेशक के नेतृत्व में करीब 200 से अधिक फलदार वृक्ष कैपस में लगाए गए। डॉ. आरके वर्मा ने मुख्य अतिथि का परिचय प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के अंत में डॉ. सौमित्र मैती, प्रधान वैज्ञानिक ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में संस्थान के मुख्य वैज्ञानिक एसके नेगी, डॉ. हरपाल सिंह, डॉ. डीपी कानूनगो, डॉ. एसआर कराडे, डॉ. अजय चौरसिया, डॉ. लीना चौरसिया, डॉ. चन्दन मीना, डॉ. नवल किशोर, मेहर सिंह, अर्पण महेश्वरी आदि उपस्थित रहे।

# सीबीआरआई में मना प्रौद्योगिकी दिवस, तकनीक पर दिया जोर स्कूली बच्चों, भावी अभियंताओं ने किया प्रयोगशालाओं का भ्रमण



» मदनलाल खन्ना

रुड़की। केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान में शनिवार को राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस मनाया गया। संस्थान के रविंद्र नाथ टैगोर सभागार में आयोजित समारोह में आईआईटी मद्रास के प्रो. सीबीआर मूर्ति मुख्य अतिथि तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में मुख्य महा प्रबंधक, एनआरडीसी, कमांडर (सेन) अमित रस्तोगी रहे। अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन कर समारोह का शुभारम्भ किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि प्रो. मूर्ति ने कहा कि प्रौद्योगिकी दिवस

हमारे देश में फोकस करने तथा अपनी प्रौद्योगिकियों को प्रदर्शित करके जगत्मानस तक पहुंचाने का अवसर देता है। विशिष्ट अतिथि कमांडर अमित रस्तोगी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि मैं देश के विकास में सीबीआरआई के महत्व को बहुत मानता हूँ। उन्होंने कहा कि सीबीआरआई और उद्यमी एक-दूसरे के पूरक हैं। हमें उद्योगों की अपेक्षाओं और जरूरतों के अनुसार प्रौद्योगिकी विकसित करनी होगी। संस्थान के निदेशक प्रो. आर प्रदीप कुमार ने मुख्य अतिथि का परिचय प्रस्तुत किया। संस्थान के निदेशक प्रो. आर

प्रदीप कुमार ने कहा कि आज के दिन हमें यह देखना है कि पिछले वर्ष में हमने क्या पाया है। उन्होंने कहा कि देश ने हमें देश की मूलभूत आवश्यकताओं में से भवन अनुसंधान का जिम्मा दिया है। हमें अपने इस दायित्व को बेहतर ढंग से निभाना है। प्रौद्योगिकी दिवस आयोजन समिति के अध्यक्ष डॉ. डीपी कानुनगो ने राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस मनाए जाने के बारे में जानकारी दी। इस अवसर पर आर्मी पब्लिक स्कूल-2, मारवाडी कन्याशाला पाठशाला तथा क्वार्टर यूनिवर्सिटी के 190 से अधिक छात्रों ने अपने अध्यापकों एवं प्रोफेसरों के साथ संस्थान की प्रयोगशालाओं का भ्रमण किया तथा संस्थान द्वारा विकसित अनेक प्रौद्योगिकियों से स्वरूप प्राप्त। समारोह में संस्थान द्वारा विकसित प्रौद्योगिकियों के लाइसेंसधारियों का भी अभिर्नंदन किया गया। संस्थान के वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक डॉ. प्रदीप चौहान के संचालन में आयोजित कार्यक्रम में प्रशासनिक अधिकारी परवेश चन्द, वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक डॉ. पीकेएस चौहान, एस्के नेमी, डॉ. चन्दन स्वयंसेवक मीना, डॉ. वीणा चौधरी, नवीन निशांत, हुमैया, डॉ. अचल मित्तल, डॉ.एसआर कराडे, डॉ. हरपाल सिंह, नदीम अहमद, विनीत सेनी, गाफरी, देवदत्ता घोष, अमनीश कुमार, अमन कुमार, अर्णव महेश्वरी, मेहर सिंह, राजेश शर्मा, हुमैया अतहर आदि उपस्थित रहे।



रुड़की के सीबीआरआई में शनिवार को आयोजित कार्यक्रम का मुख्य अतिथि प्रो. मदनलाल खन्ना।

## लक्ष्यों पर फोकस करने का मौका देता है प्रौद्योगिकी दिवस

रुड़की, संवाददाता। सीबीआरआई में शनिवार को राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस रविंद्र नाथ टैगोर सभागार में कार्यक्रम हुआ। आईआईटी मद्रास के प्रो. सीबीआर मूर्ति को मुख्य अतिथि आमंत्रित किया गया। विशिष्ट अतिथि के रूप में एनआरडीसी से सेवानिवृत्त मुख्य महाप्रबंधक कमांडर अमित रस्तोगी मौजूद रहे। मुख्य अतिथि प्रोफेसर सीबीआर मूर्ति ने कहा कि प्रौद्योगिकी दिवस हमें अपने लक्ष्यों पर फोकस करने का अवसर देता है। ताकि हम प्रौद्योगिकियों को विकसित करने पर ध्यान दें सकें। साथ ही हमें इस दिन अपनी प्रौद्योगिकियों को प्रदर्शित करके जगत्मानस तक पहुंचा सकें। संस्थान के निदेशक प्रो. आर प्रदीप कुमार ने मुख्य अतिथि का परिचय प्रस्तुत किया। विशिष्ट अतिथि कमांडर अमित रस्तोगी ने कहा कि मैं देश के विकास में सीबीआरआई के महत्व को बहुत मानता हूँ। हमें उद्योगों की अपेक्षाओं और जरूरतों के अनुसार प्रौद्योगिकी विकसित करनी

होगी। संस्थान के निदेशक प्रो. आर प्रदीप कुमार ने कहा कि आज के दिन हमें यह देखना है कि पिछले वर्ष में हमने क्या पाया है। उन्होंने कहा कि देश ने हमें देश की मूलभूत आवश्यकताओं में से एक आवश्यकता का जिम्मा दिया है। हमें अपने इस दायित्व को बेहतर ढंग से निभाना है। इस दौरान आयोजन समिति के अध्यक्ष डॉ. डीपी कानुनगो, संस्थान के वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक डॉ. प्रदीप चौहान, प्रशासनिक अधिकारी परवेश चन्द, डॉ. अचल मित्तल, डॉ. एसआर कराडे, डॉ. हरपाल सिंह, नदीम अहमद, विनीत सेनी, गाफरी, देवदत्ता घोष, अमनीश कुमार, अमन कुमार, अर्णव महेश्वरी, मेहर सिंह, राजेश शर्मा, हुमैया अतहर आदि उपस्थित रहे। शौक पर आयोजित प्रयोगशालाओं का भ्रमण किया।

रुड़की जागरण

### भारत के भविष्य के लिए नवाचार और उद्यमिता अहम

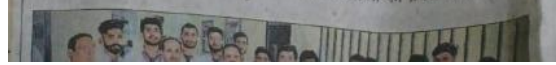
राज्यपाल ने कहा, नए युग की दहलीज पर खड़ा है भारत

राज्यपाल ने कहा कि भारत के सुनहरे भविष्य को अंधार देने के लिए नवाचार, तकनीक और उद्यमिता का वातावरण को बढ़ावा देना है। आज भारत नए युग की दहलीज पर खड़ा है, जहां पर लोग अविश्वसनीय इतिहास और गतिशीलता के अगली पीढ़ी की शक्ति को अपनी ओर खींच रहे हैं। जो लोगों को प्रेरित करेगा और बदले के लिए प्रेरित करेगा। कहा कि बदले से रस्टोगी तक की यात्रा को सफल बनाने के लिए युवा मूलक मानवसंसाधन को बढ़ावा देना है।

हाई स्कूल और आउटलेट में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और ब्लॉकचेन को प्रदर्शित करने की दिना में जो रहे बच्चों पर खुशी जताते हैं। इस अवसर पर सीबीआईआई के निदेशक प्रो. मदनलाल खन्ना ने कहा कि प्रौद्योगिकी दिवस के माध्यम से हमें अपने लक्ष्यों पर फोकस करने का अवसर देता है। ताकि हम प्रौद्योगिकियों को विकसित करने पर ध्यान दें सकें। साथ ही हमें इस दिन अपनी प्रौद्योगिकियों को प्रदर्शित करके जगत्मानस तक पहुंचा सकें। संस्थान के निदेशक प्रो. आर प्रदीप कुमार ने मुख्य अतिथि का परिचय प्रस्तुत किया। विशिष्ट अतिथि कमांडर अमित रस्तोगी ने कहा कि मैं देश के विकास में सीबीआरआई के महत्व को बहुत मानता हूँ। हमें उद्योगों की अपेक्षाओं और जरूरतों के अनुसार प्रौद्योगिकी विकसित करनी

राज्यपाल ने कहा कि भारत के सुनहरे भविष्य को अंधार देने के लिए नवाचार, तकनीक और उद्यमिता का वातावरण को बढ़ावा देना है। आज भारत नए युग की दहलीज पर खड़ा है, जहां पर लोग अविश्वसनीय इतिहास और गतिशीलता के अगली पीढ़ी की शक्ति को अपनी ओर खींच रहे हैं। जो लोगों को प्रेरित करेगा और बदले के लिए प्रेरित करेगा। कहा कि बदले से रस्टोगी तक की यात्रा को सफल बनाने के लिए युवा मूलक मानवसंसाधन को बढ़ावा देना है।

हाई स्कूल और आउटलेट में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और ब्लॉकचेन को प्रदर्शित करने की दिना में जो रहे बच्चों पर खुशी जताते हैं। इस अवसर पर सीबीआईआई के निदेशक प्रो. मदनलाल खन्ना ने कहा कि प्रौद्योगिकी दिवस के माध्यम से हमें अपने लक्ष्यों पर फोकस करने का अवसर देता है। ताकि हम प्रौद्योगिकियों को विकसित करने पर ध्यान दें सकें। साथ ही हमें इस दिन अपनी प्रौद्योगिकियों को प्रदर्शित करके जगत्मानस तक पहुंचा सकें। संस्थान के निदेशक प्रो. आर प्रदीप कुमार ने मुख्य अतिथि का परिचय प्रस्तुत किया। विशिष्ट अतिथि कमांडर अमित रस्तोगी ने कहा कि मैं देश के विकास में सीबीआरआई के महत्व को बहुत मानता हूँ। हमें उद्योगों की अपेक्षाओं और जरूरतों के अनुसार प्रौद्योगिकी विकसित करनी



जरूरतों के अनुसार प्रौद्योगिकी विकसित करनी होगी : रस्तोगी

सीबीआईआई में शनिवार को आयोजित कार्यक्रम का मुख्य अतिथि प्रो. मदनलाल खन्ना।

हाई स्कूल और आउटलेट में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और ब्लॉकचेन को प्रदर्शित करने की दिना में जो रहे बच्चों पर खुशी जताते हैं। इस अवसर पर सीबीआईआई के निदेशक प्रो. मदनलाल खन्ना ने कहा कि प्रौद्योगिकी दिवस के माध्यम से हमें अपने लक्ष्यों पर फोकस करने का अवसर देता है। ताकि हम प्रौद्योगिकियों को विकसित करने पर ध्यान दें सकें। साथ ही हमें इस दिन अपनी प्रौद्योगिकियों को प्रदर्शित करके जगत्मानस तक पहुंचा सकें। संस्थान के निदेशक प्रो. आर प्रदीप कुमार ने मुख्य अतिथि का परिचय प्रस्तुत किया। विशिष्ट अतिथि कमांडर अमित रस्तोगी ने कहा कि मैं देश के विकास में सीबीआरआई के महत्व को बहुत मानता हूँ। हमें उद्योगों की अपेक्षाओं और जरूरतों के अनुसार प्रौद्योगिकी विकसित करनी

बच्चों ने किया संस्थान की प्रयोगशालाओं का भ्रमण

इस अवसर पर आर्मी पब्लिक स्कूल-2, मारवाडी कन्याशाला पाठशाला, क्वार्टर यूनिवर्सिटी के 190 से अधिक छात्रों ने अपने अध्यापकों के साथ संस्थान की कई प्रयोगशालाओं का भ्रमण किया। इस प्रौद्योगिकी दिवस का आयोजन संस्थान के वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक डॉ. प्रदीप चौहान, डॉ. चन्दन स्वयंसेवक मीना, डॉ. वीणा चौधरी, नवीन निशांत, हुमैया आदि ने किया। इस अवसर पर डॉ. अचल मित्तल, डॉ. एसआर कराडे, डॉ. हरपाल सिंह, नदीम अहमद, विनीत सेनी, गाफरी, देवदत्ता घोष, अमनीश कुमार, अमन कुमार, अर्णव महेश्वरी, मेहर सिंह, राजेश शर्मा, हुमैया अतहर आदि उपस्थित रहे।

एस्के नेमी ने परिचय दिया। संस्थान के निदेशक प्रो. आर प्रदीप कुमार ने कहा कि आज के दिन हमें यह देखना है कि पिछले वर्ष में हमने क्या पाया है। उन्होंने कहा कि देश ने हमें देश की मूलभूत आवश्यकताओं में से एक आवश्यकता का जिम्मा दिया है।

# सर्वे करने पहुंची रुड़की की टीम

सिरमौर जिले में भूस्खलन और भूमि धंसाव को लेकर 22 स्थलों का करेगी दौरा

संवाद न्यूज एजेंसी

नाहन। वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान, रुड़की इतराखंड से मुख्य वैज्ञानिक एवं आचार्य डॉ. डीपी कानूनगो व उनकी वैज्ञानिक टीम जिला सिरमौर में एक सप्ताह के लिए पहुंची है। टीम की ओर से समस्त उपमंडलों पर चिह्नित 22 अति संवेदनशील स्थलों की प्रारंभिक अध्ययन व सर्वेक्षण कार्य किया जाना है ताकि इन स्थलों व उनके आसपास बसी हुई जन आबादी की भविष्य में सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके।

उपस्थित सिरमौर सुमित खिमटा ने बताया कि टीम की ओर से शुरूआत करते हुए उपमंडल पाँवटा साहिब, काफोटा व पच्छाद में चिह्नित स्थलों का सर्वेक्षण व प्रारंभिक अध्ययन कार्य किया गया है। बता दें कि गत वर्ष जिला सिरमौर में मानसून में विभिन्न स्थलों पर खादल फटने, भूस्खलन



केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की की टीम चिह्नित स्थलों का दौरा करते हुए। (कृप)

और भूमि धंसाव के मामले संज्ञान में आए थे जिससे जानमाल एवं पर्यावरण को भारी नुकसान सामने आया था। जिला प्रशासन की ओर से समस्त उपमंडलों से इस संदर्भ में जानकारी मांगी गई तथा जिसमें की समस्त उपमंडलों की ओर से लगभग 22 ऐसे भूस्खलन और भूमि धंसाव के

स्थलों को चिह्नित करके प्रशासन को भेजा। इसमें उपमंडल नाहन में ग्राम पंचायत नेहली भीड़ा के अंतर्गत ग्राम मलगांव, ग्राम जरग, पंचायत, जरग, ग्राम अगड़ीवाला, ग्राम पंचायत, म्जार, ग्राम तिरमाली दरार, ग्राम पंचायत, जिड़ला, उप मंडल-पच्छाद में ग्राम पंचायत नैना टिबकर (ग्राम मझगांव

शामलाटी) के अंतर्गत थलपा, ग्राम पंचायत नेरी नवा के अंतर्गत भ्रमण स्थल लाना रीवा, ग्राम पंचायत नेरी नवा के अंतर्गत चुल्लार, उप मंडल-राजगढ़ के तहत ग्राम पंचायत शरणा के अंतर्गत शलापा के पास स्थल का निरीक्षण करेगी।

इसके अलावा ग्राम पंचायत, कोटला बंसी के अंतर्गत शलेच कांची, ग्राम पंचायत, कोठिवा शरार (ग्राम कोट-धनगौर) के अंतर्गत कोट, खैरी-ग्राम पंचायत, टिम्बर के अंतर्गत वांक, उपमंडल शिलाई के तहत ग्राम पंचायत, मिस्ताह के अंतर्गत आने वाला स्थल गवाली, बिंदोली निकट गुमराह (सोलन-मोनस रोड) के अंतर्गत ग्राम पंचायत, अजरैली व उप मंडल-संगड़ह के तहत ग्राम पंचायत, रजाना के अंतर्गत स्थल उंगरकांडो, ग्राम पंचायत, खौनाल काकोम के अंतर्गत स्थल खौनाल, ग्राम पंचायत, सांगना के अंतर्गत भ्रमण स्थल गट्टा मंडवाच भी टीम जाएगी।



रुड़की सीबीआरआई में शनिवार को स्वास्थ्य शिविर का उद्घाटन करते अतिथि।

## सीबीआरआई में स्वास्थ्य परीक्षण कैंप

रुड़की। सीबीआरआई में चार दिवसीय स्वास्थ्य परीक्षण कैंप का शनिवार को समापन हो गया। फिनोम इंडिया- सीएसआईआर हेल्थ कोहोर्ट नॉलेजबेस प्रोजेक्ट के अन्तर्गत इसका आयोजन किया गया था। कैंप का उद्घाटन मुख्य वैज्ञानिक एसके नेगी ने किया। स्वास्थ्य परीक्षण के अंतर्गत बॉडी कम्पोजिशन एनालिसिस, ब्लड प्रेशर, ब्लड केमिस्ट्री, लिवर फाइब्रो स्कैन, ईसीजी की गई।

from Jaunpur

Neha Shukla  
@timesgroup.com

**Lucknow:** Bahujan Samaj Party is all set to add more spice to the electoral battle in Jaunpur by fielding local strongman and former MP Dhananjay Singh's wife Shrikala from the seat. Earlier, Samajwadi Party had fielded former minister and NRHM scam accused Babu Singh Kushwaha to face BJP's Kripshankar Singh, who was a minister in Congress-led Maharashtra govt.



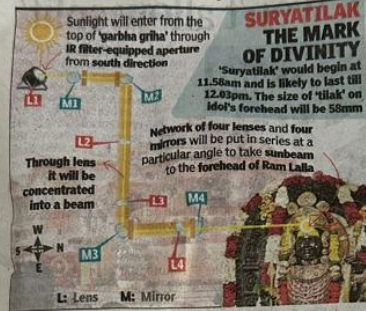
Shrikala is the chairperson of Jaunpur zila panchayat

Kushwaha was a confidante of BSP chief Mayawati before he was arrested for his role in the NRHM scam in 2012.

While Shrikala's candidature is yet to be officially announced, reliable sources told TOI that she had been given the nod by the top party leadership. A picture in which she is standing in front of BSP state headquarters in Lucknow went viral on Monday. Shrikala Reddy, as she was known before marriage, comes from an industrialist family from the South. At present, she is the chairperson of Jaunpur zila panchayat from Apna Dal (S), an alliance partner of the BJP. It was Dhananjay who was planning to contest elections from Jaunpur till he was convicted in a case related to abduction and is now serving a seven-year jail term. Political analysts say that Shrikala's candidature may split the Rajput vote in the constituency and make it a keen triangular contest. Dhananjay Singh has been a former BSP MP from Jaunpur.

**Samal Lari is BSP pick**

## No electronic device or battery used in Ram's 'Suryatilak'



Continued from P 1

The decision would protect the deity from exposure to unwanted heat and irritation.

While muhurta to celebrate the birth of Ram Lalla has been fixed at 12pm and 40 seconds on April 17, the 'Suryatilak' would begin at 11.58am and is expected to last till 12.03 pm.

On Monday, trials were conducted yet again at the Ram temple. The size of the tilak on the forehead of the idol

### TRIALS CONDUCTED AT RAM TEMPLE

would be 58 millimetres.

Bengaluru-based Indian Institute of Astrophysics and private company Optics & Allied Engg (Optica) have collaborated on the project with the group of scientists from CBRI.

Led by Dr SK Panigrahi from CBRI, Dr RS Bisht, professor R Pradeep Kumar among other experts worked on the project. The team from CBRI arrived in Ayodhya ear-

ly on Monday and would remain stationed here till April 17 evening.

The opto-mechanical system would provide the best results during the 'Suryatilak' for a period of 3.5 minutes at the centre of the lord's forehead, while post that, concentrated light would start fading a bit.

Comprising four mirrors and four lenses that have been adjusted inside the brass pipes, black powder has been coated on the inner surface of the pipes, elbows and joints to avoid scattering of the sunlight.

Facing the south direction, the first tilt mechanism placed over the slab on the first floor would divert the sun rays towards the north before being deflected towards the ground floor of the sanctum sanctorum.

Forehead of Ram Lalla faces the east direction. No battery or electronic device has been used in the entire system and it could be operated manually with slight adjustments year after year to organise 'Suryatilak' of the lord on Ram Navami.

## Be alert for Ram Navami: DGP to cops

TIMES NEWS NETWORK

**Lucknow:** Director general of police (DGP) Prashant Kumar has issued comprehensive guidelines to ensure effective police management and traffic arrangements for the upcoming Chaitra Ram Navami celebrations.

The directives aim to maintain peace and order during the festivities and are addressed to all zonal additional director generals of police, police commissioners, inspector general of police, deputy inspector general of police and senior superintendents of police across the state. Kumar said that following a review of past festival records, any existing or historical problems should be promptly addressed. Designated police officers with magistrates are in-



An artist giving final touch to an idol of Lord Ram

structed to visit problematic areas and resolve issues. "All gazetted officers are mandated to visit sensitive locations, including temples, fairgrounds and procession routes and make necessary arrangements. Vigilance against mischievous elements is emphasised, with a focus on preventive actions," he said.



He said riot control plans must be rehearsed and anti-sabotage checks are to be conducted at key fairgrounds and temple entrances, with men and women police personnel briefed and assigned duties. Firefighting equipment and vehicles must be available and CCTV cameras, videography teams and drones should be deployed as needed.

# All set for 'Surya tilak' of Ram Lalla in Ayodhya on Ram Navami

[Arunav Sinha](#)

16 April, 2024 08:15 pm IST



Follow Us :  

Lucknow, Apr 16 (PTI) At noon on Ram Navami Wednesday, the Sun's rays will fall on the forehead of Ram Lalla in Ayodhya, a 'Surya tilak' of the deity made possible by an elaborate mechanism involving mirrors and lenses.

This would be the first Ram Navami since the consecration of the Ram idol at the new temple, inaugurated by Prime Minister Narendra Modi on January 22. The system was tested by the scientists on Tuesday.

"The basic objective of the Surya Tilak project is to focus a 'tilak' on the forehead of Shri Ram idol on every Shri Ram Navami day. Under the project, sunlight will be brought on the forehead of Lord Ram at noon on Shri Ram Navami in the Chaitra month every year," Dr S K Panigrahi, scientist at CSIR-CBRI Roorkee, who was associated with the project told PTI.

Elaborating further, Panigrahi said, "The position of the Sun changes every year on the day of Shri Ram Navami. Detailed calculations show that the date of Shri Ram Navami repeats every 19 years." According to a senior scientist of Council of Scientific and Industrial Research (CSIR)-Central Building Research Institute (CBRI), Roorkee, the planned tilak size is 58 mm. The exact period of tilak on the forehead centre is about three to three-and-a-half minutes, with two minutes of full illumination, he said.

Meanwhile, a member of Shri Ram Janmabhoomi Teerth Kshetra Trust, Anil Mishra, told PTI, "During the Surya tilak, devotees will be allowed inside the Ram temple. Around 100 LEDs are being put up by the temple trust, and 50 by the government, which will show the Ram Navami celebrations. People will be able to see the celebrations from where they are present." Sharing his personal experience in installing this unique mechanism, Dr D P Kanungo, chief scientist at CSIR-CBRI, Roorkee said, "Actually this is meticulously planned, designed and implemented to achieve utmost accuracy." This will be a testament to our scientific acumen and indigenous technological development to showcase before our countrymen who have all the faith in and support to our scientific community, he said.

Asked what will happen to Surya tilak in case of a cloudy sky, Kanungo said, "That's the limitation. We don't wish to do with artificial light because of the faith and belief of our people." In consultation with the Indian Institute of Astrophysics (IIA), Bangalore, the CSIR-CBRI, Roorkee team has developed a mechanism for a 19-year period to steer the sunlight from the third floor of the temple to the 'garbhagriha'.

The detailed complete design to bring the sunlight to the garbhagriha is developed by CBRI, with the IIA providing consultancy for the optical design.

The fabrication of optical elements, pipes, tilt mechanism and other related components are carried out by Optics and Allied Engg Pvt Ltd (Optica), a Bangalore-based company.

Before implementing the opto-mechanical system in the Ram temple for Surya tilak, a scaled down model suitable for the Roorkee locality has been successfully validated. A full scale model has been successfully validated at Optica site at Bangalore in March 2024.

The CSIR-CBRI, Roorkee team along with IIA Bangalore and Optica Bangalore completed the installation in the first week of April, and repeated trials have been done, Panigrahi said.

Meanwhile, explaining the opto-mechanical system for Surya tilak, Panigrahi said, "The opto-mechanical system consists of four mirrors and four lenses fitted inside the tilt mechanism and piping systems. The complete cover with aperture for the tilt mechanism is placed at the top floor to divert the Sun rays through mirrors and lenses to the garbhagriha." "The final lens and mirror focus the Sun rays to the forehead of Shri Ram facing towards the east. The tilt mechanism is used to adjust the first mirror tilting for sending the Sun rays towards the north direction to the second mirror for making the Surya tilak every year on Shri Ram Navami day," he said.

"All the piping and other parts are manufactured using the brass material. The mirrors and lenses which are used are of very high quality and durable to sustain for a long period.

"The inner surface of pipes, elbows and enclosures are black powder coated to avoid scattering of sunlight. Also at the top aperture, IR (infra red) filter glass is used to restrict the Sun heat wave to fall on the forehead of the idol," Panigrahi said.

He said the team from CSIR-CBRI Roorkee includes Dr S K Panigrahi, Dr R S Bisht, Kanti Solanki, V Chakradhar, Dinesh and Sameer. Prof R Pradeep Kumar (Director, CSIR-CBRI) mentored the project.

From IIA Bangalore side, Dr Anna Purni S (Director IIA), Er S Sriram and Professor Tushar Prabhu are the consultants. Rajinder Kotaria, managing director, Optica, and his team Nagraj, Vivek, Thava Kumar were actively involved in fabrication and installation part. PTI NAV KSS KSS

## All set for 'Surya tilak' of Ram Lalla in Ayodhya on Ram Navami

*PTI Updated: April 16, 2024 20:11 IST*

Lucknow, Apr 16 (PTI) At noon on Ram Navami Wednesday, the Sun's rays will fall on the forehead of Ram Lalla in Ayodhya, a 'Surya tilak' of the deity made possible by an elaborate mechanism involving mirrors and lenses.

This would be the first Ram Navami since the consecration of the Ram idol at the new temple, inaugurated by Prime Minister Narendra Modi on January 22. The system was tested by the scientists on Tuesday.

"The basic objective of the Surya Tilak project is to focus a 'tilak' on the forehead of Shri Ram idol on every Shri Ram Navami day. Under the project, sunlight will be brought on the forehead of Lord Ram at noon on Shri Ram Navami in the Chaitra month every year," Dr S K Panigrahi, scientist at CSIR-CBRI Roorkee, who was associated with the project told PTI.

Elaborating further, Panigrahi said, "The position of the Sun changes every year on the day of Shri Ram Navami. Detailed calculations show that the date of Shri Ram Navami repeats every 19 years."

According to a senior scientist of Council of Scientific and Industrial Research (CSIR)-Central Building Research Institute (CBRI), Roorkee, the planned tilak size is 58 mm. The exact period of tilak on the forehead centre is about three to three-and-a-half minutes, with two minutes of full illumination, he said.

Meanwhile, a member of Shri Ram Janmabhoomi Teerth Kshetra Trust, Anil Mishra, told PTI, "During the Surya tilak, devotees will be allowed inside the Ram temple. Around 100 LEDs are being put up by the temple trust, and 50 by the government, which will show the Ram Navami celebrations. People will be able to see the celebrations from where they are present."

Sharing his personal experience in installing this unique mechanism, Dr D P Kanungo, chief scientist at CSIR-CBRI, Roorkee said, "Actually this is meticulously planned, designed and implemented to achieve utmost accuracy."

This will be a testament to our scientific acumen and indigenous technological development to showcase before our countrymen who have all the faith in and support to our scientific community, he said. Asked what will happen to Surya tilak in case of a cloudy sky, Kanungo said, "That's the limitation. We don't wish to do with artificial light because of the faith and belief of our people."

In consultation with the Indian Institute of Astrophysics (IIA), Bangalore, the CSIR-CBRI, Roorkee team has developed a mechanism for a 19-year period to steer the sunlight from the third floor of the temple to the 'garbhagriha'.

The detailed complete design to bring the sunlight to the garbhagriha is developed by CBRI, with the IIA providing consultancy for the optical design. The fabrication of optical elements, pipes, tilt mechanism and other related components are carried out by Optics and Allied Engg Pvt Ltd (Optica), a Bangalore-based company.

Before implementing the opto-mechanical system in the Ram temple for Surya tilak, a scaled down model suitable for the Roorkee locality has been successfully validated. A full scale model has been successfully validated at Optica site at Bangalore in March 2024.

The CSIR-CBRI, Roorkee team along with IIA Bangalore and Optica Bangalore completed the installation in the first week of April, and repeated trials have been done, Panigrahi said. Meanwhile, explaining the opto-mechanical system for Surya tilak, Panigrahi said, "The opto-mechanical system consists of four mirrors and four lenses fitted inside the tilt mechanism and piping systems. The complete cover with aperture for the tilt mechanism is placed at the top floor to divert the Sun rays through mirrors and lenses to the garbhagriha." "The final lens and mirror focus the Sun rays to the forehead of Shri Ram facing towards the east. The tilt mechanism is used to adjust the first mirror tilting for sending the Sun rays towards the north direction to the second mirror for making the Surya tilak every year on Shri Ram Navami day," he said.

"All the piping and other parts are manufactured using the brass material. The mirrors and lenses which are used are of very high quality and durable to sustain for a long period. "The inner surface of pipes, elbows and enclosures are black powder coated to avoid scattering of sunlight. Also at the top aperture, IR (infra red) filter glass is used to

restrict the Sun heat wave to fall on the forehead of the idol," Panigrahi said. He said the team from CSIR-CBRI Roorkee includes Dr S K Panigrahi, Dr R S Bisht, Kanti Solanki, V Chakradhar, Dinesh and Sameer. Prof R Pradeep Kumar (Director, CSIR-CBRI) mentored the project.

From IIA Bangalore side, Dr Anna Purni S (Director IIA), Er S Sriram and Professor TusharPrabhu are the consultants. RajinderKotaria, managing director, Optica, and his team Nagraj, Vivek, Thava Kumar were actively involved in fabrication and installation part.

# भूकंप के मद्देनजर घर बनाने के तरीके बताए

नाहन में केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की के विशेषज्ञों ने दी उपयोगी जानकारी, संभावित आपदा पर दिए टिप्स

दिव्य हिमाचल व्यूरो - नाहन

जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण सिरमौर द्वारा मंगलवार को नाहन में संभावित आपदा के दृष्टिगत भवनों की रिपेयर और रेट्रोफिटिंग पर एक दिवसीय जिला स्तरीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। अतिरिक्त जिला दंडाधिकारी एलआर वर्मा ने इस कार्यशाला की अध्यक्षता बतौर मुख्यातिथि की। एलआर वर्मा ने इस अवसर पर कहा कि केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की के विशेषज्ञों के मार्गदर्शन में चलाए जा रहे इस एक दिवसीय कार्यशाला से सिरमौर जिला में विस्तृत संभावित



आपदा के दृष्टिगत नए भवनों के निर्माण और पुराने भवनों की रेट्रोफिटिंग पर अच्छी और मूल्यवान जानकारी साझा की गई है। एलआर वर्मा ने कहा कि हिमाचल आज भी चार अप्रैल, 1905 को कांगड़ा में आया भूकंप नहीं भूला है, जिसमें करीब 20 हजार लोगों की जानें गई थी। इसके साथ ही लगभग 50 हजार मवेशी तथा एक लाख से अधिक घर पूरी तरह से नष्ट हो गए थे तथा लाखों

रुपए का नुकसान आंका गया था। उन्होंने कहा कि आज के संदर्भ में यदि बात करें तो जानमाल के नुकसान का वह आंकड़ा लाखों में हो सकता है। एलआर वर्मा ने केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की से आए विशेषज्ञों का सिरमौर पधारने पर आभार जताया और आशा जताई कि उनके मार्गदर्शन में जिला में विभिन्न विभागों में इंजीनियरिंग के क्षेत्र में कार्यरत तकनीकी अधिकारियों को इस कार्यशाला से लाभ मिलेगा। उन्होंने सभी प्रतिभागियों से इस कार्यशाला का लाभ उठाने का आग्रह किया तथा सभी से इस

बहुमूल्य जानकारी को अपने सहयोगियों एवं विभाग के विशेषज्ञों के साथ भी साझा करने का आग्रह किया।

केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की के विशेषज्ञ आर्किटेक्ट एसके नेगी, डा. अजय चौरसिया, आशीष कपूर ने आपदा के दृष्टिगत नए भवनों की निर्माण प्रक्रिया के विभिन्न तकनीकी स्तरों जैसे प्लान, मैटीरियल आदि के बारे में विस्तार से जानकारी प्रदान की। उन्होंने पुराने भवनों की रिपेयर और रेट्रोफिटिंग के बारे में भी विस्तार से बताया। इसके साथ ही उन्होंने भूकंप के दृष्टिगत जिला में विस्तृत

परियोजना रिपोर्ट बनाने के संबंध में भी तकनीकी ज्ञान प्रतिभागियों को प्रदान किया, ताकि एक अच्छी एवं प्रभावशाली विस्तृत परियोजना रिपोर्ट जिला में तैयार की जा सके। जिला राजस्व अधिकारी चेतन चौहान ने कार्यशाला का संचालन करते हुए विभिन्न विषयों पर जानकारी प्रदान की। कार्यशाला में आपदा प्रबंधन, लोक निर्माण, जल शक्ति विभाग, नगर एवं ग्राम योजनाकार, विद्युत विभाग, स्वास्थ्य, हिमड्डा, ग्रामीण विकास, शहरी निकाय, पंचायती राज विभागीय अधिकारियों ने भाग लिया। जानकारी हासिल की।

## नए भवनों की निर्माण प्रक्रिया के बारे में दी विस्तृत जानकारी

नाहन में भवनों की मरम्मत और निर्माण तकनीक पर हुई कार्यशाला



नाहन में जिला स्तरीय कार्यशाला की अध्यक्षता करते अतिरिक्त जिला दंडाधिकारी एलआर वर्मा। संवाद

संवाद न्यूज एजेंसी

नाहन। जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण सिरमौर ने मंगलवार को नाहन में संभावित आपदा के दृष्टिगत भवनों की मरम्मत और निर्माण तकनीक पर एक दिवसीय जिला स्तरीय कार्यशाला का आयोजन किया।

इसकी अध्यक्षता बतौर मुख्यातिथि अतिरिक्त जिला दंडाधिकारी एलआर वर्मा ने की।

केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की के विशेषज्ञों के मार्गदर्शन में चलवाई जा रही इस कार्यशाला से जिले में विस्तृत संभावित आपदा के दृष्टिगत नए भवनों के निर्माण और

केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की से आए विशेषज्ञ हुए शामिल

पुराने भवनों की मरम्मत पर अच्छी और मूल्यवान जानकारी साझा की गई।

केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की के विशेषज्ञ आर्किटेक्ट एसके नेगी, डा. अजय चौरसिया, आशीष कपूर ने आपदा के दृष्टिगत नए भवनों की निर्माण प्रक्रिया के विभिन्न तकनीकी स्तरों जैसे प्लान, सामग्री आदि के बारे में विस्तार से जानकारी प्रदान की।

उन्होंने पुराने भवनों की मरम्मत और निर्माण तकनीक के बारे में भी

विस्तार से बताया। इसके साथ ही उन्होंने भूकंप के दृष्टिगत जिले में विस्तृत परियोजना रिपोर्ट बनाने के संबंध में भी तकनीकी ज्ञान प्रतिभागियों को प्रदान किया ताकि एक अच्छी एवं प्रभावशाली विस्तृत परियोजना रिपोर्ट जिले में तैयार की जा सके।

जिला राजस्व अधिकारी चेतन चौहान ने कार्यशाला का संचालन करते हुए विभिन्न विषयों पर जानकारी प्रदान की। इस मौके पर आपदा प्रबंधन, लोक निर्माण, जल शक्ति विभाग, नगर एवं ग्राम योजनाकार, विद्युत विभाग समेत अन्य विभागों के अधिकारी व कर्मचारी मौजूद रहे।